इन्द्रसभा अमानत

और

मदारी लाल की

प्रति फ़ारसी अक्षर की शुद्धता और स्वच्छता पूर्व्वक
बनाई गई.

यह कहानी सांगीत समान हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध और सारे संसार के मनुष्यों को अति प्रिय है पारसी क़ौम के नाच घरों में इस कहानी को जिसने देखा अथवा सुना होगा वह कह सक्ता है कि कैसी मनोरंजन है परन्तु जो विचारांशज्ञात में नहीं समा सक्ते उनसे भरी हुई है लेकिन समझदारों के लिये उपयोगी और उपकारक है.

आजकल शहर जयपुर के नाटक घर में जो श्री १०८ श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीराम सिंह वीरेश जयपुर मण्डलेश्वर की ध्यान दृष्टि से शिक्षाओं और सुलक्षणता सीखने के लिये उस्तादी का द्वारा भरतखण्डीय मण्डलेश्वरों व अमीरों के लिये नमूना शायस्तगी का पैदा किया है.

आशा है कि

नाटक घरों के दिल बहलाने वालों के लिये हिन्दुस्तानी ख़यालातों के द्वारा से अधिकतर पसन्द हो.

दसवींवार

कानपुर

मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई) के छापे ख़ाने में छपी.

जूलाई सन् १९०६ ई०

विज्ञप्ति

प्रकट हो कि हमारे इस कारख़ाने में बिक्री के लिये जो पुस्तकें मौजूद हैं उन में से कुछ पुस्तकें इस सूचीपत्र में लिखी हैं जिन साहबों को लेना स्वीकार हो पत्र द्वारा लिख-कर मँगा लें बहुत किफ़ायत के साथ मिल सक्ती हैं ॥

नाटक भाषा.

हनुमाननाटक.

श्रीरामानन्द चतुरदास कृत- श्रीरामचन्द्र का चरित्र जन्म से लेकर गद्दी पर्य्यन्त अनेक प्रकार के छन्दों में वर्णित हैं ॥

रामाभिषेकनाटक.

श्रीराम गोपाल विद्यान्त द्वारा अनुवादित- जिस में रामचन्द्र जी के अभिषेक की तैया-री और ढिंढोरा अभिषेक का पीटा जाना परन्तु कैकेयी के वरदान से राम लक्ष्मण जानकी जी का वन गमन और दशरथ के प्राण त्याग पर्य्यन्त की कथा नाटक रीति से वर्णि-त हैं ॥

भ्रमजालकनाटक.

मुंशी रत्नचन्द्र कृत जिस में सेक्स पियर की कोमोड़ी आफ़ एरर्स का आशय है ॥

नागानन्दनाटक.

जिस का उल्था लाला सीताराम जी ने संस्कृत से देशभाषा में वर्ण प्रतिवर्ण किया है नाटक करने वाले लोगों को बड़ा ही आनन्द देने वाला है ॥

पंचतंत्र.

इस का उल्था लाला सीताराम जी ने संस्कृत से भाषा में नाटक के तौर पर किया है ॥

आनन्द रघुनन्दन नाटक.

श्री महाराज बान्धवेश विश्वनाथ सिंह स्वर्गवासी कृत- जिस में संस्कृत प्राकृत देव-नागरी गद्य पद्य इत्यादि अनेक भाँति की भाषाओं में विश्वामित्र की यज्ञ रक्षा से राम चन्द्र जी के सिंहासन पर विराजमान होने पर्य्यन्त का वृत्तान्त उत्तम ललित नाटक भाषा में सात अंकों में वर्णित हैं ॥

हनू नाटक.

बख़्शीराम जमादार कृत- अनेक प्रकार की छन्दों में वर्णित हैं ॥

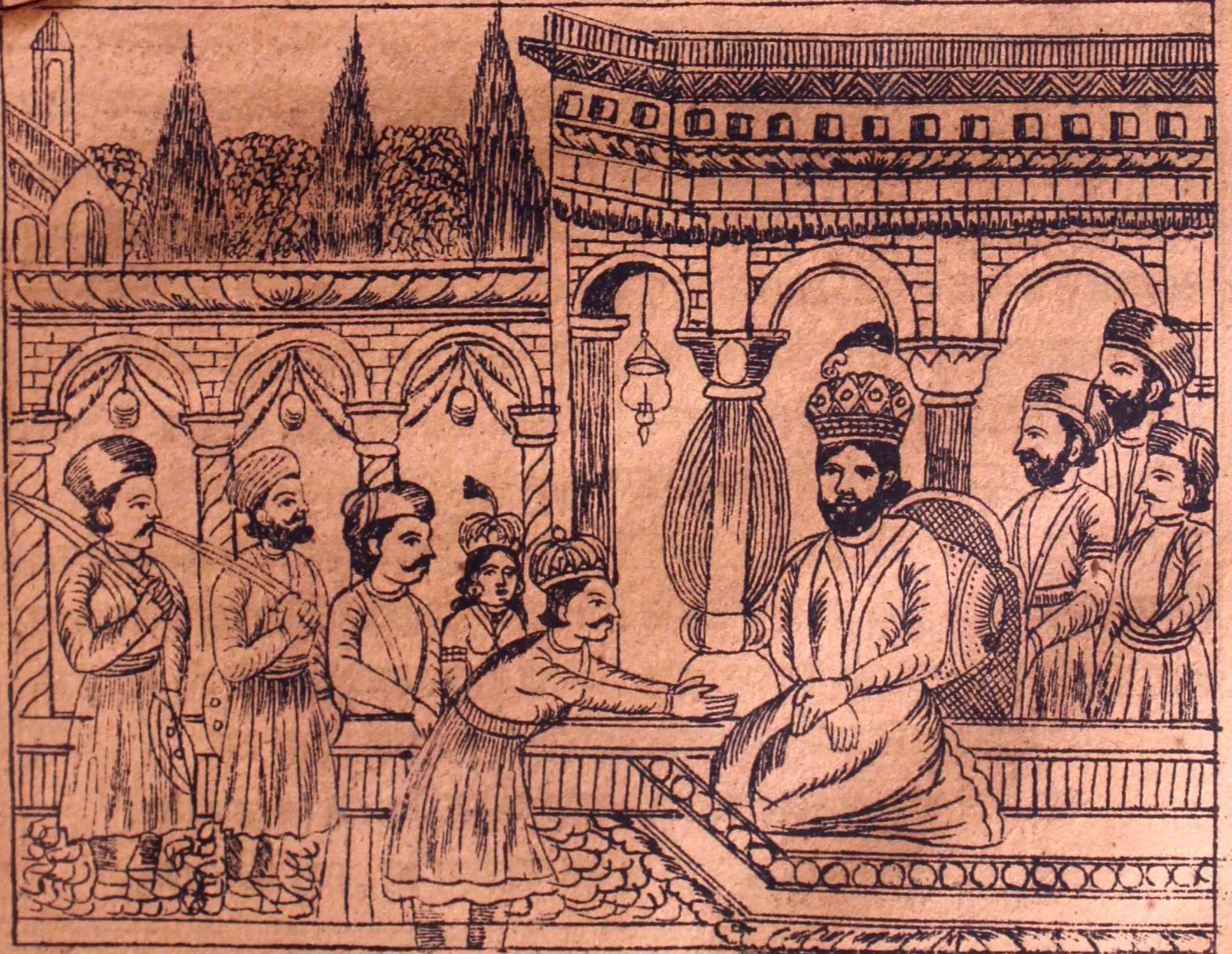
श्रीगणेशायनमः

अथ इन्द्रसभा अमानत

आरम्भः

सभा में दोस्तो इन्दर की आमद आमद है । परीजमालों के अफ़सर की आमद आमद है
ख़ुशी से चहचहे लाज़िम है सूरते बुलबुल । अब इस चमन में गुलेतर की आमद आमद है
फ़रोगे हुस्न से आँखों को अब करो रौशन । । ज़मी पै मेहर मुनव्वर की आमद आमद है
दुज़ानू बैठो करीने के साथ महफ़िल में । । परी की देव की लश्कर की आमद आमद है
ज़मीं पै आयेंगी राजा के साथ सब परियाँ । । सितारों के मह अनवर की आमद आमद है
ग़ज़ब का गाना है और नाच है क़यामत का । बहारे फ़ितनए महशर की आमद आमद है
बयाँ मैं राजा की आमद का क्या करूं उस्ताद । जिगर की जान की दिलबर की आमद आमद है

चौबोला अपने हस्ब हाल ज़बानी राजा इन्द्र के.



राजा हूं मैं क़ौम का और इन्दर मेरा नाम । । बिन परियों की दीद के मुझे नहीं आराम
सुनो रे मेरे देव रे दिल को नहीं क़रार । । जल्दी मेरे वास्ते सभा करो तैयार
तख़्त बिछाओ जगमगा जल्दी से इस आन । मुझ को शबभर बैठना महफ़िल के दर्म्यान
मेरा सिंगल दीप में मुल्कों मुल्कों राज । जी मेरा है चाहता कि जलसा देखूं आज
लाओ परियों को अभी जल्दी जाकर हाँ । बारी बारी आन कर मुजरा करैं यहाँ

आमद पुखराज परी की बीच सभा के.

महफ़िले राजा में पुखराज परी आती है । सारे माशूक़ों की सिरताज परी आती है
जिस का साया न कभी ख़्वाब में देखा होगा । आदमीज़ादों में वह आज परी आती है
दौलते हुस्न से हो जायगा आलम मामूर । । करने इस बज़्म में अब राज परी आती है
रंग हो ज़र्द हसीनों का न क्यों कर उस्ताद । गुल है महफ़िल में कि पुखराज परी आती है

शेरख़्वानी अपने हस्ब हाल ज़बानी पुखराज परी के.

गाती हूं मैं और नाच सदा काम है मेरा । आफ़ाक़ में पुखराज परी नाम है मेरा
फन्दे से मेरे कोई निकलने नहीं पाता । इस गुल्शने आलम में बिछा दाम है मेरा
मैं लाख की दो लाख की परवाह नहीं रखती । कारूं का ख़ज़ाना अजी इनआम है मेरा
कहिते हैं जहाँ में जिसे इन्साँ गुलो सम्बुल । वह रुख़ है वह गेसूए सियह फ़ाम है मेरा
बदमस्त मुझे देखके होती है ख़ुदाई । मामूर भये हुस्न से क्या जाम है मेरा ।
करती हूं दिलोजान से राजा की परस्तिश । कहिते हैं जिसे कुफ़्र वह इसलाम है मेरा
अल्लाह ने बख़्शा है मुझे रुतबये आली । गरदूं जिसे सब कहिते हैं वह बाम है मेरा
इन्साँ का शरारत से मेरा बस नहीं चलता । दिल लेके मुकर जाना सदा काम है मेरा
उस्ताद को देती हूं दुआयें दिलो जाँ से । ये काम जहाँ में सहर व शाम है मेरा ।

छंद. ज़बानी पुखराज परी के बीच सभा के.

राजा इन्दर देश में रहे इलाही शाद । जो मुझ सी नाचीज़ को किया सभा में याद
किया सभा में याद मुझे राजा ने आज । दौलत माल ख़ज़ाने की कबहूं मैं मोहताज
हीरा पन्ना चाहिये तख़्त न मुझ को ताज । जग में बात उस्ताद की बनी रहे महराज ।

ठुमरी. ज़बानी पुखराज परी के बीच सभा के.

आती हूं सभा में छोड़ के घर । काहू की नहीं मोहिं आजु खबर,
चेरी हूं तेरी राजा इन्दर । रखना दिन रैन दया की नज़र,

सोने का विराजे शीश मुकुट । रूपे के तख़्त पर बैठ निडर,
चारों कोनों पर लाल सुऐं । दाता का करम रहे आठ पहर,
साया रहे पीरो पयम्बर का । मौला की सदा रहे नेक नज़र,
उस्ताद कहो हर से हर दम । दुनियाँ में रहे हज़रत अख़्तर,

बसंत-ज़बानी पुखराज परी के बीच धुन बहार के फ़स्ल बहार में

ऋतु आई बसन्त अजब बहार । खिले जरद फूल बिरवन की डार,
चिटके कुसुम फूले लागी सरसों । फबकत चलत गेहुँअन की बार,
हर के दुआरे माली का छोहरा । गरवा डारत गेंद के हार ।
टेसू फूले अम्बा बौराने ।। चम्पा के रूख कलियन की बार,
गड़वा लिये उस्ताद के द्वारे । चलो सब सखियाँ कर कर सिंगार

ग़ज़ल-बसन्त ज़बानी पुखराज परी के फ़स्ल बहार में-

है जलवये तन से दरो दीवार बसन्ती । पोशाक जो पहिने है मेरा यार बसन्ती
क्या फ़स्ल बहारी ने शिगूफ़े हैं खिलाये । माशूक़ हैं फिरते सरे बाज़ार बसन्ती ।
गेंदा है खिला बाग़ में मैदान में सरसों । सहरा वह बसन्ती है यह गुलज़ार बसन्ती
मख़मल का नई ऋतु में दिला ज़र्द नहीं म्यान । पहिने हैं क़बा यार की तलवार बसन्ती ।
हूं ग़म से ये मैं ज़र्द जो तू क़त्ल करेगा । ख़ून निकलेगा अये क़ातिल ख़ूंख़ार बसन्ती
उस रश्क मसीहा का जो हो जाय इशारा । आँखों से बने नरगिसे बीमार बसन्ती
ग़म खा के मुआ हूं मैं किसी ज़र्द क़बा पर । है क़बर की चादर मुझे दरकार बसन्ती
गेंदों के दरख़्तों में नुमायाँ नहीं गेंदे । । हर शाख़ के सर पर है ये दस्तार बसन्ती
मुँह ज़र्द दुपट्टे के न अंचल से छिपाओ । हो जाय नरंगे गुले रुख़सार बसन्ती ।
ऋतु फिर गई आलम की चली बाद बहारी । मैं खाने को सजवाते हैं मैं ख़्वार बसन्ती
रू ज़र्द तो था मेरा किया ज़र्द क़बा ने । तुर्रह हुई उस पर तेरी दस्तार बसन्ती
खुलती है मेरे शोख़ पे हर रंग की पोशाक । ऊदी अगरई चम्पई गुलनार बसन्ती ।
है लुत्फ़ हसीनों की दो रंगी का अमानत । सो चार गुलाबी हों तो दो चार बसन्ती

होली-ज़बानी पुखराज परी के-

पा लागों कर जोरी, श्याम मोसे खेलो न होरी,
गोवैं चरावन मैं निकसी हूं, सास ननद की चोरी,

सगरी चुनरी रंग में न भिजोओ, इतनी सुनो बात मोरी,
श्याम मो से खेलो न होरी,
छीन झपट मोरे हाथ से गागर, ज़ोर से बहियाँ मरोरी,
दिल धरकत है साँस चढ़त है, देह कँपत गोरि गोरी,
श्याम मो से खेलो न होरी,
अबीर गुलाल लपटि गयो मुख माँ, सारी रंग में बोरी,
सास हज़ारन गारी देगी, बालम जीता न छोरी,
श्याम मो से खेलो न होरी
फाग खेल के तुम ने रे मोहन का गत कीन्ही मोरी,
सखियन में उस्लार के आगे होइ हूं थोरी थोरी,
श्याम मो से खेलो न होरी,

ग़ज़ल. ज़बानी पुखराज़ परी के बीच सभा के.

बेदाद मुझे याद है वल्लाह तुम्हारी। यूसुफ़ की क़सम अब न करूं चाह तुम्हारी
लिल्लाह क़दम शर्म के कूचे से निकालो। बाज़ार में हम देखते हैं राह तुम्हारी
आशक़ की मुराद आये रक़ीबों को अलम हो। जाय जो सवारी कभी दरगाह तुम्हारी
वह बुत मेरे पास आवेगा किस तरह यकीं हो। झूँठी है क़सम दोस्तो वल्लाह तुम्हारी
होता है ज़मीं पर उसे ख़ुरशेद का धोखा। सूरत जो कभी देखता है माह तुम्हारी
बुत बन गये महिफ़िल में रक़ीबों से न बोलो। क्या बात है ख़ालक़ की क़सम वाह तुम्हारी
बोसे जो तलब मैंने किये हँस के वो बोले। सरकार से मौक़ूफ़ है तनख़्वाह तुम्हारी
लहरा के कभी जाते हैं दरिया कभी तालाब। क्या हम को भकाती है कुए चाह तुम्हारी
है इश्क़ का दरिया बसरे जोश अमानत। आलम में रखे आबरू अल्लाह तुम्हारी

ग़ज़ल दूसरी. ज़बानी पुखराज परी के.

टकरा के सर को जान न दूं मैं तो क्या करूं। कब तक ग़मे फ़िराक़ के सदमे सहा करूं
अन्धेर है लगाऊं जो उस शमअ रू से लौ। परवाना ग़ैर पर वह रहे मैं जला करूं
मैं चाहता हूं सनअते साने पै हूं निसार। बुत को बिठा के सामने यादे ख़ुदा करूं
हरचन्द चाहता हूं कि बोलूं न यार से। क़ाबू में अपने दिल को न पाऊं तो क्या करूं
अये बुत तेरे सिवा नहीं कोन न की हवस। अल्लाह से करूं तो तेरी इल्तिजा करूं।

इन्साफ़ हो बुतों से न मेरा जो हाथों हाथ । आगे ख़ुदा के हश्र में महशर बपा करूं
मैं मर गया तो रोके यह कहने लगा वह शोख़। किसको सुनाऊं गालियाँ किस पर जफ़ा करूं
ग़मज़े से आगई मुझे इश्क आन से क़ज़ा । ये शुक्र तेरे नाज़ का क्यों कर अदा करूं
ऐसे मज़े उठाये हैं आज़ार इश्क में । । आये मसीह भी तो न अपनी दवा करूं
कूचे में उस के बैठ के दिल है यह चाहता। औक़ात यां बसर सिफ़ते नक़्शेपा करूं
वह बुत अदा से सामने आकर जो बैठ जाय । काबे में भी नमाज़ को अपनी क़ज़ा करूं
लूं बोसा ज़ुल्फ़ का तो दबाये गला अजल। फ़ाँसी मिले मुझे जो ख़ुतन में ख़ता करूं
बे इश्क़ कुछ जहाँ में नहीं ज़ीस्त का मज़ा । दिल यार को न दूं मैं अमानत तो क्या करूं

ग़ज़ल तीसरी ज़बानी पुखराज परी के.

रफ़्तार के चलन से ग़ज़ब दिल लुभा लिये। छोटे से सिन में यार बड़े तुम हो चालिये
बोसा जो माँगा चश्म का क्या क़हर हो गया। मुझ पर न ऐन बज़्म में न आँख निकालिये
जाने न दूंगा आप को सुनने का मैं नहीं । बातें बना के वस्ल का वादा न टालिये।
एक बोसे पर ये गालियाँ अल्लाह की पनाह। कुछ मैं भी अब कहूंगा नहीं मुँह सँभालिये
दर गुज़रा मैं मिलाप से हटिये कहाँ का प्यार। फैला के पाऊं हाथ गले में न डालिये।
नज़्ज़ारह रूयसाफ़ का मंज़ूर है हमें । दिखला के ज़ुल्फ़ को न बला सिर की टालिये।
आशिक़ को ज़हर ग़ैर को मिसरी की हो डली। इस तरह की न बात ज़बाँ से निकालिये
ना महिरिमों की आँख न अँगिया पै जा पड़े। सीना खुला हुआ है दुपट्टा सँभालिये।
ख़ुश चश्म सब जहाँ के अमानत हैं बेवफ़ा। जी चाहता है आँख किसी पर न डालिये

दरख़्वास्त नीलम परी की ज़बानी राजा इन्द्र के.

ख़ूब रिझाया नाच के गा के । पहलू में मेरे अब तो बैठ आके,
ख़ुश हुई तुझ से महिफ़िल सारी। अब है नीलम परी की बारी,

आमद नीलम परी की बीच सभा के.

सभा में आमद नीलम परी है । सरासर वह नज़ाक़त से भरी है,
सितारों की झपक जाती हैं आँखें। वह उस के बर में मलबूस ज़री है,
ग़ज़ब गाना है और उसका चमकना। कभी ज़ोहरह कभी वह ख़ुश्तरी है,
ख़िजालत से न क्यों नीली हो सोसन। किना कमी से उस को हमसरी है,
न देखा होगा नाच ऐसा किसी ने। बला है सेहर है जादूगरी है,

तमाम उस्के हैं आज़ार शोलयेनूर। शरारत कूट कर उस में भरी है,
ज़मीं पर वह परी आती हैं उस्ताद। जवाहिर से जो रंगत में खरी है,



शेरख्वानी हस्ब हाल अपने ज़बानी नीलम परी के सभा मे.

हूरों के होश उड़ते हैं उड़ने की शान पर। नीलम परी है नाम मेरा आसमान पर
अल्लाह के करम से ज़माने में हैं उरूज। झुकता है सर फलक का मेरी आस्तान पर
इन्साँ की क्या है अस्ल कि पुतला है खाक का। जिन खेल जाते हैं मेरी लुत्फ़ में जान पर।
नीलम को चूम चाट के आँखों पै रखते हैं। शोहरत्न है मेरा जौहरियों की दूकान पर
उड़ते नहीं हैं मेरी नज़ाकत पे किस्के होश। रखते हैं फूल हाथ गुलिस्ताँ में कान पर
करता नहीं है कौन मुहब्बत का हक़ अदा। देते हैं देव जान मेरी आन बान पर
मिस्सी की तरह बाग़ में जमता है उस्का रंग। सोसन जो ज़िक्र लाती है मेरा ज़बान पर
ज़ोहरह मेरे ख्याल में धुनती है सर सदा। मरते हैं तानसेन तराने की तान पर
उस्ताद ने ज़मीं पै बला कर दिया है नाम। क्यों कर रहे न मेरा दिमाग़ आसमान पर

छंद· ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के.

मैं चेरी सरकार की तुम राजों के राज। गाना मुझ माशूक़ का सुनो गौर से आज
सुनो गौर से आज मेरा राजा जी गाना। नाच की छलबल देख के देखो बतलाना।
इच्छा है मेरा तब इस महिफ़िल में आना। जब से सारा देश बिदेश उस्ताद ने छाना

छंद दूसरा. ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के.

आई हूं मैं दूर से करके तुम को यार । मुजरा मेरा देख कर करो मेरा दिलशाद ।
करो मेरा दिलशाद कि मैं दिल खोल के गाऊं। गा के नाच के आज हुनर अपना दिखलाऊं
हुनर दिखा कर महफ़िल में दाद अपनी पाऊं। दाद अपनी यहाँ पा कर घर उस्ताद के जाऊं

ठुमरी. ज़बानी नीलम परी के बीच धुन खम्माच के.

राजा जी करो मो से बतियाँ रे । दिल तरपत दिन रतियाँ रे ,
हमरी ओर से तुम से दिन दिन। सौतन जा की लगतियाँ रे ,
जियरा डरत है तुम्हरे रोस से । धरकत है मोरि छतियाँ रे ,
दरशन उस्ताद का चहिये मझिका। लिख के पठा देउ पतियाँ रे ,

होली. ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के.

कान्हा को समझात न कोई, अँगिया रँग में भिजोई ।
मोरी ब्रज में पति खोई.
आज सखी हम घर मा जाके, पीत की जान को रोई ।
अबीर गुलाल छुड़ावन खातिर, मुँह अँसुवन से धोई ।
बदन माटी में मिलोई.
गरवा लगाओ गिराय के मोहि का, कर पकड़ा जब रोई।
इज़्ज़त लीनी गारी दीनी, हम हूं जान को खोई ।
सखी विष खाइ के सोई.
बैठ बैठ ब्रज के लोगन में, कुबरी का विष बोई ।
या जो ख़बर उस्ताद ने पाई, घर हम हाथ से खोई ।
निकस कर जोगन होई.

ग़ज़ल. ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के.

इश्क़ का खंजर लगा है दिल पै कारी इन दिनों। ज़ख्म की सूरत है खूं आँखों में जारी इन दिनों
बाग़ में जाती है उस गुल की सवारी इन दिनों। मुँह चुराये फिरती है बादे बहारी इन दिनों
देके क़स्मे कूचये कातिल में ले जाता है दिल। दुश्मन अपना कर रहा है दोस्तदारी इन दिनों
भोली २ शक्ल पर दिल तरपा जाता है सनम। क्या ही सूरत हो गई है प्यारी प्यारी इन दिनों
मुद्दतों हमने निकाला वस्ल में दिल का बुख़ार। फ़ुरक़ते दिलदार में है तप की बारी इन दिनों

इश्क़ के आज़ार ने लाग़र किया है इस क़दर। शक्ल पहिचानी नहीं जाती हमारी इन दिनों
क़त्ल करता है अरक आलूद: अबरू ख़ल्क़ को। क्या तेरी तलवार पर है आबदारी इन दिनों
सर उठाया है जिन्हूंने इश्क़ ज़ुल्फ़े यार में। पाओं को दरकार है ज़ंजीर भारी इन दिनों।
दाग़ लाकर वज़्म में आशिक़ बुरा करते हैं हाल। छेड़िये लिल्लाह परदे में सितारी इन दिनों
दम के झपकाने का क़ातिल को अचम्भा है ताज़: शौक़ चल रही है दिल पे आशिक़ के कटारी इन दिनों
ठंढी साँसे भरते हो हरदम् अमानत किसलिये। जान जाती है कहो किस पर तुम्हारी इन दिनों

ग़ज़ल दूसरी ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के.

दिल मेरा सैरे चमन से न हुआ शाद कभी। ले गया बाग़ में भूले से न सय्याद कभी
ज़िन्द: जब तक हैं हम से जान ज़फ़ायें करलो। फ़िर सहेगा न तुम्हारी कोई बेदाद कभी
तोड़ता बेड़ियाँ दोहरी न कभी वहशत में। मानसी काहे को लोहा मेरा हद्दाद कभी
सर झुका जाता है उठाता नहीं मक़तल से क़दम्। हाय मुझ पर भी कोई छोड़दे जल्लाद कभी
सितम् ईज़ाद तुझे हम ने बनाया जानी। इस तरह दिल से सितम् होते थे ईज़ाद कभी
तुम वह ख़ुशक़द हो रविस पर जो ज़रा तनके चलो। सर उठायें न चमन में कोई शमशाद कभी
न लगाया लबे गुल रंग से मीनाय शराब। हम से शीशे में न उतरा वह परीज़ाद कभी।
दिल को था आलमे तिफ़ली में ये शौक़े सहरा। न किया मैं ने गुलिस्ताँ का सबक़ याद कभी
लैलिये ज़ुल्फ़ का सौदा लबे शीरीं की है चाह। कभी मजनूं हूं तेरे इश्क़ में फ़रहाद कभी
सूरते नक़्श क़दम हम ने गुज़ारी औक़ात। मिट गये साफ़ कभी हो गये बरबाद कभी
होगा तब जाल में बुलबुल का फँसाना मालूम। आयेगा मौत के फ़न्दे में जो सय्याद कभी
बुलबुलो किसको दिखाती हो उरूज़े परवाज़। हम भी इस बाग़ में थे क़ैद से आज़ाद कभी
है क़यामत बुते बेशर्म हया की बातैं। कभी कहिता है अमानत तुझे उस्ताद कभी

ग़ज़ल तीसरी ज़बानी नीलम परी के.

मज़ह विसाले सनम् का उठायेगा फिर क्या। डरा जो हिज्र से वह दिल लगायेगा फिर क्या
किसी की ज़ुल्फ़ की जानिब जो खींच रहा है दिल। बलाय ताज़ह मेरे सिर पे लायेगा फिर क्या
धुलायेगा मेरी यों हड्डियाँ जो तू से ग़म। पसे फ़ना सगे यार आके खायेगा फिर क्या
इलाही ख़ैर हो फिर जोश पर है दीदये तर। किसी के इश्क़ का तूफ़ाँ उठायेगा फिर क्या
इलाही ख़ैर फड़कती है आँख क्यों बाईं। ग़ज़ब से वह मुझे दीदे दिखायेगा फिर क्या
ज़फ़ा को जान ग़नीमत गिला सितम का न कर। विगड़ के यार से अय दिल बनायेगा फिर क्या

दिखाया गोरमें जिसनेन मुँह अमानतको। पशे विसालवह तुरबत पर आयेगा फिरक्या

फ़िक़रे· लाल परी के दरख़्वास्त में ज़बानी राजा इन्द्र के.

दिखा चुकी तू करतब सारे। महल में अब बैठ हमारे॥

किया सभा में तू ने नाम। अब है लाल परी का काम.

लाओ लाल परी को·

आमद लाल परी की बीच सभा के

सभा में लाल परी की सवारी आती है। ज़माने रंग अब इन्दर की प्यारी आती है

शफ़क़ में आवेगा झुरमुट नज़र सितारों का। पहन के सुर्ख़ वह पोशाक भारी आती है

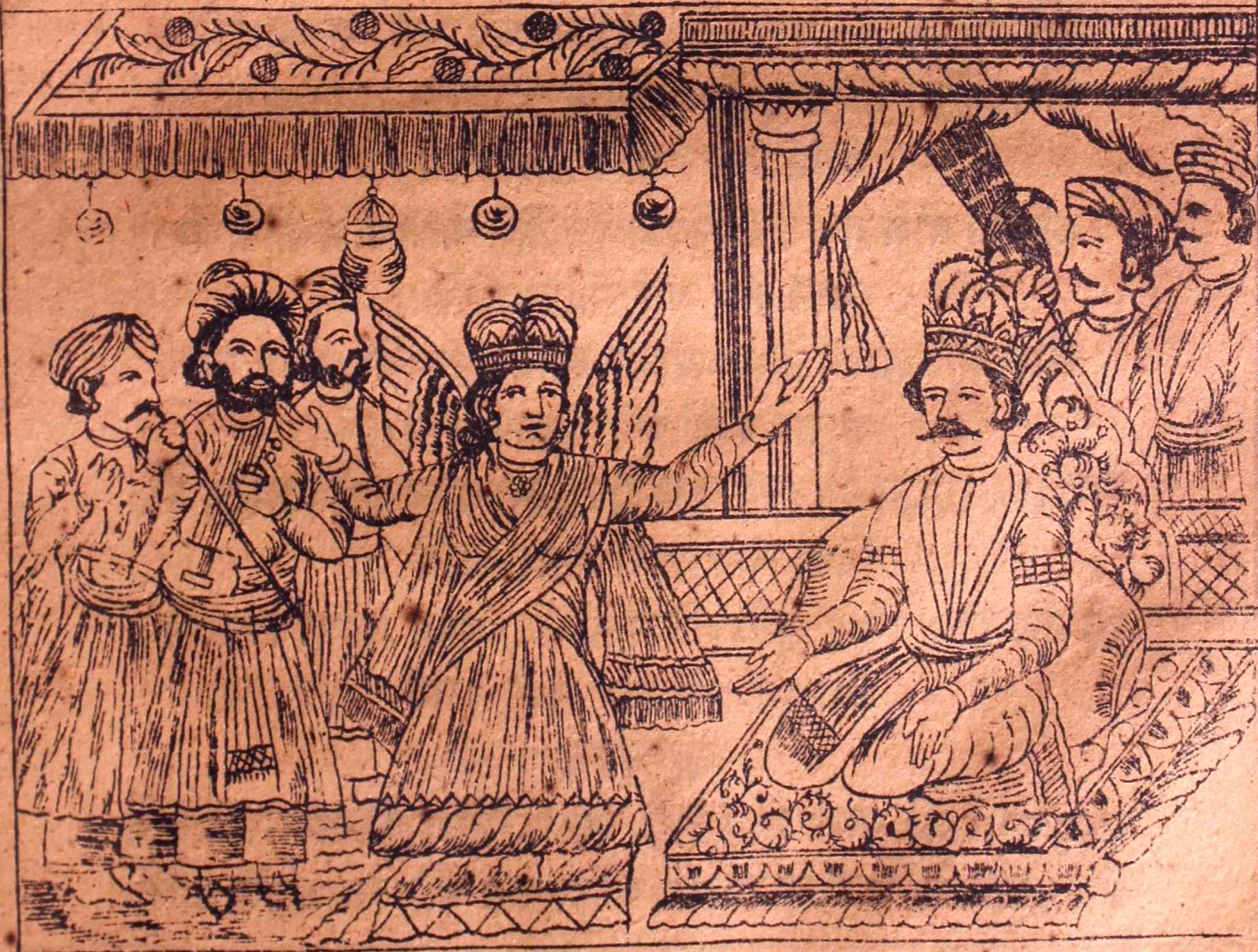
हँसीने बज़्म की शादी से खिल पड़ेंगे तमाम। गुलों के वास्ते बादे बहारी आती है।

निगाह उसकी छुरी से सिवा नुकीली है। लगाने सब के दिलों पर कटारी आती है

खिलेगा लाले का दरख़्त सभा में अय यारो। निहाल हो कि मुराद अब तुम्हारी आती है

दुपट्टा देख के बिजली गिरेगी बिजली पर। किनारों पर वह लगा कर किनारी आती है

मैं किस ज़बाँ से कहूं उसकी शोख़ियाँ उस्ताद। बहारे नाज़ः की महफ़िल में बारी आती है



शेरख़्वानी. ज़बानी लाल परी के बीच सभा के.

हुस्नाँ का काम हुस्न पै मेरे तमाम है। जोड़ा है सुर्ख़ लाल परी मेरा नाम है
याक़ूत ज़र ख़रीद है सरकार का मेरे। नौकर अक़ीक़ लाल बदख़्शाँ गुलाम है
आशक़ को क़त्ल करती हूं अबरू की तेग़ से। दिनरात मुझ को ख़ून बहाने से काम है
पोशाक मेरी सुर्ख़ है मुखड़ा है चाँद सा। देखो शफ़क़ रात को माहे तमाम है
शोख़ी पै मेरे होते हैं सुर्ख़ चमन हलाल। हर गुल को ज़ीस्त बाग़ जहाँ में हराम है
मिर्रीख़ मुझ से होता है हर दम जो रूबरू। करता लहू लगा के शहीदों में नाम है
उस्ताद अञ्जुमन में रहे सुर्ख़ रू सदा। अल्लाह से दुआ ये मेरी सुब ही शाम है

छंद. ज़बानी लाल परी के बीच सभा के.

बैठी थी मैं काफ़ में जोड़ा पहिने लाल। यहाँ बुला कर आपने बढ़ा दिया इक़बाल
बढ़ा दिया इक़बाल किया मुझ को बुलवाया। समा सभा का आज बहुत दिन बाद दिखाया
रूप स्वरूप स्वभाउ सब मेरे दिल को भाया। रहै सदा उस्ताद पै या करतार का साया।

ठुमरी. ज़बानी लाल परी के बीच धुर्न देश के.

मोरे जोबन में लाल जड़े, बहुत खरे श्री महाराजा रे।
कोऊ मूँगा कोउ चुन्नी कहत है, परखन वालों पर गाज परे
बहुत खरे श्री महाराजा रे।
छतियाँ मोरी ग़ज़ब की ख़ुश रंग, जैसे अँगिया में कोले धरे।
बहुत खरे श्री महाराजा रे।
कोऊ मोरे लालों लाल जोबन की, उस्ताद से ख़बर करे।
बहुत खरे श्री महाराजा रे।

सावन. ज़बानी लाल परी के सावन की फ़स्ल में.

पिया बिन घटा नहीं भावे.
रह रह दिल रूँधा आवे, बिजली की चमक तड़पावे डरावे।
पिया बिन घटा नहीं भावे.

अन्तरह

ऋतु वर्षा की आई री गुंइयाँ, आज जिया को कल नहीं आवे
मोरी ओर से या दिन सजनी, कोऊ उस को समझावे जावे।

पिया बिन घटा नहीं भावै.

कासे कहूं इस मेह बूँदन मा, लिख पतिया जो पठावै। ।
पीतम को कोऊ भरि वर्षा में, रई मारी से मिलावै लावै।
पिया बिन घटा नहीं भावै.
उमड़ घुमड़ के कारी बदरिया, मोहिं नाहक़ न सतावै ।।
कोऊ पवन पुरवाई से जा कहे, और मुलक बरसावै ।
पिया बिन घटा नहीं भावै.
भीजत हूं अँसुवन के बूँदन, मेघा झर न लगावै ।।
पीर उस्ताद को मान के अपने बन परबत पर जावै।
पिया बिन घटा नहीं भावै.

ग़ज़ल सावन की. ज़बानी लाल परी के सावन की फ़स्ल में.

दिलको मरग़ूब है ठंडी जो हवा सावन की। माँगता हूं मैं सदा हक़ से दुआ सावन की।
याद आता है वह मज़ा वह घटा सावन की। शक्ल दिखलाये फिर अब जल्द ख़ुदा सावन की।
चढ़ गया जब कि फ़लक पर मेरे आहों का धुआँ। गिर गई ख़ल्क की नज़रों से घटा सावन की।
देखिये आँखों से किस किस के बरसता है लहू। यार हाथों में लगाता है हिना सावन की।
ज़ुल्फ़ जाना के क़रीं यों है दुपट्टा ऊदा। शबे तारीक में जिस तरह घटा सावन की
एक लहिज़ा नहीं थमती है झड़ी अश्कों की। लग गई क्या मेरी आँखों को हवा सावन की
अब्र भागा हुआ जाता है ख़ुदा ख़ैर करै। आज बदली नज़र आती है हवा सावन की
क्यों इसे गिरिय तसव्वर न सुझे ज़ुल्फ़ का हो। रात होती है सियाही में बला सावन की।
मोती कानों में नहीं यार की ज़ुल्फ़ों की क़रीब। झाले भादों के वह हैं और ये घटा सावन की
अय अमानत ये निकाली है ज़मीं तूने नई। पहिले थी किस की ग़ज़ल तेरे सिवा सावन की

होली. ज़बानी लाल परी के बीच धुन सिन्धु काफ़ी के.

होली की फ़स्ल में.

लाज रख ले श्याम हमारी, मैं चेरी हूं तिहारी।
ज़रा दे समझ करगारी.

अन्तरह.

अबीर गुलाल न मुख पर डारो, ना मारो पिचकारी।

आधी देह सब देख पड़ेगी, सारी भिजेंगी न सारी
कहैंगे लोग मतवारी.
तुम चातुर होरी के खेलैया, हम डरपोंक अनारी।
ताक झांक लगा मत मोहन जाऊं तोरी बलिहारी
न कर मोहिं जान से आरी.
लाख कही तुम एक न मानी, बिनती करि के हारी।
याही घरी उस्ताद से जा कर कहि हों हक़ीक़त सारी
कहाँ जाओगे गिरिधारी.

ग़ज़ल ज़बानी लाल परी के बीच धुन देश के.

ख़याल आता है दिल को शिकवये बेदाद क्या कीजे, ख़ुदा से ऐ बुते काफ़िर तेरी फ़रयाद क्या कीजे
बहार आई है गुलशन में घुटा जाता है दम अपना, क़फ़स के दर को वा करता नहीं सय्याद क्या कीजे
अबस करता है तू हम से ख़याले यार का शिकवा। जो भूले आप को ऐ दिल उसे फिर याद क्या कीजे
मुक़ाबिल सर्व को पाकर गुलिस्ताँ में वो गुल बोला। ग़ुलाम अपना जो हो दिल से उसे आज़ाद क्या कीजे
किसी महबूब का बूटा सा क़द आँखों में फिरता है। चमन में देख कर ऐ दिल सुये शमशाद क्या कीजे।
जुनूँ का जोश खोता है रगों को छू के नशतर से। न तुझ को गालियाँ दीजे तो अये फ़स्साद क्या कीजे
लहू बहता है ग़ैरों का हमारा दम निकलता है। गले पर फेरता ख़ंजर नहीं जल्लाद क्या कीजे।
हमारी क़ब्र को ठोकर लगा कर यार कहता है। मिला हो ख़ाक में जो ख़ुद उसे बरबाद क्या कीजे
अमानत कोह पर पहुँचा तो यों फ़र्हाद चिल्लाया। लबों पर जान शीरीं है अब ऐ उस्ताद क्या कीजे

ग़ज़ल दूसरी ज़बानी लाल परी के.

शबे फ़ुरक़त में नालों ने जहाँ सर पर उठाया है। ज़मीं को ज़लज़ला है आसमाँ चक्कर में आया है
रुख़े रंगी को हँस कर ज़ुल्फ़ में उसने छिपाया है। तड़पै है अब्र में बिजली चमन में अब्र छाया है
छिपाऊं मुँह न दामन से लहद में क्यों न मैं वहशी। क़फ़न ने दाग़ उरयानी का जाने में लगाया है
हिसाबे आबो दाना हश्र में होगा तो कह दूंगा। पिया है उम्र भर ख़ूने जिगर ग़म मैंने खाया है
नई है रोशनी अपनी लहद पर तंग दस्ती में। चिराग़ों के एवज़ हर शब मारूने दिल जलाया है
हुये हो तेज़ हम पर संग दिल तुम गालियाँ देकर। ज़बाँ की तेग़ को ख़ून आप ने पत्थर चटाया है
शफ़क़ फ़ूली है देखो शाम को शहरे बदख़्शाँ में। लबे रंगी पै मिस्सी मल के उस ने पान खाया है
हमें अब ज़िन्दगी है तल्ख़ उनकी कड़वी बातों से। किसी दिन ज़हर खा लीजे यही जी में समाया है

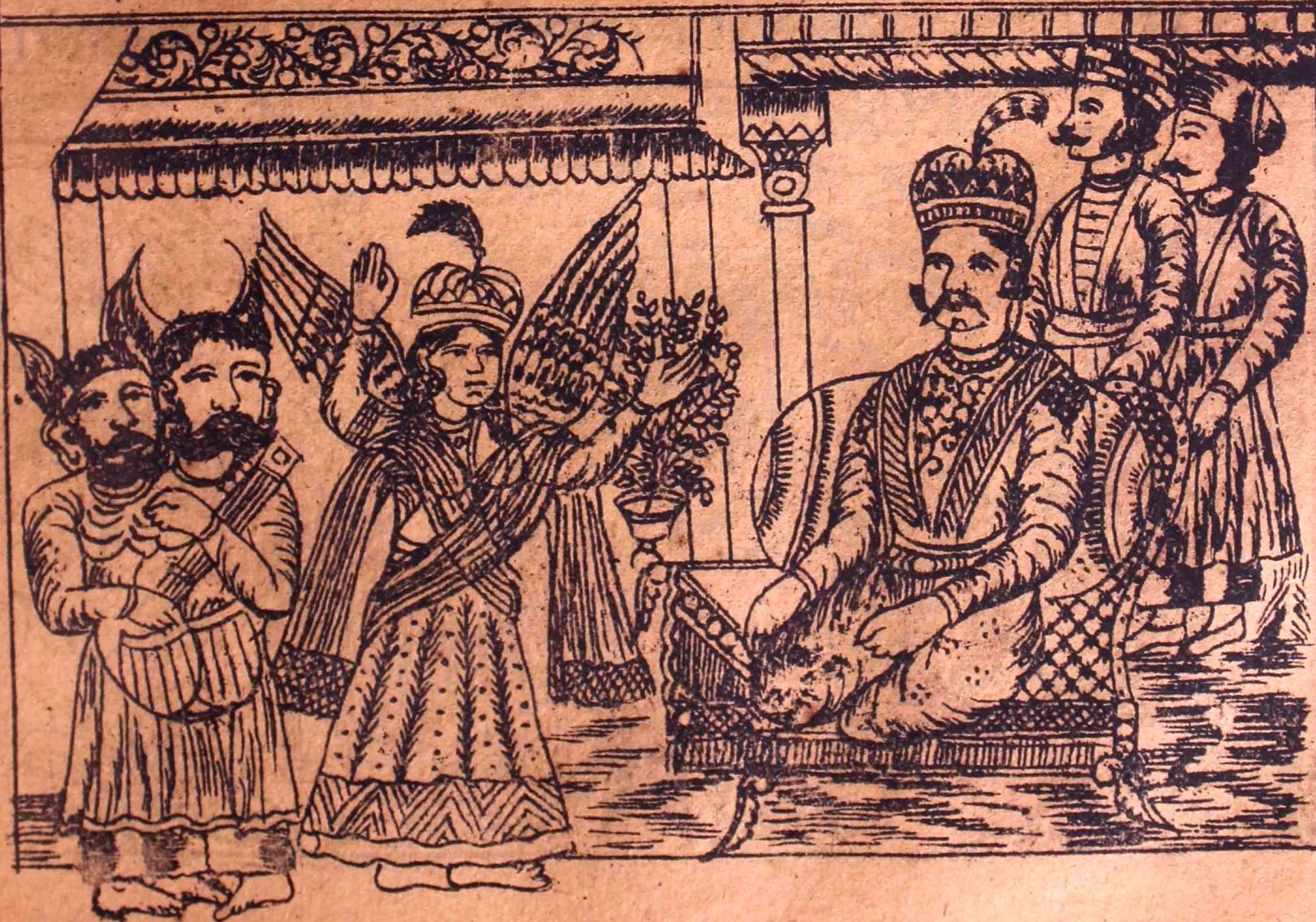
मेरी तुरबत पै ताना चाँदनी में क्यों है नमूरीरा। यह किस ने चादरे महताब में धब्बा लगाया है
क्यों सिन्दूर का टीका नहीं मेहराब आबरू में। चिराग़ उस शाम अब्रू ने रैन काबे में जलाया है
नहीं बेवजह पै हम हिचकियाँ आती हैं फ़ुरकत में। किसी महबूब को तो आप अमानत यार आया है

फ़िक़रे. सब्ज़ परी की दरख्वास्त में ज़बानी राजा इन्द्र के.

काटी रात मज़े में सारी। बैठ मेरे पहलू में प्यारी।
बहुत लड़ाई तू ने जान। अब है सब्ज़ परी का ध्यान
लाओ सब्ज़ परी को.

आमद सब्ज़ परी की बीच सभा के.

आती नये अन्दाज़ से अब सब्ज़ परी है। लब सुर्ख है पर सब्ज़ है पोशाक हरी है
फ़िरोज़ह उसे देख के खा जाता है हीरा। चेहरे में ज़मुर्रद से सिवा जलवागरी है।
जिन उससे खिज़ालत के सबब उड़ नहीं सक्ते। परियों को सदा शर्म से वे बालो परी है।
ज़ेवर की है क्या शान छरहरे से बदन पर। इक शाख़ है नाज़ुक कि शिगूफ़ों से भरी है।
हँसता है ज़मुर्रद पर सदा धानी दुपट्टा। क्या कुल्ल के इक़बाल से सब्ज़े को चरी है
आमद की ख़बर सुन के हँसीनों में नहीं दम। जो शमा है महफ़िल में चिराग़े सहरी है।
उस्ताद अजब आशिक़ो माशूक़ के हैं नाम। शहज़ादा वह गुलफ़ाम है यह सब्ज़ परी है



शेरख़्वानी. अपने हस्बहाल ज़बानी सब्ज़ परी के.

मामूर हूं शोख़ी से शरारत से भरी हूं। धानी मेरी पोशाक है मैं सब्ज़ परी हूं
क्या अस्ल है सब्ज़े की मेरे हुस्न के आगे। फ़िरोज़े से ख़ुश रंग ज़मुर्रद से खरी हूं
लेलेती हूं दिल आँख फ़रिश्ते से मिलाकर। इन्साँ है बला क्या मैं नहीं जिन से डरी हूं
शोला हूं भभूका हूं ग़ज़ब है मेरा ग़ुस्सा। जल जावे परीज़ाद जो मैं गरम ज़री हूं
ज़िन्दा न रक्खेगा मुझे सुन लेगा जो राजा। शाहज़ादये गुलफ़ाम की सूरत पर मरी हूं
वह शमअ़ मैं परवाना हूं वह सरो मैं क़ुमरी। वह गुल है जहाँ से मैं नसी में सहरी हूं
उस्ताद के दम से चमने हुस्न है सर सब्ज़। मैं वास्ते ताऊस के दाने जिगरी हूं

चौबोला. ज़बानी सब्ज़ परी के.

राजा जी तो सो गये दिया न कछु इनआम। जाती हूं मैं बाग़ में यहाँ मेरा क्या काम।
सुन रे काले देव रे तू मेरी इक बात। आती थी मैं राजा के घर में आज की रात
शाहज़ादा इक बाम पर सोता था नादान। जोबन उसका देखकर निकली मेरी जान
उतरे अपने तरह से तीर कलेजे खाय। सोता था वह बेख़बर हाथ पाँव फैलाय
सूरत उसकी देखकर दिल से गया क़रार। मुँह पर मुँह मैंने रखा किया ख़ूब सा प्यार
दिल मेरा लगता नहीं महिफ़िल के दर्म्यान। कालिब मेरा है यहाँ वहाँ है मेरी जान।
उस को गर तू ला उठा जाकर जल्दी यार। लौंडी मैं हो जाऊंगी तेरी बेतक़रार।

जवाब कालेदेव का तरफ़ सब्ज़ परी के.



घर में राजा के है तू परियों की सरदार। तुझ से कर सक्ता नहीं हरगिज़ मैं इन्कार
तेरी खातिर है मुझे सबसे यहाँ सिवा। पता बता माशूक़ का लाऊं अभी उठा

जवाब सब्ज़ परी का तरफ़ काले देव के.



जा तू सिंगल द्वीप में अख़्तर नगर में हाँ। सोता है इक माहरू लाल महल में वाँ
छल्ला मैं दे आई हूं अपना उसे निशान। सब्ज़ नगों की आब से तू उस को पहिचान

सवाल काले देव का सब्ज़ परी से.

लाया शहज़ादे को मैं जाकर हिन्दुस्तान। तू अपने माशूक़ को सब्ज़ परी पहिचान।

जवाब सब्ज़ परी का ख़ुश होकर तरफ़ काले देव के.

यही है शहज़ादा मेरा यही है मेरी जान। यही मेरा दिलदार है मैं इस पर क़ुर्बान

जगाना सब्ज़ परी का शहज़ादे को शाना हिला कर.

सोते हो क्या बेख़बर छोड़ के तुम घरबार। आँखें खोलो लाड़िले नींद से हो हुशियार



जागना शाहज़ादे का नींद से और कहना घबरा कर.

कोठा मेरा क्या हुआ छूटा किधर मकाँ। सोया था मैं किस जगह आया हाय कहाँ
ना वह मेरे लोग हैं ना वह मेरी जाँ । ख़्वाब ये मैं हूं देखता जाग रहा हूं याँ

गाना शाहज़ादे का ग़ज़ल आलमे हैरत में बेताब हो कर.

घरसे याँ कौन ख़ुदा के लिये लाया मुझको। किस सितमगार ने सोते से जगाया मुझको
हक़ ने क्या ख़्वाब परेशाँ ये दिखाया मुझको। नज़र आता है न अपना न पराया मुझको
हैफ़ सद हैफ़ किसी ने न ख़बर ली मेरी। क्या अज़ीज़ों ने मेरे दिल से भुलाया मुझ को
नींद से आँख किसी की न खुली कोठे पर। उठ के मूँज़ी के न चुंगल से छुड़ाया मुझको
बस में ज़ालिम के मुझे छोड़ दिया हाय ग़ज़ब। ढूँढ़ने कोई परिस्ताँ में न आया मुझको
ता दमे मर्ग अब उम्मेद रिहाई की नहीं। किस बला में मेरे अल्लाह फँसाया मुझको
मुख़लसी की कोई तदबीर बताओ उस्ताद। है बहुत गरदिशे क़िस्मत ने सताया मुझको

फिर गाना शाहज़ादे का बिहाग की चीज़ हालते इज़तरार में.



मुझे कौन घरसे लाया यहाँ। बताओ ये किस्का हैगा मकाँ
मुझे कौन घरसे लाया यहाँ.

सब बिछुड़े कोई संग न साथी, अज़ीज़ों अपने मैं पाऊं कहाँ ।
मुझे कौन घर से लाया यहाँ.
दिल का किस को हाल सुनाऊं सिर पर बाप न माँ । ।
मुझे कौन घर से लाया यहाँ.
घर जाने की आश नहीं है, पड़ी किस मुसीबत में मेरी ए जाँ ।
मुझे कौन घर से लाया यहाँ.
फँस गये हम ज़ालिम के फ़न्दे, कोई उस्ताद से कहियो हाँ ।
मुझे कौन घर से लाया यहाँ.

कहना सब्ज़ परी का शहज़ादे का हाथ थाम के.



देखो तुम मेरी तरफ़ घर का मत लो नाम । लौंडी मुझ को जान कर करो यहाँ आराम
जो होना था सो हुआ जाने दो सब ख़ैर । चलो फिरो खाओ पियो करो बाग़ की सैर ।
बतलाओ अभा हसब नसब और तुम अपना नाम रहते हो किस काम में है गा कहाँ मुक़ाम

जवाब शहज़ादा गुलफ़ाम का.

खिलवत में रहता हूं मैं ऐश है मेरा काम । शहज़ादा हूं हिन्द का नाम मेरा गुलफ़ाम ।

सवाल शहज़ादे का सब्ज़ परी से.

तू औरत किस क़ौम की अपना नाम बता । दोनों शानों पर तेरे निकला है ये क्या ।

जवाब सब्ज़ परी का.

क़ौम की हूं गी मैं परी समझ न तू हैवान। ये दोनों पर हैं मेरे अये मूरख नादान
रहती हूं मैं क़ाफ़ में सब्ज़ परी है नाम। राजा इन्दर के यहाँ नाच है मेरा काम

सवाल शाहज़ादे का.

जल्दी ये बतला मुझे दिल को है बसवास। मेरा आना किस तरह हुआ है तेरे पास

जवाब सब्ज़ परी का.

तुझ पर मैं आशिक़ हुई चलते चलते राह। उठा मगाया याँ तुझे भेज के देव सियाह

शेर रुबानी ज़बानी सब्ज़ परी के मुख़ातिब होकर शाहज़ादे से.

सिर पे आँखों पे कलेजे पै बिठाऊं तुझको। आ मेरे पास गले से मैं लगाऊं तुझ को।
दिलो जाँ से मुझे भाती हैं अदायें तेरी। पास ला चाँद सा मुँह लूं मैं बलायें तेरी।
लेट पहिलू में मेरे घर को मैं आबाद करूं। तुझ को लिपटा के गले वस्ल से दिलशाद करूं

जवाब शाहज़ादे का.

वस्ल की तेरी क़सम घर में है खाना मुझ को। न ख़बरदार अभी हाथ लगाना मुझ को
मुझ को नादान समझ दूर हो दाना हूं मैं। क़ौम की तू जो परी है तो सियाना हूं मैं
बिसवा तुझसी ज़माने में न होगी जिन्हार। आप बदनाम हुई मुझ से छुड़ाया घरबार

जवाब सब्ज़ परी का.

ज़िन्दगी का है मज़ा ऐसी मुलाक़ातों में। चोंचले मुझ से बघारो न ज़रा बातों में।
शुकर अल्लाह का कर लड़ गई क़िस्मत तेरी। एकबयक मुझसी परी को हुई उल्फ़त तेरी
तुझको दीवाने नहीं शर्म ज़री आती है। ख़्वाब में भी कहीं इन्साँ के परी आती है
देख पछतायेगा मेरा जो बुरा दिल होगा। वस्ल तुझ को न परी का कभी हासिल होगा

जवाब शाहज़ादे का.

घर से छुटने का है ग़म आहो फ़ुँगा करता हूं। वस्ल का वादा: मैं इस शर्त से हाँ करता हूं
सुनी इन्दर की सभा मैं ने कहानी में है। उस का अरमान मुझे जोश जवानी में है।
और जलसों का तो हाँ हिन्द में भी चरचा है। नाच परियों का मगर मैं ने नहीं देखा है
साथ अपने मुझे ले चल के वह जलसा दिखला राजा इन्दर के अखाड़े का तमाशा दिखला
सैर मैं तेरे सबब बाँकी जो इक बार करूं। जीते जी फिर न कभी वस्ल का इन्कार करूं
उम्र भर पास से तेरे न कहीं जाऊं मैं। जो कहे तू उसे आँखों से बजा लाऊं मैं।

जवाब सब्ज़ परी का.

ऐसी बातों का ज़बाँ पर नहीं लाना अच्छा। जान आफ़त में नहीं मुफ़्त फँसाना अच्छा
देता इन्दर के अखाड़े पै अबस जान है तू। सख़्त बे अक़्ल है दीवाना है नादान है तू
ऐसी जा सैर को इन्सान नहीं चलते हैं। वाँ मेरी जान परीज़ाद के पर जलते हैं।
आफ़त आ जायेगी तुझ पर अरे इक आन के बीच, आदमीज़ाद का क्या काम परिस्तान के बीच
कोई राजा को ख़बर जा के लगा देवेगा। फूंक देगा वह तुझे मुझ को जला देवेगा।
न जलायेगा तो आफ़त में फ़ँसायेगा तुझे। क़ैद करके वह कुयें में ख़ूब झकायेगा तुझे

जवाब शाहज़ादे का.

मैं न मानूंगा न मानूंगा कभी बात तेरी। काम किस रोज़ के आवेगी मुलाक़ात तेरी
बात जो असल थी मैं अक़्ल से पहिचान गया। बाइस इन्कार का जानी मेरा दिल जान गया
तू किसी देव के ख़िदमत में वहाँ आती है। इसलिये मुझ को सभा में नहीं ले जाती है

जवाब सब्ज़ परी का.

बात हर्गिज़ ये ज़बाँ से न निकालो साहब। होश में आओ ज़रा मुँह को सँभालो साहब
देव से मुझको बुरा काम जो करना होता। आदमीज़ाद पै किस वास्ते मरना होता।
मैं परी होके और ऐसे पै फ़िदा जान करूं। ऐड़ी चोटी पै सुरा देव को क़ुर्बान करूं।

जवाब शाहज़ादे का.

दिल हर इक शख़्स का फन्दे में फँसाती है तू। अये परी क्यों मुझे बातों में उड़ाती है तू।
सुबह होती है मेरी जान कोई आन के बीच। भैरवी चलके सुना मुझको परिस्तान के बीच
वाँ न ले जायगी तो जी से गुज़र जाऊंगा। आप मैं अपना गला काट के मर जाऊंगा।

जवाब सब्ज़ परी का.

मुफ़्त की यार ख़राब अपनी जवानी तूने। हाय अफ़सोस मेरी बात न मानी तूने।
अब मिलेगा न अज़ीज़ों से न माँ बाप से तू। शेर के मुँह में मेरी जान चला आप से तू।
थक गये होंठ कहाँ तक अरे समझाऊं मैं। चल अखाड़ा तुझे इन्दर का दिखलाऊं मैं

जवाब शाहज़ादे का.

किस तरह चलने पै तैयार मेरी जाँ हूं मैं। तू परीज़ाद है चालाक और इन्साँ हूं मैं
उड़के तू जायगी इक पल में परिस्तान के बीच। हाथ फैला के मैं रह जाऊंगा अरमान के बीच
कोई उड़ चलने की तदबीर बता दे मुझको। पर किसी देव के तू नोंच के ला दे मुझ को

जवाब सब्ज़ परी का.

चलकी बातें न करो होश में आओ जानी। न परीज़ाद से बे पर की उड़ाओ जानी
थाम लो पाया मेरे तख़्त का अब हाथ से तुम। छूट जाना न कहीं राह में पर साथ से तुम
मुझ से वाँ जाके कोई बात न कहना साहब। पीछे पीछे मेरे तुम नाच में रहना साहब।
गाके और नाच के बुत सब को बनाऊंगी मैं। तुझ को ले चलके दरख़्तों में छिपाऊंगी मैं
किसी आफ़त में इकाइक अगर आना जानी। याद रखना कि मुझे भूल न जाना जानी।

आना दुबारा सब्ज़ परी का सभा में और कहना छंद का.



सभा में बुलवा कर मुझे आप किया आराम। आई हूं मैं फिर यहां करने अपने काम
करने अपना काम यहाँ फिर हूं मैं आई। ठुमरी छन्द ग़ज़ल की जो मैं धुन है समाई
समा बँधेगा आज जो मैं जी खोल के गाई। कहेंगे सब उस्ताद ने क्या क्या चीज़ बताई

ठुमरी. ज़बानी सब्ज़ परी के बीच धुन पर्च के.

मोरी अँखियाँ फरकन लागीं, कहाँ गयो यार किधर गई सखियाँ।
अँखियाँ फरकन लागीं.
देह फुँकत है जिय तरफत है, पीत लगा के मज़ा हम चखियाँ।
अँखियाँ फरकन लागीं.
नैनन में दिलदार बसत है, ये अँखियाँ अलमास परखियाँ।

अँखियाँ फरकन लागीं.

बल बल जाऊं मैं उस्ताद के, बीच सभा में मोरि पति रखियाँ।

अँखियाँ फरकन लागीं.

ठुमरी दूसरी. ज़बानी सब्ज़ परी के बीच धुन पर्च के.

सुधि लाग रही तोरी आठ पहर, तन मन की नहीं मोहिं ख़ाक ख़बर।

सुधि लाग रही.

निशि बासर मोहिं कल न पड़त है, दिखला दे झलक कहुं एक नज़र।

सुधि लाग रही.

अरज़ करत मोरा जियरा डरत है, दिल धरकत देह कँपत थर थर।

सुधि लाग रही.

हर का पता उस्ताद लगा दे, बौरी सी फिरत हूं जिधर तिधर ।

सुधि लाग रही.

ग़ज़ल. ज़बानी सब्ज़ परी के बीच धुन देश के.

भूला हूं मैं आलम को सरशार इसे कहते हैं। मस्ती से नहीं ग़ाफ़िल हुशियार इसे कहते हैं

दम लेके मेरा छोड़ा आज़ार इसे कहते हैं। अच्छा न रहा इक दिन बीमार इसे कहते हैं

कल घर से जो वह निकला इक हश्र हुआ बरपा। दिल पिस गये आलम के रफ़्तार इसे कहते हैं

उस माह का जलवह है उश्शाक़ की महिफ़िल में। यूसफ़ इसे कहते हैं बाज़ार इसे कहते हैं

तसवीर को सक्ता है कहते हैं इसे नक़्शा। आइने को हैरत है रुख़सार इसे कहते हैं

इक रिश्तये उल्फ़त में गर्दन है हज़ारों की। तसवीर इसे कहते हैं ज़ुन्नार इसे कहते हैं

महिशर का किया वादा याँ शक्ल न दिखलाई। इक़रार इसे कहते हैं इन्कार इसे कहते हैं

दिल ने शबे फ़ुरक़त में क्या साथ दिया मेरा। मूनिस इसे कहते हैं ग़मख़्वार इसे कहते हैं

शब गुज़री सहर आई बक बक के थका आशिक़, बोसा न दिया उसने तक़रार इसे कहते हैं

ख़ामोश अमानत है कुछ उफ़ भी नहीं करता। क्या क्या नहीं ऐ प्यारे अग़ियार इसे कहते हैं

ग़ज़ल दूसरी. ज़बानी सब्ज़ परी के.

लबे जाँबख़्श की उल्फ़त में लब पर जान आई है। मरीज़े इश्क़ मरता है मसीहा की दुहाई है

नहीं माथे की अफ़शाँ उसके रुख़ पर छिटके आई है, ज़बीं ने शर्बते दीदार पर छिड़की हवाई है

शबे तारीक़ फ़ुरक़त में करे कौन अन्ना दिल रौशन। चराग़ अंधा है चरख़ी शमा की आँखों में छाई है

बफ़ूरे ख़त से है बदरंग जिल्दे मुसहफ़े आरिज़। कलाम अल्लाह की काफ़िर ने क्या सूरत बनाई है
जगह फ़ज़्ले ख़ुदा से इक बुते काफ़िर को है दिल में। फ़िरिश्ता जा नहीं सक्ता जहाँ अपनी रसाई है
हिलाता हूं फ़लक को बारमुर्दन अभी नालों से। लहद में पाऊँ फैला कर ज़मीं सर पर उठाई है
ख़ुदा के सामने गर्दन झुकायेगा निदामत से। बुतों को कर के सिजदा बरहमन ने मुंह की खाई है
न पहुँचा आप को साबुत छुड़ा कर पास शेरों के। कलाई हाथ में लेकर मेरे दिल को कल आई है
मेरी तुरबत के सब्ज़े पर ग़ुमा बेजा है शबनम का। लहद पर मोतियों की चर्ख़ ने चादर चढ़ाई है
रखे अल्लाह इज़्ज़त इश्क़ में कुछ बन नहीं पड़ती। अकेला मैं हूं उस बुत की तरफ़ सारी ख़ुदाई है
लिया है अबरू के तिल का बोसा सैन ग़ुस्से में। जिगर देखो हमारा मुंह पै क्या तलवार खाई है
जिलाना आतिश अफ़रोज़ों का क्या मुश्किल है दुनिया में, मेरे नालों ने अक्सर आग दोज़ख़ में लगाई है
मुक़र्रर बोसे लेने से मज़ा मिलता है दुनियाँ में। लबे शीरीं ने जाना क़न्द की गोया मिठाई है।
रुख़े रंगी के बोसे ग़ैर की ग़ीबत में लेता है। उड़ा है बाग़ से सैयाद बुलबुल की बन आई है
फँसी है इश्क़ के फन्दे में बेढब जाँ अमानत की। मदद को या अली पहुंचो दमे मुश्किल कुशाई है

चुग़ली खाना लालदेव का राजा इन्द्र से मसनवी में.



महाराज को हक़ रक्खे शाद काम। । नई आज है अर्ज़ करता ग़ुलाम
मैं खाता था इस दम चमन की हवा । हक़ीक़त वह देखी कि होश उड़ गया
शजर है पुराना जो शमशाद का। । ग़ुज़र है वहाँ आदमीज़ाद का ।
नहीं करती असला मेरी अक़्ल काम । वह इन्सान है या कि माहे तमाम
उसे कौन लाया है याँ अपने साथ । इसी फ़िक्र में कब से मलता हूं हाथ

कहना सब्ज़ परी का लालदेव से आलमे यास में.

न कर लालदेव इस्तरह के कलाम । अरे बे मुरव्वत ज़बाँ अपनी थाम।
ख़ुदा के ग़ज़ब से ज़रा दिल में काँप । चुग़लख़ोर के मुँह को डसते हैं साँप
परी की तरफ़ देख अहमक न बन । बुराई से बाज़ आओ कौले हसन
किसी की बदी तू न कर ऐब है । कि उस का ख़ुदा आलमुलग़ैब है
दिले आशिक़ इस बात से हिल गया । तुझे हाय कम्बख़्त क्या मिल गया

पूछना राजा इन्द्र का लालदेव से ग़ज़बनाक हो कर.

अरे देव तू है ये क्या बक रहा । मेरे बाग़ में काम इन्साँ का क्या।
हुआ किस्तरह याँ बशर का ग़ुज़र । परिन्दों के दहशत से जलते हैं पर
क़दम रख सके जिनकी क्या जान है । परिस्तों की याँ अक़्ल हैरान है ।
किसी देव से आशनाई न हो । परी कोई साथ उस को लाई नहो
उसे खींच ला पास मेरे शिताब । । कि ग़ुस्से से हैं हाल मेरा ख़राब

जाना लालदेव का पास गुल्फ़ाम के और पूछना तैश खाकरके.

बशर है कि जिन है कि साया है तू। परिस्तान में क्यों कर आया है तू.
उठा आँख कर जल्द मुझ से बयाँ । बिठाया तुझे किस ने ला कर यहाँ
चमन का कोई गुल के बूटा है तू। सितारा क्या बन के टूटा है तू।
परी पर ये शैदा तेरा दिल हुआ । अखाड़े में इन्दर के दाख़िल हुआ
मेरे साथ चल जल्द से बेशऊर । । बुलाया है राजा ने अपने हुज़ूर

लाना लालदेव का गुल्फ़ाम को खींच कर रोबरू राजा इन्द्र के और अर्ज़ करना.



हुज़ूरी में हाज़िर है ये शोला ख़ू। महाराज साहब निगह रोबरू
बजा आप का हुक्म लाया ग़ुलाम। चमन में पहुँच कर किया अपना काम
शजर के तले से उठाया उसे।। सभा की तरफ़ खींच लाया उसे
डरा मैं न कुछ उस की फ़रयाद से। उड़ा लाया क़ुमरी को शमशाद से
सिलम कीजिये जो सज़ावार है।। खड़ा दस्त बस्ता गुनहगार है।

पूछना राजा इन्द्र का गुल्फ़ाम से सबब दाख़िल होने का परिस्तान में.

अरे कौन है तू तेरा क्या है नाम। सभा तू ने की मेरी बरहम तमाम
तुझे लाया यां कौन से बद सफ़ात। बयां मुझ से कर जल्द से वारदात
किया क़स्द तू ने परिस्तान का। न ख़ौफ़ आया अपनी तुझे जान का
मेरी सारि महफ़िल की ली आबरू। यहाँ घूरने आया परियों को तू
बता हाल आने का अय दर्द नाक। जला कर अभी वरना कर दूंगा ख़ाक

अर्ज़ करना गुलफ़ाम का राजा इन्द्र से आलमे हिरास में हाथ जोड़ कर.

कहूं क्या फलक का सताया हूं मैं। यहाँ खेल कर जी पै आया हूं मैं
परी सब्ज़ है जो अखवाड़े में याँ। उसी का हूं दिवाना मैं नीम जाँ
सभा की सदा धूम सुनता था मैं। इसी फ़िक्र में सर को धुनता था मैं
वह आने लगी आज की शब जो याँ। लटक कर हुआ तख्त में मैं रवाँ।
बला में हुआ याँ गिरफ़ार हूं।। जो चाहो सज़ा दो गुनहगार हूं

बुलाना राजा इन्द्र का सब्ज़ परी को सामने अपने और लानत मलामत करना.

अरी ओ परी सब्ज़ ओ बेहया। मेरे सामने जल्द आ बेसवा।
थुड़ी है तेरी जातो बुनियाद पर। कि आशिक़ हुई आदमीज़ाद पर
बनाया अरी तू ने इन्साँ को यार। बक़ौले हसन सुन तू ऐ नाबकार
तेरे रंग ग़ैरत से उड़ता नहीं।। तुझे क्या परीज़ाद जुड़ता नहीं
सभा में लगा लाई इन्साँ को साथ। तेरा अब गरेबाँ है और मेरा हाथ

अर्ज़ करना सब्ज़ परी का राजा इन्द्र से और नादिम करना गुलफ़ाम को रोना गले लिपटा कर.

जफ़ाओ सितम की सज़ावार हूं। हक़ीक़त में तेरी गुनहगार हूं।
अरे क्यों मैं वाँ तुझ से कहती थी क्या। न माना मेरा हाय तू ने कहा।
बला में पड़ा आप भी बे ख़ता। मुझे भी अखवाड़े में रुसवा किया
कहाँ फेंके अब देखूं राजा तुझे। ख़ुदा को मेरी जान सौंपा तुझे।
जो जीते हैं तो फिर भी मिल जायँगे। नहीं तो किये की सज़ा पायँगे।

कहना राजा इन्द्र का लालदेव से वास्ते क़ैद गुलफ़ाम के और निकलवाना सब्ज़ परी का अखवाड़े से पर नोच के.

अरे देव कर क़स्द बेदार का। पकड़ हाथ इस आदमीज़ाद का
कुवाँ वह जो है काफ़ में पुर ख़तर। अभी उस में जा कर इसे क़ैद कर
परी सब्ज़ ये है जो आगे खड़ी। ख़ता की है इस बेसवा ने बड़ी
सो तू नोंच कर इस के पर और बाल। अखवाड़े से मेरे अभी दे निकाल

उड़ाती फिरे ख़ाक ये कू बकू। न आये हमारे कभी रूबरू



आना सब्ज़ परी का जोगन बनके परिस्तान में और आम-दगाना लोगों का.

जोगन आती है परी बनके परिस्तान के बीच। सुमरनी हाथों में मुंद्रे परे हैं कान के बीच
सर पे इंडुवा है रखे मुँह पे रमाये भभूत। सेलियाँ डाले हैं गरदन में गरेबान के बीच



चाल मतवाली है आँखें हैं मये इश्क़ से लाल, मस्त शहज़ादये गुल्फ़ाम के हैं ध्यान के बीच
सर को धुनते हैं सदा सुनके चरिन्द और परिंद। भैरवीं का अजब अन्दाज़ है हर तान के बीच
तालिबे बोसा हैं लबदीद की मुश्ताक़ आँखें। दिल है सीने में तपों वस्ल के अरमान के बीच

कहीं गुल्फाम का कोसों नहीं मिलता है पता। खाक उड़ाती हुई फिरती है बियाबान के बीच
ग़म्ज़ा आफ़त है क़यामत है अदायें उसकी। हश्र आलम में बपा करती है इक आन के बीच
सब्ज़ जोड़े में है क्या चेहरे रोशन की ज़िया। सुबह को चाँदनी ने खेत किया धान के बीच
देव मदहोश हैं परियों में नहीं दम उस्ताद। जिन तड़पते हैं पड़े जान नहीं जान के बीच

ठुमरी गाना जोगन का परिस्तान में बीच धुन भैरवीं के.

मैं तो शहज़ादे को ढूँढ़न चलियाँ, अंग भभूत जोगन बन मलियाँ।
छान फिरीं सब गलियाँ, मैं तो शहज़ादे को ढूँढ़न चलियाँ।
जी जावत है डगर नहिं आवत, हम महिलों की पलियाँ रे।
लट छिटका के भेष बना के, देश विदेश निकलियाँ रे।
अंग भभूत जोगन बन मलियाँ, मैं तो शहज़ादे को ढूँढ़न चलियाँ
सीस बिकस गयो पाउँ झुलस गयो, धूप में बन बन जलियाँ रे।
तन कुम्हला गयो सुख मुरझा गयो, जैसे गुलाब की कलियाँ रे।
अंग भभूत जोगन बन मलियाँ, छान फिरी सब गलियाँ रे।
मैं तो शहज़ादे को ढूँढ़न चलियाँ.
जग दुशमन है राह कठिन है, बलायें क्यों कर टलियाँ रे।
जाय कहो उस्ताद से गुइयाँ, छान फिरी सब गलियाँ रे।
मैं तो शहज़ादे को ढूँढ़न चलियाँ.

ठुमरी दूसरी ज़बानी जोगन के बीच धुन भैरवीं के.

कहाँ पाऊं कहाँ पाऊं यार रे मैं.

अन्तरह.

यार की छाँऊ नज़र नहीं आवत, ढूँढ़त हूं संसार रे मैं
कहाँ पाऊं.
कारे करूं कित हेरन जाऊं, सोचत हूं बार बार रे मैं
कहाँ पाऊं.
सपने में दिल्दार को पाके, चौंक पड़ी भिन्सार रे मैं
कहाँ पाऊं.
पिया कारण उस्ताद के जाके, होइ हौं गले का हार रे मैं
कहाँ पाऊं कहाँ पाऊं यार रे मैं.

ग़ज़ल-ज़बानी जोगन के फ़िराक गुल्फ़ाम में.

मरता हूं तेरे हिज्र में ऐ यार ख़बर ले। अब जान से जाता है ये बीमार ख़बर ले
फिरता हूं तसव्वुर में तेरे सुबह से ताशाम। बेताब है यह तालिबे दीदार ख़बर ले
बाज़ार वफ़ा गर्म है ऐ यूसफ़े सानी। दिल बेचता है तेरा ख़रीदार ख़बर ले
ढूंढ़े से भी अब तेरा ठिकाना नहीं मिलता। हूं छान रहा कूचा व बाज़ार ख़बर ले
दुनिया में कोई आन कोई दम का हूं मेहमान। अब साँस है लेना मुझे दुशवार ख़बर ले
आँख उसकी हो क्या हाल दिले ज़ार से आगाह। किस्तरह से बीमार की बीमार ख़बर ले
आँखें हैं लगी दर से दिखा शक्ल ख़ुदारा। सर फोड़ रहा हूं पसे दीवार ख़बर ले
इतना भी नहीं चाहिये आशिक़ से तग़ाफ़ुल। सौबार अगर टाल तो इक बार ख़बर ले
आग़ाज़ मुहब्बत में नहीं ज़ीस्त की उम्मेद। मरता है तेरा ताज़ह गिरफ़्तार ख़बर ले
लिल्लाह दिखला शक्ल अब ऐ तिफ़्ल बिरहमन। ऐ बे ख़बर ऐ वस्ते ज़ुन्नार ख़बर ले
सुनते हैं कि फ़ुरकत में तड़पता है अमानत। जल्द ऐ बुते बेदीं पस ग़फ़्फ़ार ख़बर ले

ग़ज़ल दूसरी-ज़बानी जोगन के आलम बेक़रारी में बीच धुन भैरवीं में.

रूह बदन में है तपाँ जी को है कल से बेकली। जल्द ख़बर लो हमदमो जान फ़िराक में चली
बाद सबा जो सुबह दम बाग़ में नाज़ से चली। नख़्ल निहाल हो गये फूल गई कली कली
साये की तरह रुख़ से वक़्त चढ़ा चेहरये साफ़ उतर गया। आया ज़वाल यार पर हुस्न की दोपहर ढली
तुम सा न शक्करीं दहन होगा हसीन कोहकन। शाख़े नबात होंठ हैं बात नबात की डली
तारकशी दुपट्टा तू ओढ़े किरन जो टाँक कर। हो शबे माहिताब में क्या ही सनम झला झली
चलता है बाग़ में वह गुल जब कि उठा के पाँयचे। ख़ार हरइक फूल को देती है क्या कली कली
क़स्द किया जो अब्र में उस गुले तर ने सैर का। सब्ज़े ने दूर तक किया दश्त में फ़र्श मख़मली।
यार सा नाज़नीं कोई कब है रियाज़े दहर में। बोझ से दर्द सर हुआ पहिना जो जोड़ा संदली
मैंने शबे फ़िराक़ में की जो सक आह आतशी। जिस्मये शमअ का फुका कहने लगी जली जली
आई बहार साक़िया जामे शराब दे पिला। फूल खिले फले शजर अब उठा हवा चली
ज़ुल्फ़ें दराज़ क़िता की सुझ से उलझा के यार ने। जान छुटी अज़ाब से रोग गया बला टली
भौंहों तेरी में बल पड़ा कत्ल हुआ मैं तेग़ से। तेरी उधर पलक हिली मुझ पे इधर छुरी चली
बहके ज़मीने शेअर में पाउं अमानत अप्ना क्या ज़ब हुई लग़ज़िश इक ज़रा निकला ज़बां से या अली

तारीफ़ करना कालेदेव का जोगन की राजा इन्द्र से.

ख़ुदा राजा जी को रक्खे शाद मान । जो हो जान बख़्शी तो खोलूं ज़बान
परिस्तान में जोगिन इक आई है । ख़लाइक सब उस की तमाशाई है
वह नाचती गाती इस आन से । कि जिन सद्क़े होते हैं सौ जान से
ग़ज़ब भैरवीं की हरइक तान है । ख़ुदाई का दिल उस पै क़ुर्बान है
मले हैं भभूत और अफ़्शाँ चुनी । न देखी है जोगिन न ऐसी सुनी।

मुश्ताक़ होना राजा इन्द्र का और बुलाना जोगिन को कालेदेव से.

न कर देर ऐ देव बहरे ख़ुदा । अखाड़े में मेरे उसे जल्द ला।
मैं देखूं वह जोगिन है किस शान की। परी है व या क़िस्म इन्सान की
किसी देव जिन की सताई न हो । मेरे पास फ़रयाद लाई न हो।
मज़ा राग का नाच का ज़ौक़ है । फ़क़ीरों से मुझ को बहुत शौक़ है
न लाये वह कुछ और दिल में ख़याल। दिखाये मुझे आके अपना जमाल

सवाल कालेदेव का जोगन से और ज़ाहिर करना कमाल इश्तियाक़ राजा इन्द्र का.



अरी जोगन अब दिल में हो अपने शाद। किया है तुझे राजा इन्दर ने याद।

किसी से तेरा सुन लिया है जो हाल। मुलाक़ात का शौक़ उसे है कमाल
मेरा देर करना उसे शाक है। तेरे नाच गाने का मुश्ताक़ है
मुराद अब तेरे दिल की बर आयगी। जो माँगेगी वह चीज़ मिल जायगी
न फिर उम्र भर तू करेगी सवाल। वह इक दम में कर देगा तुझको निहाल

जवाब जोगन का तरफ़ कालेदेव के तान आमेज़ और लगावट करना बाद उसके.

ये बातें न लाना ज़बाँ पर कभी। फ़क़ीरों से अच्छी नहीं दिल्लगी
बड़ा वह मेरा देने वाला हुआ। ख़ुशामद से मुँह तेरा काला हुआ
फ़क़ीरों को दौलत की परवाह नहीं। यहाँ हरके अफ़ज़ाल री क्या नहीं
जो गाने का राजा तलबगार है। तो याँ किसको चलने में इन्कार है
तबीअ़त मुख़ातिब अगर पाउंगी। जो आता है मुझ को सुना आउंगी



महाराज कीजे इधर अब निगाह। ये जोगन है हाज़िर बहाले तबाह
मिला किस ख़राबी से इस का निशाँ। हुआ मैं परिस्ताँ में हर सू रवाँ

बहुत जल्द ख़िदमत में आया हूं मैं। अखाड़े में जोगिन को लाया हूं मैं
अजब ख़ुश गुलू है ये ज़ोहरा ज़बीं। उड़ाती हैं जंगल में क्या भैरवीं
हर इक तान पर लोट जाता है जी। सुना होगा गाना न ऐसा कभी

देखना राजा इन्दर का तरफ़ जोगिन के और दरयाफ़्त करना हाल जोगिन का.

अरी जोगिन ऐ दर्द की मुब्तिला। फ़क़ीरों का क्यों भेष तू ने किया
फ़िदा किस पै है किस पै शैदा है तू। कोई आदमी है परी या है तू।
कहाँ से यहाँ तेरा आना हुआ। कि मुश्ताक़ सारा ज़माना हुआ
किसे ढूंढ़ती फिरती है कू बकू। उड़ाती है क्यों ख़ाक जंगल की तू
सुना अपना गाना मुझे भी ज़रा। सुना भैरवीं छेड़ या जोगिया।

जवाब जोगिन का दर्द आमेज़ तरफ़ राजा इन्द्र के और अर्ज़ हाल करना.

महाराज पूँछो न जोगन का हाल। फ़क़ीरों का दिल दर्द से है निढाल
मेरा मुझ से माशूक़ है छुट गया। मेरा राज इस देश में लुट गया।
यहाँ ढूंढ़ने उस को आई हूं मैं। विरोगन हूं ग़म की सताई हूं मैं
सुनाती हूं गाना जो मुझ को है याद। अजब क्या जो मिल जाये दिल की मुराद
अगर राम से ग़ैर हो दिल का हाल। न जोगन का रद कीजियेगा सवाल।

ठुमरी गाना जोगिन का सामने राजा इन्द्र के बीच धुन भैरवीं के

कहाँ गयो गुइयाँ शहज़ादा जानी प्यारा. दिल तड़पे है हमारा
कहाँ गयो गुइयाँ शहज़ादा जानी प्यारा.
वा का पता कहूं लागत नाहीं, ढूंढ़ फिरी बन सारा।
कहाँ गयो
बिन जानी के इन नयनन में, रैन दिना अँधियारा।
कहाँ गयो.
गुइयाँ मैं जैसे सूरख मछरिया, तरपत होगा विचारा।
कहाँ गयो.
कोउ कहे उस्ताद से जा के, तुम्हरे दम का सहारा।

कहाँ गयो गुइयाँ शहज़ादा जानी प्यारा

गिलौरी देना राजा इन्द्र का जोगिन को महज़ूज़ होकर और जवाब देना जोगिन का नसर में.

पान लेके क्या करूं किसी सब्ज़ रंग का ध्यान है। हड्डियाँ चूना है वदन धान पान है इश्क़ लोहू पीपी के रंग लाया है। फ़िराक ने कत्ल का बीड़ा उठाया है गिलौरी लिये मुझे क्या तकता है। फ़क़ीरों का मुँह कौन कील सक्ता है

होली गाना जोगिन का सामने राजा इन्द्र के बीच धुन सिन्ध भैरवीं में.

जर जाये गुइयाँ ऐसी होरी. बिन सइयाँ देह सुलगत मोरी
फाग सुभाग पिया सँग भागो, सब चुरियाँ हम तोरी।
सुरख़ चुनरिया उढ़ाव न सजनी, तन मन त्याग लगोरी।
बिन सइयाँ देह सुलगत मोरी.
अबीर गुलाल मिलाओ ख़ाक में, कैसो फाग कैसी होरी
आँगन के बिच रँग भरि गागर, देओ पटक भर ज़ोरी।
बिन सइयाँ देह सुलगत मोरी.
बिन पिया मुख पर मार के थापर, खूब गुलाल मलोरी।
नयनन की पिचकारी बना के, अँसुअन रंग में बोरी।
बिन सइयाँ देह सुलगत मोरी.
ठग मारी यों ठाढ़ी हूं उन बिन, जैसे कीन्ही है चोरी।
का मुख ले उस्ताद के जाऊं, जिया ने आफ़त तोरी।
बिन सइयाँ देह सुलगत मोरी.

हार देना राजा इन्द्र का जोगिन को फिर जवाब देना जोगिन का और हार न लेना.

हार ज़िन्हार न लोंगी दिल्को ख़्वार है। अपना गुल अज़ार गले का हार हो तो बहार है

फिर ग़ज़ल गाना जोगन का बीच धुन भैरवीं के.

दिल्को चैन इक दम नहीं है चश्मेंकुछ मिलता नहीं। वह मेरा गुलफ़ाम वह गुल्पै रहन मिलता नहीं
किस्तरफ़ सरसर मेरे दिल्को उड़ाकर लेगई। गुलशने आलम में वह रश्के चमन मिल्ता नहीं

बावली हूं बहर उल्फ़त में ज़ुलेखा की तरह। यूसफ़े गुम गश्ता का चाहे ज़क़न मिलता नहीं
ज़िन्दगी से तंग हूं ये यार बाग़े दहर में। वे कली है दिलको वह ग़ुंचे दहन मिलता नहीं
जीते जी जिस पर मरे इन्सां करे तरके लिबास। बाद मुर्दन उसके हाथों से कफ़न मिलता नहीं
शक्ल ताऊस ग़ुलिस्ताँ हूं सरापा दाग़ दार। गुलबदन पर खाये हैं वह गुलबदन मिलता नहीं
जिस की ख़ातिर झाँकती हूं बहर आलम में कुयें। वह ग़रीके कुलज़ुमें रंजो महन मिलता नहीं
करती हूं कूकू सदा सहरा में क़ुमरी की तरह। पर कहीं वह ग़ैरते सर्वे चमन मिलता नहीं
ठोकरें खाती हूं जंगल की ख़फ़ा रहिता है जी। जान पर बन जाये ऐसा कोई बन मिलता नहीं
काँटे तलुवों में चुभे हैं जाके अब ढूँढूं कहाँ। बेरियों में भी मेरा नाज़ुक बदन मिलता नहीं
सूरते फ़रहाद मैं ने छान मारे सब पहाड़। पर कोई उस्ताद सा शीरीं सख़ुन मिलता नहीं

शालीरुमाल देना राजा इन्द्र का जोगिन को ख़ुश होकर फिर जवाब देना जोगिन का ज़ुमानी में.

रूमाल उन्हें दीजिये जो तंग दस्त हैं। फ़क़ीर अपनी कमली में मस्त है
इश्क़ की गरमी ने मारा है। पश्मीना से किनारा है।
राजा के दौर में पहले से आई हूं। जो मांगों सो पाऊं

इक़रार करना राजा इन्द्र का जोगिन से और ग़ज़ल गाना जोगिन का बतलब गुल्फ़ाम के.

होता है कोई आन में अब काम हमारा। इनआम में दीजिये हमें गुल्फ़ाम हमारा।
अब चाह से यूसुफ़ को निकलवाओ हमारा। घुटता है अँधेरे में दिला राम हमारा
आशिक़ ने तेरे माँग लिया राजा से तुझको। दे आये कोई उसको ये पैग़ाम हमारा
आ जाय अगर यार तो छाती से लगा लें। सीने में तपाँ है दिले ना काम हमारा
अब वस्ल के लूटेंगे मज़े ख़ल्क में बेख़ौफ़। आग़ाज़ से बेहतर हुआ अंजाम हमारा
मँगवाइये शहज़ादे को अब देर न कीजे। नाम आपका हो ख़ल्क में और काम हमारा
अल्लाह मददगार है हर हाल में उस्ताद। कर सक्ती है क्या गरदिशे ऐयाम हमारा

पहिचानना राजा इन्द्र का सब्ज़ परी को और तलब करना लालदेव का वास्ते ख़लासी गुल्फ़ाम के.

अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ। बड़ा मुझ को जोगन ने धोखा दिया
बनावट की थी सारी जादू गरी। नहीं आदमी सब्ज़ है ये परी।।

इसे ज़र की ख़्वाहिश न याँ लाई थी। छुड़ाने गिरफ़्तार को आई थी।
कभी इस को मिलता न वह गुलउज़ार। मगर क़ौल हारा हूं मैं तीन बार।
निकाल अब कुयें से तू गुल्फ़ाम को। हवाले कर इस नेक अंजाम को।

मिलना गुल्फ़ाम का सब्ज़परी को और गुफ़्तोशुनीद हाल सेयाम फ़िराक़ के माबैन आशिक़ व माशूक़ के.

सवाल सब्ज़परी का.

क़हेर था हिज्र क़यामत थी जुदाई तेरी। मेरे ख़ालिक ने मुझे शक्ल दिखाई तेरी

जवाब शाहज़ादे का.

ख़ाक है मुँह पै मली बाल है सिर के बिखरे। हाय इस इश्क़ ने क्या शक्ल बना तेरी।

जवाब सब्ज़परी का.

मुझ पै होना था जो कुछ हो गया इस का नहीं ग़म। हो गई क़ैद मुसीबत में रिहाई तेरी।

जवाब शाहज़ादे का.

तू मेरे आगे निकाली गई थीं नोंच के पर। राजा तक फिर हुई किस तरह रसाई तेरी

जवाब सब्ज़परी का.

बन के जोगिन हुई इन्दर के सभा में दाख़िल। फिर मुझे चाह यहाँ खींच के लाई तेरी

जवाब शाहज़ादे का.

कहि के राजा से मुझे किसने तुझे दिलवाया। दुश्मने जाँ थी मेरी जान जुदाई तेरी

जवाब सब्ज़परी का.

गा के और नाच के राजा को रिझाया मैंने। तब मुलाक़ात मयस्सर मुझे आई तेरी

जवाब शाहज़ादे का.

ज़र की तालिब न हुई तुझ को लिया राजा से। अब शर्फ़ ले गई शाही पै गदाई तेरी

जवाब सब्ज़परी का.

देव कमबख़्त ने इस ज़ोर से पहुँचा पकड़ा। हो गई लाल नज़ाक़त से कलाई तेरी।

जवाब शाहज़ादे का.

मर्ज़े इश्क़ ने सारा तेरा जोबन लूटा। आधी सूरत बख़ुदा मैं ने न पाई तेरी

जवाब सब्ज़परी का.

क़ैद ने कर दिया बीमार से बदतर तुझ को। घर में ले चलके करूंगी मैं दवाई तेरी

जवाब शहज़ादे का.

पिंडलियाँ सूजी हैं तलवों में चुभे हैं काँटे । ख़ार देती हैं मुझे बरहिना पाई तेरी।

जवाब सब्ज़ परी का.

मुझ को ईज़ा हुई पापोश के सदक़े से हुई। जान अल्लाह ने गुल्फ़ाम बचाई तेरी।

जवाब शहज़ादे का.

मैं तेरे हाथ लगा तू मेरे फन्दे में फँसी । मेरा मतलब हुआ उम्मैद बर आई तेरी

जवाब सब्ज़ परी का.

है दुआ यही मेरे दिल में कि अब हश्र तलक। फ़ज़ले उस्ताद से देखों न जुदाई तेरी

मुबारकबाद गाना सब्ज़ परी का गुल्फ़ाम से हमबग़ल होकर साथ सब परियों के.

शादिये जलवये गुल्फ़ाम मुबारक होवे । ऐशो इशरत का सराज़ाम मुबारक होवे
बाद मुद्दत के हँसीनों का नसीबा जागा। फ़र्श राहत पै अब आराम मुबारक होवे
सर्व क़ुमरी को सज़ावार हो बुलबुल को गुल। हम को यह सर्व गुल अन्दाम मुबारक होवे
पी चुके ख़ून जिगर हिज्र में जी भर भर के । शरबते वस्ल का अब जाम मुबारक होवे
तख़्त पर हम को मुबारक हो जहाँ में फिरना। गैर को गरदिशे ऐयाम मुबारक होवे
हो चुके इश्क़ में बदनाम बड़ी मुद्दत तक । अब ज़माने में हमें नाम मुबारक होवे
ज़ाल साजों के न फन्दे में फँसे तायरे दिल। गेसुओं का हमें अब दाम मुबारक होवे
हूरे जन्नत को मुबारक हों फ़लक के तारे। बाग़ को गुल हमें गुल्फ़ाम मुबारक होवे
छीने शहज़ादे को अब राजा न हमसे उस्ताद। ये अमानत सहरे शाम मुबारक होवे ।

अमानत की इन्द्रसभा समाप्त

तारीख़ इन्द्रसभा तवाज़ार मुसन्निफ़।

हुई इन्दर सभा जिस दम मुरत्तिब। जहाँ ने सुन के तौसीफ़ो सना की
बुतों ने दी सदा अल्लाह अल्लाह । हर इक मिसरा है या क़ुदरत ख़ुदा की
हुआ जो याद जिस को ले उड़ा वोह। ज़बाँ किस किस ने गाने पर नवा की
किसी ने याद की लिक्खी किसी ने। किसी ने जुस्तजू ला इन्तिहा की ।
उड़ी शुहरत जब इस्की लखनऊ में। अमानत सब ने ख़्वाहिश जा बजा की
ज़िरूये वज्र बोल उठे परीज़ाद । ख़लायक़ में है धूम इन्दर सभा की

श्रीगणेशायनमः

अथ

इन्द्रसभा मदारीलाल

सुल्तान शाह बज़्म में तशरीफ़ लाते हैं। सारे जहाँ को अपना तजुम्मुल दिखाते हैं
ख़िलअ़त से सब अमीरों को करते हैं सर्फ़राज़। रुतबा किसी का शान किसी की बढ़ाते हैं।
अज़ बसके जमा है दरे दौलत पै ख़ासव आम। मुजराई मुजरे का भी नहीं बार पाते है।

दोहरा. वज़ीरज़ादह.

शहज़ादे खुलता नहीं क्यों हो आज मलूल। ऐसे हो कुछ सोच में जैसे गये कुछ भूल

छन्द.

अहवाल अपने दिल का ज़रा तो बताइये। क्यों कर हूं ख़ैर ख़्वाह मुझे भी सुनाइये
होवे जो वारदात मुझे भी जिताइये। अपने से हो सके तो बजा उस्को लाइये

दोहरा. शाहज़ादह.

कहूं मैं तुम से बात वह क़ौल अगरचे दो। रखिये अपने तक इसे ज़ाहिर कहीं नहो

छन्द.

इस कहने से मेरे न कभी होना बद गुमाँ। तुम से नहीं है राज़ मेरे दिल का कुछ निहाँ
क्यो कर हो ख़ैरख़्वाह मेरे तुम तो जानेजाँ। लेकिन शरीक हाल जो हो तो करूं बयाँ

इरादा करना शाहज़ादे का वास्ते सैर मुल्क दीगर के सवाल

वज़ीरज़ादह.

सुनाइये मुझे लिल्लाह हालेज़ार अपना। और जानियेगा इस आसी को दोस्दार अपना

शाहज़ादह.

नग़ैर पर हो सख़ुन गर ये आश्कार अपना। तो मैं बनाऊं तुम्हें दिल से राज़दार अपना

वज़ीरज़ादह.

मेरी तरफ़ से न हूजियेगा बदगुमा न हरगिज़। ख़ुदा गवाह है ये है नहीं सिआर अपना

शाहज़ादह.

बग़ौर सुनिये इसे दिल से मैं जो कहिता हूं। कि दम उलझता है कई दिन से बार२ अपना

वज़ीरज़ादह.

चमन की सैर करो जी इधर उधर बहिलाओ। और दूसरे गुल से फ़रो कीजिये ग़ुबार अपना

शाहज़ादह.

समाई है दिले वहिशी को सैर मुल्कों की। नहीं ख़ुश आता है अब शहर और दयार अपना

वज़ीरज़ादह.

है ए ग़ुलाम भी मौजूद साथ चलने को। अगर्चे तबा मुबारक पै हो न बार अपना

शाहज़ादह.

निकालो कोई क़वी हीला दिल से पैदा कर। न होवे ताकि सफ़र शह को नागवार अपना

वज़ीरज़ादह.

शिकार से कोई बेहतर नज़र नहीं आता। ए हीला ऐसा है होवेगा पायदार अपना।

शाहज़ादह

ए तुम ने ख़ूब कहा हम को भी मंज़ूर हुआ। हो इस फ़रेब से शायद कुशादकार अपना

वज़ीरज़ादह.

अब इस में कीजे न वस्वा कोई दमतारूवीर। करेगा चाहेगा जो कुछ कि कीर्दगार अपना

शाहज़ादह.

सलाहे वक्त यही है कि इक करीने से। करे न ज़ादह शिताबी ए कारोबार अपना

वज़ीरज़ादह.

सफ़र का सामान है तयार सब मदारीलाल। फ़कत है शाह की रुख़सत का इंतज़ार अपना।

शाहज़ादह.

बस अब ठनी है यही दिल में ऐ मदारीलाल। कुदाइये किसी जंगल में राह बार अपना।

रुख़सत लेना शाहज़ादे का वास्ते शिकार के पदर अपने से

दोहरा शाहज़ादे का कहना बाप से.

रखता हूं मैं कुछ अरज़ गर अब मर्ज़ी पाऊं। हाल में अपने दर्द का सारा कहि के सुनाऊं

जवाब देना बाप का शाहज़ादे से.

बेटा तुझ पर से मैं अभी सदक़े हो जाऊं। प्यारे जो कुछ ख़ुशी हो तेरे लिये मंगाऊं

छन्द. शाहज़ादह.

वहिशत ने अब दिखाये ये सामाँ नये नये। होते हैं रोज़ चाक गिरेबान नये नये।
दिल में हैं जाके देखूं बियाबाँ नये नये। अब कीजिये शिकार ग़िज़ाला नये नये

जवाब पदर शाहज़ादह.

निकलोगे तुम जो घर से मेरी जाँ नये नये। होंगे नहीं ये हौसले इम्काँ नये नये।
क्या क्या न होंगे रंज मेरी जाँ नये नये। दिल में जो हैं भरे मेरे अरमाँ नये नये

शाहज़ादह.

जो हुक्म हो तो करूं राज़ आशकार कहीं। निकालूं इस दिले वहिशी का अब गुबार कहीं

पदर शाहज़ादह.

कहो ख़ुदा के लिये अपना हालेज़ार कहीं। कि रफ़ा होवै मेरे दिल का इज़्तरार कहीं

शाहज़ादह.

पड़ा तड़पता हूं बेबस मैं दाम वहिशत में। रिहाई हो तो करूं जाके अब शिकार कहीं.

पदर शाहज़ादह.

छुपा जो तू मेरे आँखों से ऐ महे कनआँ। कि ताँ की तरह जिगर हो न तार तार कहीं

शाहज़ादह.

लिखा है लौह ज़बां पर मेरे वसद हसरत। फिरेगा होके ये आवारह रोज़गार कहीं

पदर शाहज़ादह.

जियोंगा बिन तेरे मैं किस तरह से माहे अज़ीज़। ये ज़िनदगी न मुझे होवै नागवार कहीं

शाहज़ादह.

ये हीला साज़ फ़लक कैसा हीला करता है। न शब को चैन है दिन को नहै क़रार कहीं

पदर शाहज़ादह.

जुदा हो इक घड़ी आँखों से जिसका लख़्ते जिगर पदर को उसके हो क्यों कर भला क़रार कहीं

शाहज़ादह.

ना मना कीजिये लिल्लाह मुझको जाने दो। ये डर है हो न इसी ग़म में अपना कार कहीं

पदर शाहज़ादह.

मुफ़ारकत हो पिसर की पदर की पीरीं में। है ऐसे जौरो सितम का भला शुमार कहीं

शाहज़ादह.

जुदा जो आप के कदमों से करती है तक़दीर। फिरायेगी मुझे लेजाके कोहसार कहीं

पदर शाहज़ादह.

भुलाऊंगा मैं तुझे दिल से किस्तरह प्यारे। ए याद तेरी रगे जाँ कि होने ख़्वार कहीं

शाहज़ादह.

शिकार के लिये जाता हूं ऐ मदारीलाल। मैं ख़ुद न हूं किसी सैयाद का शिकार कहीं

पदर शाहज़ादह.

तुम अपने दिल्के तो मुख़्तार हो मदारीलाल। हुआ है ग़ैर के दिल पर भी इख़्तियार कहीं

गाना शाहज़ादे का वक़्त आमद

शाहज़ादे आज निकले हैं घर से शिकार को। देखें शिकार करते हैं किस शह सवार को।

अब रूकमान तेग़ निगह और मिज: है तीर। नोके सीना बनाये कुचों के उभार को

शाहज़ादी.

करता है इस दश्त में जो तू आज शिकार। शामत तेरे वक़्त की तुझ पर हुई सवार।

छन्द.

आया न तुझ को ख़ौफ़ हमारे जलाल का। तूने जो कर लिया है शिकार एक ग़िज़ाल का

छूटा हुआ ये सैद तो है मेरे जाल का। बेजा है क़स्द तेरा अब इस दम मलाल का

शाहज़ादह.

कहती है क्या देर है करेगी क्या इज़हार। ज़रा ज़बान को थाम के कर मुझ से गुफ़्तार

छन्द.

मैंने जो कर लिया है शिकार एक ग़िज़ाल का। बस अब हुआ है तेरे ही बाइस मलाल का

परदा उठाके देख तो दश्तो ज़वाल का। होगा असीर और कोई तेरे जाल का

शाहज़ादी.

सैद को मेरे जो सैद अपना बनाया तूने। ख़ौफ़ कुछ अपनी नबीअत पै न खाया तूने

चोरियाँ करना और उस पर है ए सीनेज़ोरी। कहीं कमज़ोर है शायद मुझे पाया तूने

बे महावा मेरे जंगल में तू करता है शिकार। अपना न ख़्वाह चोर है सैयाद बनाया तूने

पीछे इस सैद के थी देर से सहेरा में ख़राब। हाथ से मेरे शिकार अब ये छुटाया तूने

ये मज़ा तो नहीं सैयार है सैयारी का। शैद जो अब है किया अपना पराया तूने
रहम आ जाता है हर बार तेरी सूरत पर। वरना इस वक्त मुझे खूब जलाया तूने
बहरे तफ़रीह इहाँ आई थी करने को शिकार। अब शिकार अभा मुझे हैफ़ बनाया तूने

शाहज़ादह.

कौन है तू जो यहाँ शोर मचाया तू ने। मुफ़ बक् बक् के मेरा मग़ज़ उड़ाया तू ने।
होश कि जाके ख़बर ले कहीं अय रश्क कमर। गर है शहज़ोर तो क्या मेरा बनाया तू ने।
इन तेरी बातों से होता है ये साबित मुझ को। है मगर दश्त ये जागीर में पाया तूने
शैद को तेरे भला काहे को करता मैं शिकार। होता साबित कि जो ये तीर लगाया तूने
आप शरमिन्दा हूं मैं अपनी ख़ता पर वल्लाह। कि मेरे हाथ से ये सदमा उठाया तूने
जो सज़ा चाहो मुझे दो कि सज़ावार हूं मैं। दामउल्फ़त में है अब मुझ को फँसाया तूने
दस्त सैयाद से मुद्दत में रिहाई पाई। फिर उसी कुंज क़फ़स में फ़ँसाया तू ने।

वज़ीरज़ादी.

प्यारे सच बतला मुझे क्यों है चेहरा ज़र्द। आह लबों पर से तेरे हरदम है अब सर्द

शाहज़ादी.

किस से जाकर मैं कहूं अपना दुख दर्द। गया है मुझ को मार के एक बेवफ़ा मर्द।

छन्द. वज़ीरज़ादी.

रुख़ तेरा ज़र्द फूल सा कुम्हिला रहा है आज। और अब्र ग़म का दिल पे तेरे छा रहा है आज
दुख दर्द तेरा जी जो ये अब पा रहा है आज। ये देख देख होश मेरा जा रहा है आज।

छन्द. शाहजादी.

कुछ पेचो ताप सा मेरा दिल खा रहा है आज। और रोने के सिवा नहीं कुछ भा रहा है आज
मैं क्या कहूं जो दिल में मेरे आ रहा है आज। आफ़त हज़ार जान पे वह ला रहा है आज

वज़ीरज़ादी.

बारी तुम अभा हाल बताओ तो क्या हुआ। दिल पे तुम्हारे कौन सा अब सानेहा हुआ
सहिरा में जो गई थी अभी खेलने शिकार। शायद किसी परी का तुझे दग़दग़ा हुआ
इन बातों में तू अपने तईं मत फ़ँसाइयो। इस इश्क़ में बता तो किसी का भला हुआ
है है ये कैसा वैसा समाया तुझे ख़याल। ये इश्क़ तेरे जान का दुश्मन नया हुआ
क्योंकर बुझाऊं आह मैं ये आतिशे फ़िराक़। दिल में जो अब है मेरे ये शोला लगा हुआ

जंगल में जाके उस की मैं कर लाती हूं तलाश। दिल में मेरे है अब यही इस दम ठना हुआ
जाती हूं मैं तलाश में उड़ के मदारीलाल। है जिस की सारी ज़ात का ये गुल खिला हुआ

शहज़ादी.

इस फ़िक्र में मैं ख़ुद हूं इलाही ये क्या हुआ। मुझ नातवाँ को अब तो ये क्या आरज़ा हुआ
सहिरा में वक्त सैर हुई तुरफ़ा वारदात। इक महज़बीं का आज मेरा सामना हुआ।
रहिता है हर घड़ी मुझे उस माहेरू का ध्यान। दिल मेरा लाख जी से है उस पर फ़िदा हुआ
नासेह न कर ख़ुदा के लिये ऐसी गुफ़्तगू। छुटता नहीं छुड़ाये से ये दिल फ़ंसा हुआ
रहि जायेगी हमें ये शिकायत तमाम उम्र। तुम को न मेरे रंज का सदमा ज़रा हुआ।
वहिरे ख़ुदा न दिल को तू कर अपने बेक़रार। होगा वही नसीब में जो है लिखा हुआ
तदवीर कोई ऐसी बता दे मदारी लाल। निकले गुबार दिल में है जो कुछ भरा हुआ

गाना शहज़ादी का.

याद मुहिं उन की आवे री. तड़फ़ तड़फ़ जिया रहि जात।
याद मुहिं उनकी आवेरी.
इत उत फिरत रहत औरन सँग, मो को देत नेक दरशन।
याही सोच में आन पड़ी, कोई उन को जाय सुनावे री।
याद मोहिं उनकी आवेरी.
इतना जाइ कहे कोइ उन से, हम तुम्हरे दरशन को तरसें।
विरहा अगिन बजाये री, देत कोउ कैसे बुझावे री।
याद मोहिं उनकी आवेरी.
लाख तरह से कोउ समझावे, बिन पिया चैन जिया नहिं आवे।
दास मदारी बिन शहज़ादे का, वयस अकारथ जावे री।
याद मो हि उनकी आवेरी.

तरजीयबन्द वज़ीरज़ादी.

सैर गुलशन का जो कुछ ध्यान हो आली आली। हुक्म भिजवाऊं कि तरतीव हो डाली डाली
तेरे ही ज़ात का जलसा है ऐ बाली बाली। हाय ये वक्त न जाये कहीं खाली खाली।
मेह बरस्ता है घटा छाई है काली काली। बुलबुलें बाग़ में ख़ुश फिरती हैं डाली डाली
आज की सैर बे: अज़ सैर है फ़रदोशवरीं। जिसने देखा उसे फ़ौरन हुई दिल को तस्कीं।

श्रौर तिलस्मात का श्रालम हुश्रा श्राँखों में हजीं, फिर ख़ुदा जाने किसे लुत्फ़ मिले या कि नहीं
मेह बरस्ता है घटा छाई है काली काली। बुलबुलें बाग़ में ख़ुश फिरती हैं डाली डाली।
फूल फूला है कहीं श्रौर हवा है ख़ुर्रम। ताज़गी दिल को हो दीदार से जिस्के हरदम।
श्रब श्राप इक दम् के लिये कीजिये गर मुझ पै करम्, ये समाँ नूर के श्रालम् का न होगा कुछ कम
मेह बरस्ता है घटा छाई है काली काली। बुलबुलें बाग़ में ख़ुश फिरती हैं डाली डाली
किसी जानिब को ये सब्ज़ा पड़ा लहिराता है। गुले सोसन भी उदा हुदकहीं दिखलाता है।
रीदये श्रब्र दुरे श्रश्क़ जो टपकाता है। कब ये सामान पसन्द उस के तईं श्राता है
मेह बरस्ता है घटा छाई है काली काली। बुलबुलें बाग में ख़ुश फिरती हैं डाली डाली
कैसा कैसा है जमा इश्क़ का सामान वहाँ। श्रापके चलने से हो रौनक़े बुस्तान वहाँ।
झूलने गाने का क्या लुत्फ़ है इस श्रान वहाँ। दिल में जो कुछ है वह सब निकलेंगे श्ररमान वहाँ
मेह बरस्ता है घटा छाई है काली काली। बुलबुलें बाग़ में ख़ुश फिरती हैं डाली डाली।
सहन् गुलशन में जो तू चलके ख़िरामा हो जाय। श्रर्के ख़िजलत्का रुख़े गुल पै नुमायाँ हो जाय
नरगिस श्राँखों को छिपाकर कहीं पिनहा हो जाय, रंग ये छाये कि सब्ज़ रंग ख़ियाबाँ हो जाय
मेह बरस्ता है घटा छाई है काली काली। बुलबुलें बाग में ख़ुश फिरती हैं डाली डाली।
लाल गूं बादये गुल रंग का पैमाना हो। सहन गुलज़ार भी सब सूरते मैं ख़ाना हो।
पेंग झूलें पै हर एक सिम्त का मस्ताना हो। सोरठो देश के रागों का वहाँ गाना हो।
मेह बरस्ता है घटा छाई है काली काली। बुलबुलें बाग में ख़ुश फिरती हैं डाली डाली।

तरजीयबन्द शाहज़ादी.

सैर गुलशन न ख़ुश श्राई न हवा सावन की। फ़स्ल रहती है इन श्राँखों में सदा सावन की
कैफ़ियत क्या मैं उठाऊंगी भला सावन की। बरमें दिलबर होते तो हो सैर को जा सावन की।
यार बिन किस्को ख़ुश श्राती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की
गुलशने दहर मेरी श्राँखों में है ख़ार तमाम। श्रौर दुनिया के मज़ा मुझ को हुये दिल से हराम
मिले रहने की श्रगर बाग़ जिना मुझ को मुदाम। बख़ुदा बिस्तरे गुल हो मुझे गिलख़न्का मुक़ाम
यार बिन किसको ख़ुश श्राती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की।
गुल ये हँस हँस के मुझे श्रौर रुलावेंगे वहाँ। सूरते बाद सबा हूं मैं बहुत श्राह कुनाँ
चश्म तर से तेरा हो जायगा तूफ़ान श्रयाँ। मेरे जाने से न होगा तुझे हासिल ऐ जाँ।
यार बिन किस्को ख़ुश श्राती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की

देख उस सब्ज़ए ख़तका मैं ज़माना भूली। सोसनी लब से मैं मिस्सी का ज़माना भूली।
पंचए सुर्ख़ से मेंहदी का लगाना भूली। ऐसी बेहोश हुई अपना बेगाना भूली।
यार बिन किस्को ख़ुश आती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की।
महवे नज़्ज़ारे ख़ुद हूं मैं बलाओं में असीर। सूरते आइना हूं या कि बिरंगी तसवीर
ऐसा सैयाद ने दिल पर मेरे मारा है तीर। बिस्तरे ख़ाक पै तड़पूं हूं पड़ी मैं दिलगीर
यार बिन किस्को ख़ुश आती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की
क्या दिखायेगी तो अब ऐश का सामान मुझे। गुल के दाग़ों से किया सर्व चराग़ान मुझे।
अब ख़ुदा के लिये मत छेड़ तो इस आन मुझे। जानेजाँ जान से कर अब नहीं हल्कान मुझे
यार बिन किस्को ख़ुश आती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की
नशए इश्क़ से इस तरह छकाया तू ने। अपने बेगानों में मस्ताना बनाया तू ने
ऐसा भूला मुझे ऐ जान भुलाया तू ने। देश सुनवा के भेस देश छुड़ाया तू ने
यार बिन किस्को ख़ुश आती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की

देशगाना शहज़ादी का.

कोई जाय कहो ये मोरी। तुम पीत लगाय काहे तोरी.
कोई जाय कहो ये मोरी.
मोरे नयनन नींद न आवे। दिन औ रैन तलफते जावे.
कोई जाके पिया को सुनावे। हम तुम बिन व्याकुल गोरी.
कोई जाय कहो ये मोरी.
जो हो बिरहा धूम मचावे। मोरे हिरदे आग लगावे.
सब भूल गई चतुराई। मैं जरत हूं जैसे होरी।
कोई जाय कहो ये मोरी.
तुम दास मरारी जाओ। शहज़ादे को नेक ले आओ.
अब जिन मोहन तरसाओ। हम प्रीति करी क्या चोरी.
कोई जाय कहो ये मोरी.

तज़ीयबन्द मुतज़म्मिन सवालात अज़ शहज़ादी.

फ़िराक़े यार से क्या क्या अज़ाब है दिल को। ख़याल ज़ुल्फ़ में क्या पेचोताप है दिल को
कहूं मैं किस्से जो कुछ इज़तराब है दिल को। ग़र्ज़े कि रंजो अलम बेहिसाब है दिल को।

न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल को
शबे जुदाई के हरचन्द ग़म उठाती हूं। ज़बाँ पै शिकवह नहीं पर कभी मैं लाती हूं
बजाय अश्क के आँखों से ख़ूँ बहाती हूं। जो हस्बहाल मैं अपने ये शअ़्र पाती हूं
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल को
जुदाई उस की हमें अब तलक सताती है। उम्मैद वस्ल में क्या रूह तिलमिलाती है
तपे फ़िराक़ अब आँखों से ख़ूँ बहाती है। न चैन आता है दिल को न जान जाती है
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल को
शबे फ़िराक़ के सदमे उठाऊं मैं कब तक। तपे जुदाई से दिल को जलाऊं मैं कब तक
शमअ़ कि तरह ये आँसू बहाऊं मैं कब तक। भला ये सोज़ जिगर लब पै लाऊं मैं कब तक
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल को
बस अब ये जाने दे बातें तुझे हमारी कसम। ख़ुदा के वास्ते ये ज़िक्र तू न कर हमदम
तेरे कलाम से होता है और रंजो अलम। हमारे दिन नहीं ऐसे कि फिर मिले वह सनम
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल को
विसाले यार की तदबीर क्या भला कीजै। कहाँ तलक शबे हिजराँ के ग़म सहा कीजै।
कहाँ से लाइये उस गुल को और क्या कीजै। सिवाय इश्क़ के ये शअ़्र बस पढ़ा कीजै
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल को
हमें फ़िराक़ है ग़ैरों से उन को सोहबत है। इलाही कैसी मुहब्बत ये कैसी उल्फ़त है।
मैं याँ तड़फ़ती हूं वाँ उन को रोज़ इशरत है। मदारीलाल कहूं क्या कि सख़्त आफ़त है
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल को

तर्जीयबन्द मुश्तमिल जवाबात अज़ वज़ीरज़ादी.

जो ऐसे रंज में तू मुब्तिला नज़र आये। जिगर न टुकडे हो क्यों फिर न चश्म भर आये
दुआ क़बूल ये अल्लाह मेरी फ़र्माये। कि तेरा रंजो मुसीबत न मुझ को दिखलाये
जो आरज़ू हो तेरे दिल की जल्द बर आये। ख़ुदा करे कि सनम तेरा तुझ को मिल जाये
चमन की सैर करो चल के दिल को बहिलाओ। विसाल होवेगा उस गुल का तुम न घबराओ
मैं सदक़े जाऊं ज़रा दिल को अपने समझाओ, कलामे यास ज़बाँ पर न हरदम बरस लाओ
जो आरज़ू हो तेरे दिल की जल्द बर आये। ख़ुदा करे कि सनम तेरा तुझ को मिल जाये
ज़माना रहता है कब एक हाल पर मेरी जाँ। कभी बाहर गुलिस्ताँ में है तो गाह ख़िज़ाँ

कभी फ़िराक़ होगा है विसाल गुंचे दहाँ। फ़लक के हाथों से सच है कि जी को ताब कहाँ
जो आरज़ू हो तेरे दिल की जल्दी बर आये। ख़ुदा करे कि सनम तेरा तुझको मिल जाये
ख़ुदा वह रोज़ कहीं जल्द दिखाये तुझे। मये वसाल सनम् जाने जाँ पिलाये तुझे
रुलाये ग़ैरों को अल्लाह और हँसाये तुझे। न फिर कभी शब हिजरों के ग़म दिखाये तुझे
जो आरज़ू हो तेरे दिल की जल्दी बर आये। ख़ुदा करे कि सनम् तेरा तुझको मिल जाये
तेरे अलम से मुझे भी अलम हुआ जानी। तेरे ही रंज से मुझ को हुआ है ग़म् जानी
हो बेक़रारी दिल किस तरह रक़म जानी। ग़र्ज़ दुआ है यही अब तो दम् बदम् जानी
जो आरज़ू हो तेरे दिल की जल्दी बर आये। ख़ुदा करे कि तेरा यार तुझको मिल जाये
तुम्हें जो देखती हूं फ़र्ते ग़म् से रश्क हिलाल। बताऊं क्या कि जो आता है अभी जी को ख़याल
बयान ऐसे ख़यालात का बहुत है मुहाल। मगर ख़ुलासे ये एक शेर है मुवाफ़िक़ हाल
जो आरज़ू हो तेरे दिल की जल्द बर आये। ख़ुदा करे कि तेरा यार तुझ को मिल जाये
तुम्हें मलूल जो यों देखती हूं मैं हरदम्। बहुत उठाती हूं मैं अपने दिल पे सदमे ग़म्
मदारीलाल हमारी दुआ है ये हरदम्। रहे न बाक़ी तेरे दिल पै कोई रंजो अलम्।
जो आरज़ू हो तेरे दिल की जल्द बर आये। ख़ुदा करे कि तेरा यार तुझ को मिल जाये

ठुमरी गाना शहज़ादी का रागिनी घाटो में.

जब से सैयां मोरि सुधि बिसराई, तड़प तड़प जिय जाये हो
किन सौतन टोना करि दीना, प्यारे को मिल जाये हो
ऐसे कठिन से प्रीति लगाई, मन मेरो पछिताये हो
अँखियन पाछे प्रीति लगाई, मन मेरो पछिताये हो
नेक मदारीलाल ले आओ, शहज़ादे को जाई हो।

तर्जीयबन्द मुतज़म्मिन् सवालात अज़ शहज़ादी.

शोरी रह हाल हूं मैं बरंगे जरस जरस। दौड़ा रहा है सर पे तू मेरे फ़रस फ़रस
बेताब हूं मैं अपने पिया बिन दरस दरस। एक पल जो गुज़रा सम झी मैं गुज़रा बरस बरस
ऐ अब्र नौबहार न दे दुख बरस बरस। मैं आप मर रही हूं पिया बिन तरस तरस
हर सिम्त झूम झूम के आती है जो घटा। हसरत से देख देख के सीने में जी घुटा
साक़ी हर एक चीज़ से जी मेरा है हटा। आगे से मेरे जाम बिलोरी का दे हटा
ऐ अब्र नौबहार न दे दुख बरस बरस। मैं आप मर रही हूं पिया बिन तरस तरस

हैहै नज़र पड़ा मुझे जब से वह मह जमाल। घुट घुट के हो गई हूं मैं अब सूरते हिलाल।
गुल्शन न जी को भाता है अपने न कोई निहाल। उस सर्वक़द का आठ पहर रहता है ख़याल
ऐ अब्र नौबहार न दे दुख बरस बरस। मैं आप मर रही हूं पिया बिन तरस तरस।
जब से दिखा गया रुख़े रोशन की वह झलक। नरगिस की तरह अपनी खुली रहती है पलक
पहुंचाया मेरा हाल जो तूने यहाँ तलक। ये कब का बदला आज लिया तूने ऐ फलक
ऐ अब्र नौबहार न दे दुख बरस बरस। मैं आप मर रही हूं पिया बिन तरस तरस
खाने की कुछ हवस है न सोने की कुछ हवस। बाक़ी अगर है दिल में तो रोने की कुछ हवस
है उस के ग़म में जान के खोने की कुछ हवस। इस चाह में है अपने डुबोने की कुछ हवस
ऐ अब्र नौबहार न दे दुख बरस बरस। मैं आप मर रही हूं पिया बिन तरस तरस

तरज़ीयबन्द मुतज़म्मिन जवाबात अज़ वज़ीरज़ादी.

ये मौसमे बहार ये अल्लाह का करम्। नहरें भरी हैं सूरते उश्शाक़ चश्म नम्
याक़ूत का है हाथ में लाले के जाम जम्। किस वक़्त में ये सर पे तेरा टूटा कोह ग़म्
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुझ पै क्या सितम् किन रोज़ों में जुदा किया तुझ से तेरा सनम्
बिजली तड़पती हैं कहीं बादल का जोश है। और चारसू से बादे सबा का ख़रोश है
हर एक यार से तू बहम नाओ नोश है। और सब्ज़ स चमन कहीं नुजहत फ़रोश है
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुझ पे क्या सितम् किन रोज़ों में जुदा किया तुझ से तेरा सनम्
कोयल चहक रही है पपीहों का शोर है। आबे रवाँ का और किसी जानिब को ज़ोर है
दिल को जला रही कहीं आवाज़ मोर है। ज़ेवर से हर शजर भी जड़ा पोर पोर है
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुझ पै क्या सितम्। किन रोज़ों में जुदा किया तुझ से तेरा सनम्
और हिज्र से भला कोई पावेगा लुत्फ़ क्या। आँखों में हो तिलस्म का गुल्शन अगर खिला
दिल है कबाब हिज्र में उस यार के तेरा। जल्दी तेरे सनम् से ख़ुदा दे तुझे मिला
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुझ पै क्या सितम् किन रोज़ों में जुदा किया तुझ से तेरा सनम्
इस चर्ख़े कज अदा से ये हासिल हुआ तुझे। माशूक़ से जुदा किया ये कुछ दिया तुझे
चाहे अलम् में क़ैद है अब तो किया तुझे। दुनिया के लुत्फ़ो ऐशो मज़ा से रखा तुझे
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुझ पै क्या सितम्। किन रोज़ों में जुदा किया तुझ से तेरा सनम्

कलाम वज़ीरज़ादी.

मुस्निला तो कभी इन बातों में जिनहार न हो। नक़द जाँ देके व सौदे की ख़रीदार न हो

दिल की बेताबी से ये ख़ौफ़ मुझे आता है। अब कोई दिन में तू रुसवा सरेबाज़ार न हो
सैर गुलज़ार करो दिल को ज़रा बहलाओ। इस मुसीबत के तो वल्लाह सज़ावार न हो
सब्र कर बहरे ख़ुदा दिल को ज़रा दे तस्कीं। फिर कभी जोश में ये दीदये ख़ूँबार न हो
सदमे पर सदमे उठाती हो भला क्यों दिल्बर। जाने जाँ मुझसे किसी तौर से बेज़ार न हो
मैं तो हाज़िर हूं तेरे वास्ते ऐ राहते जाँ। जान तक आये अगर काम तो इन्कार न हो

कलाम शाहज़ादी.

इस बला में तो किया तू ने गिरफ़्तार मुझे। अब दिखाउसका ख़ुदा के लिये दीदार मुझे
हाल अपना नहीं कुछ खुलता है मुझको जानी। या इलाही ये हुआ कौन सा आज़ार मुझे
सैर गुलज़ार करूं देखूं मैं गुलशन की बहार। एक लहज़ा भी अगर ग़म से मिले बार मुझे
दिल के बहलाने की तदबीर भला क्या कीजे। फ़र्ते ग़म ने तो किया बस कि है लाचार मुझे
मिन्नतें करती हूं सर अपना क़दम पर धरके। सदक़े मैं तेरे मिला दे मेरा दिलदार मुझे
क़ता उम्मेद हुई अपने यगानों से अज़ीज़। दोस्त दुश्मन हुये सब करके ख़तावार मुझे
चश्म उम्मेद थी यारी मुझे जिन लोगों से। करके बरबाद वही करते हैं हुशियार मुझे

छन्द कहना वज़ीरज़ादी का शाहज़ादे से.

मुझ पर साबित हो गया तेरा मक्र व फ़रेब। आँख तेरी जिस पर पड़ी उसे हुआ आसेब
एक बात तुझसे कहती हूं गर हो ख़फ़ा नहीं। प्यारे तुम्हारे दिल में मुरौवत ज़रा नहीं।
दिल जिसका लीजे कीजे फिर उससे वफ़ा नहीं वल्लाह ख़ुदग़रज़ कि मैं हूं आशना नहीं
किसने तालीम किया ऐ सितम ईजाद तुझे। ख़ूब है मक्र ज़माने के अरे याद तुझे।
शाहज़ादी को जो जंगल में तू करता है शिकार। घेर के लाई क़ज़ा क्या है परीज़ाद तुझे
दिल जो हर एक का क़ाबू में तू कर लेता है। कौन सा सहर है ऐसा ये बता यार तुझे
खींच देता है शबी अपनी पराये दिल पर। गर कहूं तो है बजा मानी व बेहज़ाद तुझे
आ मेरे साथ अगर ज़ुल्फ़ का सौदाई है। चल के दिखलादूं अभी ख़ाने सहहाद तुझे
किस लिये अपनी तबीअत में तू होता है उदास। क़फ़स से हिज्र से कर दूंगी मैं आज़ाद तुझे
मान कहने को मेरे वर्ना तू पछितायेगा। ए समझ तेरी करेगी अरे बरबाद तुझे।

जवाब शाहज़ादे का वज़ीरज़ादी से.

भाता है मुझ को नहीं तेरा नया औरेब। बातें तुझको महलक़ा देती है नहीं ज़ेब
होता है इन बुतों पै मैं हरगिज़ फ़िदा नहीं। इन बेमुरौवतों को मुरौवत ज़रा नहीं।

हासिल है इनसे शुग़ल कभी जो रोज़ जफ़ा नहीं। पाबन्द इन्का होय कोई यादे ख़ुदा नहीं
वक़्त तू ने किया ऐसा जो इरशाद मुझे। सच बता कौन है तू ग़ैरते शमशाद मुझे
धमकिया किसको बताती है तू ऐ सब्ज़ परी। ख़ौफ़ इन बातों से कब आती है क्या याद मुझे
दाम में तायरे दिल्को मैं फँसा लेता हूं। रूबरू कहते हैं इस बात से सय्याद मुझे
शक्ल तसवीर तसव्वर में रहा करती हूं। किसी सूरत का जो है इश्क़ ख़ुदादाद मुझे
आपके साथ मैं चलता हूं मगर ख़ौफ़ ये है। फिर उठाना न पड़े और कोइ उफ़ताद मुझे
आरज़ू है यही मुद्दत से दिले वहिशी को। अपने हाथों से करे ज़बह वह जल्लाद मुझे
देखिये चल्के दिला कूचये जाना के बहार। भूले इस लुत्फ़ से ता गुलशने शद्दाद मुझे

दोहरा कहना वज़ीर ज़ादी का.

ले पियारी मौजूद हैं तेरा दिलदार। किया था जिस के वास्ते आप को तुमने ख़्वार

जवाब देना शाहज़ादी का.

तेरे बाइस से हुआ अपना सदा कार। तुझसे ज़ियादा कौन है अब मेरा ग़म ख़्वार।

दोहरा कहना शाहज़ादी का.

शाहज़ादे से.

प्यारे तेरे फ़िराक़ में अपना हुआ ये हाल। तुमको भी कुछ रहा भला जानी मेरा ख़याल

छन्द.

इतने दिनों जो तुम से सनम मैं जुदा रही। किस दर्दो ग़म में आह मैं अब मुबतिला रही
बुलबुल की तरह याद में तेरे सदा रही। ओ गुल तेरे तलाश में मैं जा बजा रही

जवाब देना शाहज़ादे का.

शाहज़ादी से.

गई जो तू मुँह फेरके दिखला अपने बाल। हुआ ये तेरा देखना जी का बस जंजाल

छन्द.

तेरे ग़मे फ़िराक़ में यह सानिहा रहा। हर लहज़ा हर घड़ी मैं असीरे बला रहा
दिन रात मौत ही का सामना रहा। जाने असीर बार ख़ुदा है बचा रहा।

शाहज़ादी.

हाय जिस रोज़ से शक्ल अपनी दिखाई तुमने, एक आतश मेरे सीने में लगाई तुमने
मैं इसी फ़िक्र में दिन रात रहा करती हूं। ऐसे बेरहम से क्यों आँख लड़ाई तुमने

शनासाँ अब तो तसव्वर में जला करती हूं। रफ़्ता रफ़्ता मेरी हालत ये बनाई तुमने
रोज़ो शब ज़िक्र तुम्हारा ही रहा करता है। इस क़दर की है मेरे दिल में रसाई तुमने
मैं तो वाक़िफ़ न थी वल्लाह अब इन बातों से। मेरे नाहक़ ये बला पीछे लगाई तुम ने
अपने दिन अच्छे कुछ इन रोज़ों नज़र आती है, कि जो ख़ुद हमसे ये आकर के सफ़ाई तुमने

शाहज़ादह.

चाल उल्फ़त कि न समझे थे जताई तुमने। प्यार करने की सज़ा ख़ूब बताई तुमने
जिस ने देखा वह हुआ दिल से तुम्हारा आशिक़ किस्से ये आनो अदा जान उड़ाई तुमने
आरज़ू दिल की रही दिल ही में ऐ बायनसीब। आतिशे शौक़ ने एक रोज़ बुझाई तुम ने
हम करें आपकी ग़फ़लत का ये क़िस्से शिकवः। ख़ाक में मेरी जवानी जो मिलाई तुम ने।
देखकर तर्ज़े सोसन को भुलाया दिल से। थी मिसी अपने लबों पर जो जमाई तुमने
दूर हो जावेगी सब वस्ल में ऐ रश्क़ परी। हाथ से मेरे जो इज़ा है उठाई तुमने

फागगाना शहज़ादी का.

खेलूं शहज़ादे से आज मैं फाग, यहै रे हमारे भाग।
अबीर और गुलाल मलो तुम गाओ रंगीन राग देदेऊं ये सुहाग
खेलूं शहज़ादे से आज मैं फाग, सिगरी वैस खेलकर खोई गिन गँवायो राग.
बीती रैन भोर तक जाग, कैसी सोई उठ जाग।
खेलूं शहज़ादे से आज मैं फाग, अब की फाग सुन ऐसी सखीरी.
हर से लागी है लाग, कहो मदारी लाल से जा कर
भला भयो यह भाग, खेलूं शहज़ादे से आज मैं फाग।

दोहरा कहना शहज़ादी का शहज़ादे से.

दिखलाया अल्लाह ने रोज़ सईद। तेरे आने से मुझे आज हुई ईद

छन्द.

शादी का रोज़ आज ख़ुदा ने दिखा दिया। मेरे तुम्हारे हिज्र का परदह उठा दिया
रश्के ख़िज़ाँ ये परस्ये अहज़ाँ बना दिया। गुल्की तरह से ये दिले महज़ूं खिला दिया

जवाब देना शहज़ादी का शहज़ादे से दोहरा.

जानी फिर मिलना तेरा था एक अम्र बईद। मगर हुई अल्लाह की कुछ ऐसी ताईद

छन्द.

सदक़े ख़ुदा के फिर हमें तुम से मिला दिया। जिसकी न थी उमेद वह आँखों दिखा दिया
दिन रात की हँसी वही क़हक़हा दिखा दिया। और शरबते विसाल को वाहम पिला दिया

शाहज़ादी.

आज की रात चलो सेर मेरी जान करें। अपने कुलबये आहिज़ों को परिस्तान करें
दिल में आता है शबे माह में पी पी के शराब। हम ओ तुम आज की शब सैर गुलिस्तान करें
बाद मुद्दत के ख़ुदा ने ये किया रोज़ नसीब। गुहरे आरज़ु से घर कहीं सामान करें
बारहाँ हिज्र में तेरे ये हुआ दिल को ख़याल, हम किसी तौर से अपने तईं हल्कान करें
मन्नतें मानी हैं दरगाहों में चिल्ले बाँधे। कि कहीं आप मेरे घर को दुरख़्शान करें
ख़ाब में जब नज़र आवो तुम से रश्क क़मर। कब हम इस झूँठी मुहब्बत का भला ध्यान करें
नाम आलम में हो ऐ जान की परशार यही। गर करम अपना कहीं शाहे ख़ुरासान करें

शाहज़ादह.

दिल के पूरे मेरे सब आप जो अरमान करें। सो रहें आप मेरे साथ तो अहिसान करें
दिल में आता है कि बिछवाइये कोठे पे पलँग। चाँदनी रात वहाँ चल के शबिस्तान करें
हर घड़ी फ़र्त ख़ुशी यही आता है ख़याल। नक़्द जाँ अपना तेरे सिर पे से क़ुर्बान करें
अपनी आँखों से मुझे कुछ दिनों ये ख़ौफ़ रहा। फिर दुबारह कहीं बरपा नये तूफ़ान करें
शामारोशन कि मज़ारों पे इसी मन्नत पर। कभी भूले से मेरी याद मेरी जान करें।
झूँठे वादों ने तुम्हारे ये किया हाल अपना। क्योंन इस ग़म में वह अपने तईं हल्कान करें
नाम पर जिन के फ़िदा जान की परशाद हैं हम, क्योंन वह आके मदद मेरी हर एक आन करें

बसन्त गाना शाहज़ादी का.

मिली ऋतु बसन्त शहज़ादह आय, करो मन आनन्द सब गाय गाय.
कोऊ आन सुनावत मीठी तान, कोई बाँध रही है सुर समान.
कोऊ मस्त भये डफ़ को बजाय, कोउ रंग उड़ावत धाय धाय
मिली ऋतु बसन्त शहज़ादह आय.
मैं फाग खेलूं शहज़ादे साथ, फिर मोहिं मिले ना ऐसी घात
तुम कहो मदारीलाल कुछ और, और बसन्त ऋतु रही है छाय
मिली ऋतु बसन्त शहज़ादह आय.

ग़ज़ल गाना शाहज़ादी का सिन्धभैरवीं में.

महिफ़िल में ज़मुर्रद परी किस नाज़ से आके। लेजाती है शाहज़ादे को घर अपने उठा के
सोता था लबे बाम जो शाहज़ादये महरू। अलमस्त परी को वह दूशारे से जता है
बोसा कभी लेती कभी लग जाती गले से। बेख़ुद नशये शौक़ में तनहा उसे पाके
हर बार तअ़श्शुक़ से वह लेले के बलायें। कहती थी फ़िदा हूं मैं तेरे नाज़ो अदा के
हरचन्द हवस ने तो किया और इरादह। पर रह गई कुछ सोच के वह मारे हया के

सोना शाहज़ादी और शाहज़ादे का बाम पर और आना ज़मुर्रद परी का और ले जाना शाहज़ादे का बालाय बाम से बज़रिये सब्ज़ देव के वा छंद कहना देव का परी से.

ऐसा न हो कि ख़्वाब से ये सीम बर जगे। और शक्ल मेरी देख के दिल में ज़रा डरे
फिर तो मेरे हाल पै जौरो जफ़ा करे। आफ़त न कोई आके मेरे जान पर परे

दोहरा कहना ज़मुर्रद परी का सीमबर देव से.

अरे सीम वर देव अब यहां से इसे उठा। पलक की पलक में इसे घर मेरे पहुंचा

जवाब देना देव का परी से.

जाता हूं लेकर इसे मैं तो सोये हुआ। इक तू भी हमराह मेरे चल ये माहेलक़ा।

दोहरा कहना परी का शाहज़ादे से.

ख़्वाब से आंखें खोल सो करो इधर को निगाह। तकती हूं मैं देर से खड़ी हूं तुम्हारी राह

जवाब देना शाहज़ादे का परी से.

नाहक़ मेरी नींद को खोती है तू आह। उठता हूं कुछ देर में सो लूं ख़ातिरख़्वाह

छन्द कहना परी का शाहज़ादे से.

भाता है कुछ बहुत तुम्हें आलम जो ख़्वाब का। क्या है नशा पियामे रे प्यारे शराब का
परदा उठाओ रुख़ से तुम अपने नक़ाब का। जल्वह दिखाओ मेरे तईं महिताब का

जवाब देना शाहज़ादे का परी से.

ग़लबा कमाल है मुझे इस वक़्त ख़्वाब का। है शाक मुझको देना अब इस दम जवाब का।

ये मुक्तज़ाये सिन्न है बवाइस शराब का। तेरा सबब ये क्या है बता इज़्तराब का।

कलाम ज़मुर्रद परी का शाहज़ादे से.

क्या सो रहे हो नींद में उठो तो ख़्वाब से। दिखलाओ अपना ये रुख़े रोशन नक़ाब से।
अँगड़ाई ले रहे हो जो इस पेच ताब से। दिल में अभी उमंग है प्यारे शराब से।
हैं दूर आज सारे मेरे दिल के बलबले। लग जाव तुम मेरे गले मेरे प्यारे शिताब से
उल्फ़त ने तेरी ऐसा किया दिल में मेरे घर। तक्सीर ये हुई इसी ख़ाना ख़राब से।
ये भी तो घर तुम्हारा है प्यारे न हो मलूल। बहिलाओ अपना जी यहीं चंगो रुबाब से
फ़ुरक़त हुई तुम्हें तेरे माशूक़ से वले। पर अब लगाओ दिल इसी हसरत मआब से
सदक़े से पनज तन के रहें ख़ुश मदारीलाल। ये हैं दुआ जनाब रिसालत मआब से।

जवाब देना शाहज़ादे का परी से.

क्यों बार बार छेड़ती है मुझको ख़्वाब से। बाज़ आया इस तेरे मैं सवालो जवाब से
सीधी भी बात तेरी नहीं कम इताब से। ले आके मार डाल जो छूटूं अज़ाब से
तू कौन है ये किस का है घर लाया मुझको कौन। बतला दे इसको मेरे तईं तू शिताब से
बेढब हुआ हूं आके तेरे दाम में असीर। ख़ालक़ बचा दे अब मुझे दस्त उताब से
क्योंकर बुझाऊं आतिशे दिल को मैं नासिहा, प्यासे को भी हुई कहीं तस्कीं शराब से
इस बेकसी में हैं न कोई यारो आशना। कर सक्ता बात भी तो नहीं मैं हिजाब से
दुनियाँ में दोस्त शाद रहें ऐ मदारीलाल। तालिब हूं रोज़ो शब मैं यही बूतराब से

दोहरा कहना परी का शाहज़ादे से.

तेरी सूरत शक्ल पर मैं सदक़े क़ुर्बान्। दुनियाँ में ऐसे भी पैदा हुए जवान्

जवाब देना शाहज़ादे का परी से.

मेरे कोई जीवे कोई खोवे कोई जान। इस से हम को क्या ग़रज़ बतला ऐ नादान

छन्द कहना ज़मुर्रद परी का शाहज़ादे से.

जानी है जान तुम पै इधर रुख़ ज़रा करो। मेरी तरफ़ से दिल में सनम् अपनी जा करो
हाज़िर हूं सब तरह चाहो जौरो ज़फ़ा करो। लेकिन न अपने पास से प्यारे जुदा करो।

जवाब छन्द में देना शाहज़ादे का परी से.

कहिता हूं कुछ मैं तुम से नहीं जी दिया करो। मरती हो तुम जो हम पै तो प्यारे मरा करो

बरबाद अपनी उम्र को योंही किया करो। और घर में बैठ दस्त तअस्सुफ़ मला करो।

तस्जीयबन्द पढ़ना परी का शाहज़ादे से.

तुमसे रग़ावत हमें और तुमको ये नफ़रत दी है। वाह अल्लाह ने क्या तुमको तबीअत दी है।
हम ने माना कि तुम्हें हुस्न की दौलत दी है। पर हमें भी तो तेरे इश्क़ की सरबत दी है
ऐ सनम् जिसने तुझे चाँद सी सूरत दी है। उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है
हम तो यों जान दें तुम पर तुम्हें कुछ न खयाल, तुम रहो उस्के तसव्वर में हमेशा खुशहाल
क्योंकर इस बात का हमको न भला होवे मलाल। बस इसी ग़म में तो मैं हो गई हूं मिस्ले हिलाल
ऐ सनम् जिसने तुझे चाँद सी सूरत दी है। उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है।
औज पर था तेरा मकसूम जो मुझसा दिलदार। सैकरों तरह के हर रोज़ उठाये आज़ार।
देखये मेरी खुशामद करो और अपना शुमार। इस मुहब्बत का नतीज़ा है यही आख़िरकार
ऐ सनम् जिस ने तुझे चाँदसी सूरत दी है। उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है
मैं ने अब पीछे तेरे अपनी जवानी खोई। पर गले से तेरे लगकर न किसी दिन सोई
अपनी तक़दीर की हाथों से सदा मैं रोई। हाय क्या इसने मेरी जान पै आफ़त बोई
ऐ सनम् जिस ने तुझे चाँद सी सूरत दी है। उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है
आज ख़ातिर से तो ऐ यूसुफ़ सानी मेरी। बैठ आगोश में आकर कहीं जानी मेरी।
तुम ने इस वक्त जो ये बात न मानी मेरी। इस सख़ुन पर है बस अब ख़त्म कहानी मेरी
ऐ सनम् जिसने तुझे चाँद सी सूरत दी है। उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है
तुम पै अपनी ये तबीअत जो न आई होती। फिर हवा काहे को हम को ये समाई होती
नाज़बरदारी न यों तेरी उठाई होती। फिर कभी आपने क्यों आँख दिखाई होती
ऐ सनम् जिसने तुझे चाँद सी सूरत दी है। उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है
जाने जाँ तुझ को भला क्या ये समाई ऐसी। आपने बरली जो इस वक्त रुखाई ऐसी
कौन सी बात तुम्हें अपनी न भाई ऐसी। दफ़ातन बैठ गई दिल में बुराई ऐसी।
ऐ सनम् जिस ने तुझे चाँद सी सूरत दी है। उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है

जवाब देना शाहज़ादे का परी से.

गो मेरी शक्ल ने तुझ को मेरी चाहत दी है। पर मेरे दिल ने मुझे तुझसे अदावत दी है
किससे जाकहिये फ़लक ने जो ये आफ़त दी है, मर्ज़ ग़म के ये बढ़ाने की अलामत दी है।

नहीं अल्लाह ने तुझ को मेरी उल्फत दी है। मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है
बारहा तुझ से कहा मैं ने न रख तू ये ख़याल। साथ मेरा तेरा हरगिज़ नहीं होने का विसाल
बन गई दुश्मने जाँ मेरी ग़रज़ तू फिलहाल। ज़ियादह चाहत तेरे जी की हुई मेरी जंजाल।
नहीं अल्लाह ने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है। मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है
मुझ से नाहक़ को किया करती है दम्दम् तकरार। जानती है कि है इस बात से मुझ को इन्कार
मह्हो ख़ुरके तो मुक़ाबिल हो मुझे है क्या कार। पर मेरी आँखों में ओ गुल तू नज़र आती है ख़ार
नहीं अल्लाह ने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है। मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है।
चैन आराम मेरा भी तो है तू ने खोया। अपने दिलवर की न छाती से लपट कर सोया
हर घड़ी क़ैद में तेरे मैं हमेशा रोया। घर तेरा ख़्वानये ज़ंज़ीर मुझे है गोया।
नहीं अल्लाह ने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है। मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है
झूँठी लाज़िम नहीं क़समें तुझे खाने मेरी। अरी मुश्किल है हर एक बात पर उठानी मेरी
तू जो है बन के लगी पीछे दिवानी मेरी। बस तेरे हाथ से है जान ये जानी मेरी।
नहीं अल्लाह ने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है। मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है
दिल में उस गुल कि मुहब्बत न समाई होती। तो मेरे तेरे विला वजह सफ़ाई होती
रोज़ काहे को भला ऐसी लड़ाई होती। ये बला सर पै न फिर मैं ने उठाई होती
नहीं अल्लाह ने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है। मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है
थी न जो जौर उठाने की समाई ऐसी। तुम ने फिर क्यों थी तबीअत ये लगाई ऐसी
अपने करने की सज़ा आप ये पाई ऐसी। न करोगे किसी दिल्वर से बुराई ऐसी।
नहीं अल्लाह ने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है। मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है

दोहरा कहना परी का शहज़ादे से.

जाती है हरदम यहाँ अपनी तुझ पर जान। तुझ को मुतलक़ है नहीं जानी मेरा ध्यान

छन्द.

देखो तो आँख उठा के कि क्या ख़ुश अदा हूं मैं। मुझ सा नहीं जहाँ में वह मह्लक़ा हूं मैं
ऐ रे सनम से तू ही बता बदनुमा हूं मैं। कम कुछ अदा ओ नाज़ो करशमा से क्या हूं मैं।

जवाब देना शहज़ादे का ज़मुर्रद परी को

दोहरा

मैं ने कितने घर किये दुनिया में वीरान। अरी मैं आफ़त क़हर हूं नारा मुझे न जान

छन्द.

उस दिलरुबा का आशिक़े सैदाहुआहूं मैं। सदके हूं तुझसे उसपे कि जिससे फँसाहूं मैं
ऐसे को छोड़ कर के तेरा आशना हूं मैं। नादान अपने हाथ से आपी बना हूं मैं

ग़ज़ल

रोबरू उस के तू करता है मेरा प्यार नहीं। तेरे माशूक़ से क्या हूं मैं तरहदार नहीं।
गुलशने दहर में वह ग़ैरते शमशाद हूं मैं। कौन क़ुमरी की तरह मेरा गिरफ़्तार नहीं
आरज़ू रखते हैं परियों की सदा जिन्व बशर। आशिक़े ज़ार तू मेरा मगर ऐसा र नहीं
कहाँ ख़ुरशैद दरख़्शाँ कहाँ शमए फ़ानूश। रोबरू मेहर के मशाल कभी दरकार नहीं
दी है अल्लाह ने जो आनों अदा परियों को। हरगिज़ इन बातों से इन्साँ को सरोकार नहीं
हैफ़ की जा है कि मुझ सा तुझे दिलदार मिला। पर मेरी क़दर तुझे रबुते ऐयार नहीं।
खा के कहती हूं इस वक़्त सुलेमाँ की क़सम। जुज़ तेरे ग़ैर की उल्फ़त मुझे जिन्हार नहीं

ग़ज़ल शाहज़ादह.

ख़ूबिये हुस्न का तेरी मैं तलबगार नहीं। ये तेरा तुझको मुबारक मुझे दरकार नहीं
तू भला क्या है जो उस गुल के मुक़ाबिल होवे। चाँद तो उसके क़ने पाके सज़ावार नहीं
लौंडियाँ बाँदियाँ उसकी तो हैं मुझसे बेहतर। तू ग़लत कहती है मुझ सा कोई ज़िन्हार नहीं
सामने चाँद के होता नहीं हीरे को फ़रोग़। लाल से ज़्यादा गराँ कुछ दुरे शहवार नहीं
सैकरों परियाँ तसद्दुक़ हैं मेरी गुलरूप पर। इस तरह का कोई दुनियाँ में तो दिलदार नहीं
मैं ने माना कि तू है हुस्न में यकताय जहाँ। खोटे दामों से तेरा हूं मैं ख़रीदार नहीं।
इस्से क्या काम तू कर लाख से उल्फ़त पैदा। रश्क़ इन बातों का प्यारी मुझे ज़िन्हार नहीं

शाहज़ादी का महिफ़िल में आ कर गाना.

सखी यही सोच मोरी आह जरावत छाती। बैरी है हमार रहत दिन राती
बिन शहज़ादा नहीं नींद बिसारी। मोहि गिनत नखत अब रैन जात है सारी
अजी तलफ़ तलफ़ रहूं सेज़ में दे मारी। घड़ी उठत पलँग पर घड़ी हूं ज़मी पै जाती
अजी अब भला कैसे धीर धरै मन मोरा। नहीं मिले चन्द से कोय जियाउ चकोरा
अजी मदारीलाल दो से दे औरा।
नहीं मिटती मिटाये सुख से करम की पाती। सखी यही सोच मोरी आह जरावत छाती

दोहरा कहना शहज़ादी का वज़ीर ज़ादी से.

देखो लोगो ले गया कोई मुझ को लूट। आह मेरी तक़दीर अब गई सरासर फूट

छन्द.

इस चोर का पता कहीं जाकर लगाऊं मैं। क्या क्या करूं न हाल अगर उस्को पाऊं मैं
इस चोरी का मज़ा अभी उस्को दिखाऊं मैं। शहज़ादह अपना छीन के उससे ले आऊं मैं

जवाब देना वज़ीर ज़ादी का शहज़ादी को.

प्यारी तेरा हाल सुन गये होश सब छूट। आता है दिल में यही लीजे छाती कूट।

छन्द.

आता नहीं है अक़्ल में किस तरफ़ जाऊं मैं। उस बेख़बर का जाके ठिकाना लगाऊं मैं
क्या क्या न उस के पीछे बलायें लगाऊं मैं। जैसा रुलाया उसने भी उस को रुलाऊं मैं।

ग़ज़ल शहज़ादी.

क्या क्या दिखाये चर्ख़ सितमगार देखिये। जो आगे आये बस उसे लाचार देखिये।
गुलचीं को चाहिये नहीं बुलबुल पै ये सितम्। बरबाद सारा कर दिया गुलज़ार देखिये
कैसा था चोर ले गया शहज़ादे को उड़ा। हरगिज़ छुआ न ये ज़रो दीनार देखिये
आई न रास्त मुझ को कभी ये शबे विसाल। खोया न आख़िरश को मेरा यार देखिये
मिटती नहीं कभी अरी ये होने वाली बात। नाहक़ जो मुझ से करती है तकरार देखिये
दम भर मिला हमें न मज़ा इस ज़माने का। यों ही चला ये हुस्न तरहदार देखिये।
दिल में ये आरज़ू है कि उस गुल बदन के साथ। कुछ लुत्फ़ पी के बादये गुलनार देखिये

ग़ज़ल वज़ीर ज़ादी.

तेरी बग़ल में जब न तेरा यार देखिये। क्योंकर न दिल पै सैकड़ों आज़ार देखिये
तक़दीर से मिला मुझे फ़स्ले बहार में। गुल के सबज़ नसीब हुआ ख़ार देखिये
वारी ये चोर है नहीं स सीने ज़ोर है। तेरी बग़ल से गुम हो तेरा यार देखिये।
मैं ने कहा था वस्ल में कोठे पै वन सो। आख़िर न पाया सदमये दिलदार देखिये
इस सानिहे पै आता है क्या क्या नहीं ख़याल। बेजा है जाने जाँ मेरी गुफ़्तार देखिये
है है न वस्ल भी तुझे जानी हुआ नसीब। और हो गई द हिज्र में बीमार देखिये।

दिल में रो थी हवस कि पिलाकर मये विसाल। शहज़ादे शहज़ादी को सरशार देखिये

शाहज़ादी का गाना.

बिन पिया रात लगे मोहिं भारी। सखी वर्षा ऋतु अधिकारी।
बिन पिया रात लगे मोहिं भारी.
दामिनि दमक दमक दमकारी, कोयल कूँकत कारी ।।
पापी पपीहा मेरो प्राण लेत है, मैं विरहा की मारी।
बिन पिया रात लगे मोहिं भारी,
मेघवा गरज गरज घहराई, बूँद परत अधिकारी ।।
नैनन नींद गई है उन बिन, तल्फ़त मैं हई मारी।
निशि दिन जरत बरत विरहा में, उठत नहीं दुख भारी।
कहो मदारी लाल पिया से, अब तो लेवो सुध हमारी।

दोहरा शाहज़ादी.

हैं हे दिल को ले गया वह तो मेरे निकाल। तड़पा की मैं यों पड़ी रोती रही निढाल

जवाब वज़ीर ज़ादी.

आया है ये अफ़्सोस है इस दम मुझे कमाल। दिल्बर का किस वक़्त में तुझ को दिया मलाल

ग़ज़ल कहना शाहज़ादी का वज़ीर ज़ादी से.

एक एक शेर में.

बैठी हूं जिस पे आह में अपना लगाये दिल। वह देखने न आये मेरे ज़ख्म हाय दिल।
जब से वह ले गया मेरे दिल को निकालकर छाती पकड़ के रह गई मैं कहके हाल दिल
आजाय एक दम के लिये गर वह महेलक़ा। कुछ दर्द की कहानी तो अपनी सुनाये दिल
किस तरह उसकी याद न आठों पहर रहे। जिसके सबब से यारो मज़ा कुछ उठाये दिल
सदमे शबे फ़िराक़ के जिसने उठाये हैं। इन बे मुरौवतों से वह अपना फँसाये दिल
दामे बला है तायरे दिल के फ़ँसाने को। गेसुये यार हैं नहीं ये हैं बलाये दिल।
क्या क्या दिखाये देखिये आगे मदारी लाल। क़ाबू से होगया है ये अब तो पराये दिल।

जवाब देना वज़ीर ज़ादी का शाहज़ादी को

एक एक शेर में.

बारी मैं कोई दम तो भला चैन पाये दिल। इस ग़म में कोई और न सदमा उठाये दिल

गर आहो नाले का हो तेरे दिल पै कुछ असर। दामन पकड़ के उसका अभी खींच लाये दिल
मैं तुझसे कहती थी न दे दिल को हाथ से। देखा न आख़िरश को ये तूने बफ़ाये दिल
ये जाने जाँ है दोस्त वही इस ज़माने में। होवै जो अपने दिल से कोई आशनाये दिल
हो दर्द कुछ अगर सहे तू अपनी जान पर। दरदे ग़मे फ़िराक़ को क्यों कर उठाये दिल
जो कुछ हुआ है तेरे ये क़िस्मत का था लिखा। ज़ुल्फ़ों में फँस के सैकड़ों झिटके उठाये दिल
अब तो मदारीलाल यही क़ौल है मेरा। जिस को फ़ँसाये चर्ख़ वह अपने लगाये दिल

मलार गाना शहज़ादी का.

चहूँ ओर बदरिया छाई बड़े बड़े बूँदन से घिर आई
बिजुली चमकै मेघा बरसै जिया मोरा डरपाई।
अब तो मदारी लाल शहज़ादे बिन कुछ मोहिं न सुहाई

फाग गाना शहज़ादी का.

मोहिं उन बिन कल न पड़े.
कहा करूं कुछ बन नहीं आवे, मन नहिं धीर धरे
प्राण हमारे बस गये उन में, चित से नहिं उतरे।
मोहिं उन बिन कल न पड़े.
ढूँढ़ फिरी मैं सगरे नगर में, नयनन नीर भरे।
दास मदारी लाल पिया बिन जोबन जात टरे।
मोहिं उन बिन कल न पड़े.

गाना शहज़ादी का बंगला में.

मोरा जिया माने ना.
बिन पिया के लाख तरह समझाऊं, समझाऊं सो मोरा जिया माने ना
हम को छोड़ रहे सौतिन घर मन में है विष खाऊं।।
विष खाऊं सो मोरा जिया माने ना, कहो मदारी लाल से जा कर।
टुक शाहज़ादे को पाऊं, सो मोरा जिया माने ना।।

ठुमरी गाना शहज़ादी का शहज़ादे के फ़िराक़ में.

ढले जात जोबनवाँ रे दिन दिन.

उनहीं पर निशि दिन ध्यान लगाये। श्यामसुंदर पर जियरा गवाँये।
दिन है रैन मोहिं तल्फ़त बीती। रात गई तारा गिन गिन।
ढले जात जोबनवाँ रे दिन दिन।
जो चाहैं तरवर की छैयां। गौना लेन आये नहीं सैयाँ।
यही शोच मोहिं रहत पल पल। बीती जात बैस छिन छिन।
रूप स्वरूप के स्वाँग उतारे। बिना बताये गुरु करि डारे।
मान नहीं काहू के राखे। गिरप गये चाहे जिन जिन।
ढले जात जोबनवाँ रे दिन दिन.

गाना शहज़ादी का जुदाई की हालत में.

आज मोरा जियरा नहिं माने रे। ऋतु पावस में बिछुड़े शहज़ादे
आज मोरा जियरा नहिं माने रे.
चहूं ओर से उमड़ घुमड़ आये। काले काले बदरा अधिक डराये।
सूनी सेज अँधेरी रतियाँ। हमरी बिपा को जाने रे।।
आज मोरा जियरा नहिं मानेरे.
ज्यों ज्यों बूँद परत अधिकारी। त्यों त्यों हिरदे लगत कटारी।
बिना मदारीलाल पिया के सुख चैन भुलाये, आज मोरा जिया नहिं मानेरे।

रागिनी पर्व में शहज़ादी का गाना.

मन धीर धरत हूं दिन गिन गिन। कृपा निधान देउ दरशन
इत नहिं जात प्राण हमरे तुम बिन। मन धीर धरत हूं दिन गिन गिन
काहू की मैं एक न मानूं। लाख कहे कोउ गिन गिन।
बिना पिया सुन ऐसी सखी री। कल न पड़त मोहिं घड़ी पल छिन
मन धीर धरत हूं दिन गिन गिन। कहा करूं विष खाय मरूं।
मिल जाय बसो सौतिन गिन गिन। कहो मदारी लाल पिया से
बीती बैस शहज़ादे बिन। मन धीर धरत हूं दिन गिन गिन

तरजीयबन्द पढ़ना शहज़ादी का वज़ीरज़ादी की तरफ़ मुतवज्जेह होकर.

आलम पर अपना रंग ये छाया बसन्त ने। जोड़ा बसन्ती सब को पिन्हाया बसन्त ने

जीवन नया हरएक का बनाया बसन्त ने। दिल में उमंग का शोर मचाया बसन्त ने
सब गुल्शने जहाँ को खिलाया बसन्त ने। लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने
हैं जो कि अपने यार से इन रोज़ो कामयाब। पीते हैं और साया वह अंगूर की शराब
ऐशो निशात में वह बसर करते हैं शबाब। दुनिया के लुत्फ़ आप उठाते हैं बे हिसाब
सब गुल्शने जहाँ को खिलाया बसन्त ने। लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने
मेरी बग़ल में आज जो होता वह खुश खिराम। मैं भी मिटाती आज के दिन हसरते तमाम
बोसो कनार रही में बसर कर के सुबहो शाम। पीती विसाल में मये इशरत का भर के जाम
सब गुल्शने जहाँ को खिलाया बसन्त ने। लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने।
जिस सिम्त आँख उठा के नज़र कीजिये ज़रा। दाउदी गेंदे से है चमन का चमन भरा।
दिखला रहा है ख़ल्क को अपनी वह खुश अदा। फ़स्ले बहार का ये ज़हूरा है जा बजा।
सब गुल्शने जहाँ को खिलाया बसन्त ने। लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने
गुलदस्ता हाथों पर लिये हरजा पे गुल उज़ार। दिखलाते फिरते हैं और जोबन का वह उभार
सुनते हैं अपने हुस्न के हैं बस कि पुर खुमार। नाज़ो अदा से करते हैं आशिक़ को बेक़रार
सब गुल्शने जहाँ को खिलाया बसन्त ने। लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने।
आता है अपने जी में यही ऐ मदारीलाल। सब छोड़ छाड़ कीजिये अब योग का ख़याल
मिल जाये ऐसे वेष में शायद वह नौ निहाल। वर्ना अब इस तलाश में झगड़ा है इन फ़िसाल
सब गुल्शने जहाँ को खिलाया बसन्त ने। लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शहज़ादी को तरज़ीयबन्द में.

बाग़े जहाँ में रंग मचाया बसन्त ने। खिल्क़त को ज़ाफ़रानी बनाया बसन्त ने
जोशे जवानी दिल में उठाया बसन्त ने। पज़मुर्दह खातिरों को खिलाया बसन्त ने
है है बड़ा ग़ज़ब ये दिखाया बसन्त ने। तुझ से तेरे सनम् को छुड़ाया बसन्त ने
अफ्सोस इन दिनों में तो हिज़राँ के ग़म सहे। और मोसमे निशात में जी मार कर रहे
वह हँसना बोलना है न अब हैं वह चहचहे। और अश्क़ फूट फूट के आँखों से हैं बहे
है है बड़ा ग़ज़ब ये दिखाया बसन्त ने। तुझ से तेरा सनम् को छुड़ाया बसन्त ने
जो हिज्र में बहाते हैं आँखों से खूने नाब। उनको ये कब खुश आती है कैफ़ियते शराब
गुल्शन को देख देख के होता है दिल कबाब। लाले की तरह दाग़ वह खाते हैं बे हिसाब

है है बड़ा ग़ज़ब ये दिखाया वसन्त ने। तुझ से तेरे सनम् को छुड़ाया बसन्त ने
ख़ुशबुओं से गुलों के मुअत्तर हुए मशाम। बादेबहार का येजहाँ पर है फ़ैज़ आम
हर शख़्स को ख़ुशी है हरइक को है धूमधाम, ख़िल्कत को चारसूसे गुलों परहै इज़दहाम
है है बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया वसन्त ने। तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया वसन्त ने
सोसन् का औरलाले का तख़्ता जोहै खिला। दिखलारहा है हुस्न का आलमनयानया
क्यातुझसेमैं कहूं कि जोइस वक्त हैसमा। लेकिन् बग़ैर यार ये है सारा बदनुमा
है है बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने। तुझ से तेरे सनम् को छुड़ाया वसन्तने
आते हैं देखने को तेरे हुस्न की बहार। करती जो तू उमंग से अपना नया सिंगार
होता लिबास तेरा वसन्ती मसालेदार। नरगिस चुराती आँख तुझे देख बारबार
है है बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया वसन्त ने। तुझ से तेरे सनम् को छुड़ाया बसन्त ने
आयाए कैसा कैसा तुझे अबकी माहोसाल, दिल्की लगी हुई का है मिटनाबहुतमुहाल
जीमें समाया आहजो अबजोग काख़्याल। जो कुछ कहीं वह सबहैबजा ऐ मदारीलाल
है है बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया वसन्त ने। तुझ से तेरे सनम् को छुड़ाया वसन्त ने

ख़म्माच में गाना शहज़ादी का आलम जुदाई में

बिन पिया कैसे कल पाये जिया मोरा.
लाज की मारी बिरह की बिना कन्त रहा नहिं जाय जिया मोरा
पिया बिन कैसे कल पाये.
मैं जल बिन तलफ़त जैसे विकल मीन रह जाय जिया मोरा।
दास मदारी बिन शहज़ादह घड़ी पल छिन में जाय जियामोरा

छन्द शहज़ादी.

उल्फ़त अबमा बापकी आजके दिनसे छोड़। चलके सहिरों की तरफ़ घरसे मुँहको मोड़

जवाब वज़ीरजादी.

ख़ाक बदन परसब मलो छोड़ो ये संयोग। रोयें ना इस हाल पर अपने पराये लोग

छन्द कहना शहज़ादी का.

मिला अगर इस भेष में मेरा वह दिल्दार। नहीं होगी इस अम्र पर अपनी जाननिसार

जब अपना दोस्त पास से अपने जुदा रहे। फ़िर ज़िन्दगी का लुत्फ़ भला कहिये क्या रहे
बन कर फ़क़ीर खोज में उस की सदा रहे। इस नाम पर फ़क़त चले धूनी रमा रहे

कलाम शहज़ादी का.

जोगिन का भेष आज मैं अपना बनाती हूं। घर बार सास छोड़ के धूनी रमाती हूं।
कपड़े रँगा के गेरुये तन पर जमा के ख़ाक। मिट्टी में अपनी ऐश को देखो मिलाती हूं
जी खोल कर के ख़ूब की दुनियाँ में सलतनत। कुछ रोज़ों अब फ़क़ीरी का भी हज उठाती हूं
हैहै अरे नसीब ये क्या तूने अब किया। शाहज़ादी से मैं शहर में जोगिन कहाती हूं।
नज़्ज़ारह मेरा चश्म फ़लक को जो था मुहाल। अब दर बदर ही अपने तईं मैं फिराती हूं
छिपता नहीं छिपाये से आलम ये हुस्न का। सौ सौ तरह से अपने तईं मैं छिपाती हूं
जोगिन का भेष कर के मैं आई मदारीलाल। तक़दीर अपनी आज के दिन आज़माती हूं

जवाब वज़ीरज़ादी का.

तेरे लिये मैं अपने तईं अब मिटाती हूं। सारा सिंगार उतार के जोगिन बनाती हूं
तन पर भभूत मल के परेशाँ कर अपना हाल। उस बुत के ज्ञानो ध्यान में आसन जमाती हूं
दुनियाँ का ऐश छोड़ सजा जोग का लिबास। रो रो के तेरे हाल पे तन मन जलाती हूं।
एक दिन वह था जो थी यही पोशाक ज़रनिगार। और आज तन पे जोग का सामाँ चढ़ाती हूं
है दुश्मनों को भी मेरी अहवाल पर ये ग़म। रोने में जब मैं आह के नारे उठाती हूं।
होता है और बलन्द सिवा शोलये जमाल। ज्यूं ज्यूं मैं उस को ख़ाक के अंदर दबाती हूं
हमराह सीम तन को लिये मैं मदारीलाल। शहज़ादी और मैं ढूंढ़ने उस गुल को जाती हूं

गाना शहज़ादी का.

मैं तो बन कर जोगिन जाऊं शहज़ादे को ढूंढ़ ले आऊं, कानन मुंद्रे गले विच सेली अंग भभूत रमाऊं
अपने पिया के कारन सजनी बन २ ढूंढ़न जाऊं। ओढ़ बघम्बर सिर से अपने घर २ अलख जगाऊं
काहू से कछु काम नहीं है मैं तो उनके गुन गाऊं। मन मेरो रहि रहि तलफ़त है गेरुवा वस्त्र रँगाऊं
देश बिदेश में दास मदारी बैरागिन पिया की कहाऊं। शहज़ादे को जाके ढूंढ़ ले आऊं।

कलाम शहज़ादी का शिकायत आमेज़ गरदिश अफ़लाक़ से.

ऐ फ़लक कैसा ये दिन आह दिखाया हमको। शाही छुड़वा के जो अब जोगिन बनाया हमको
मिस्ले गुल चाक गरेबान है दामन पुरज़े। किसकी उलफ़त का ये सौदा है समाया हम को।

यातो दिलचस्प मकानों में रहा करते थे। अब दरख़्तों का भी मिलता नहीं साया हमको
शाक था ड्योढ़ी तक आना भी हमें जो इकबार। काटना मंज़िलों का अब रुखुश आया हमको
ख़ाक पासे लगे बन बन के बगूले उठने। अपनी गरदिश ने असर अब यह दिखाया हमको
किस तरह हो गाये तैये मेरे ख़ालिक मैदाँ। पाओं में इस लिये है ज़ौफ़ छाया हम को।
जिस जगह बैठ गये बैठ के उठना है मुहाल। नातवानी ने यहाँ तक है सताया हमको

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शाहज़ादी को.

हाय तक़दीर ये क्या तूने दिखाया हमको। बिस्तरे गुल से लबे ख़ाक बिठाया हमको
ख़ाक तन पर मली औ सेली गले में डाली। हाय इस हाल से सहिराँ में फिराया हम को।
फ़र्श गुल पर भी नज़ाकत से न आती थी नींद। करके गरियाँ वही काँटों पै सुलाया हमको
कभी भूले से न रक्खा जो था यौ खटपै क़दम्। दरबदर भेस में जोगिन के फिराया हमको
चैन ख़स ख़ाने में करते थे सो इस उल्फ़त में। रेत में जलती हुई लाके सुलाया हमको
शक्ल इन्सान की कोसों नहीं आती है नज़र। अभी वहिशत ने ये मैदान दिखाया हमको
चलके दो एक क़दम ख़ाक़ में गिर पड़ती हूं। अज़ रहे लुत्फ़ किसी ने जो उठाया हमको

ग़ज़ल गाना शाहज़ादी का भैरवीं में.

बन्के जोगिन् ढूँढ़ने शाहज़ादे को अपने चली देखूं अब आगे दिखाती क्या है दिल्की बेकली
फाड़कर सिंगार में फिर सेश का सारा लिबास। पहिने लेकर तन पै सब कपड़े रँगा कर सन्दली
लोगो बतलाओ मुझे उस गुल्के रहने का निशाँ किस तरफ़ जाऊं भला औ कौन सी ढूँढूं गली।
वह मदद क्योंकर करैं ता आके वक़्ते इमतिहाँ। है मदारीलाल भी तू एक ग़ुलामाने अली।

दोहरा शाहज़ादी.

प्यारी हूं मैं देर से मिला है अब तालाब। कहिये तो मैं ठहर के पीलूं थोड़ा आब

जवाब वज़ीरज़ादी.

सिद्दत से इस धूप की हूं मैं भी बेताब। इन्हीं दरख़्तों के तले कोई दम हूं सैराब।

दोहरा शहज़ादी का कहना वज़ीरज़ादी से.

देखो ऐ तुम सीमतन शहज़ादे का हाल। पानी में से ले गया कोई हाथ निकाल

ग़ज़ल कहना शाहज़ादी का·
वज़ीरज़ादी से·

आहों से ख़ाक उड़ाते हुए वेशतर चले। मिसले बगूला गर्द में आलहह पर चले
निकले थे एक कमन्द के हम तो तलाश में। गुम अपने शाहज़ादे को हम आपकर चले
सब्ज़े की तरह उगते ही पामाल हो गये। इस गुल्शने जहान से वे बहरावर चले
उस को भी अपने हाथ से खोया है ऐ नसीव। बनकर फ़क़ीर जिसके लिये छोड़ घर चले
जंगल में अपनी उम्र बसर योंही कीजिये। क्या जानें मुख लगा के जो बरसों में घर चले
उस गुल अदा से जाके यही कहियो ऐ सबा। बीमार बे वतन तेरी फ़ुरक़त में मर चले।
जाना है साथ साथ मुझे भी मदारीलाल। तक़दीर अपनी अब हमें लेकर किधर चले

जवाब देना वज़ीरज़ादी का
शाहज़ादी को

पत्थर एक और छाती पै हम आह धर चले। शीरीं को कोहकन के लिये ज़ाया कर चले
ऐ पीर चर्ख डाला ये क्या तूने तफ़रक़ह। शहज़ादा तो कहीं गया और हम किधर चले
बर आई अपनी दिल की कोई भी न आरज़ू। नाशादो ना मुराद फिरे दरबदर चले
रहरह के अपने दिल को यही आता है ख़याल। आये थे किस लिये यहाँ क्या काम कर चले
पहुँचे हमारे बाद कहीं ख़ाक हाँ तलक। बैठे हैं इस तलाश में बादे सहर चले।
कैसी लगी हवा मेरे नख़ले मुराद को। शाख़े गवज़्न की तरह हम बेसमर चले
जाकर के और भी कहीं देखें मदारीलाल। याँ से उठा के इसलिये दिल कूच कर चले

दोहरा कहना शाह जिन का
वज़ीरज़ादी से·

कौन हैं आप बताइये मुझे अपना नाम। जो कुछ हम से हो सके करें उसे अंजाम

जवाब देना वज़ीरज़ादी का
शाह जिन को·

कहते हैं सब सीमतन इस आसी का नाम। शहज़ादे के वास्ते फिरूं सुबह और शाम

तरजीयबन्द शाह जिन का कहना
वज़ीरज़ादी से·

किस पर आई हुई है यार तबीयत तेरी। फ़र्ते ग़म से जो ये अब पहुँची है नौबत तेरी

टुकड़े होता है जिगर देखके रक़्क़त तेरी। हाय देखी नहीं जाती है मुसीबत तेरी
किस्के ग़म में हुई से शख़्स ये हालत तेरी। रोना आता है मुझे देखके सूरत तेरी।
नख़्ल उम्मेद तेरा आह न फूला न फला। चल गया बाद खिज़ाँ का अभी आकर झोका
तू जो इस गुलशने हस्ती में न सरसब्ज़ रहा। क्या सबब इस्का है तू हमसे बता दे तो ज़रा
किस्के ग़म में हुई से शख़्स ये हालत तेरी। रोना आता है मुझे देखके सूरत तेरी।
किस तसव्वर में रहा करता है तू शामो सहर। सूरते शमअ जो पैदा है तेरे मुँहसे शरर
कुछ दिनों और रहा हाल तेरा योंही अगर। ख़ाक हो जायगा वल्लाह तू अब जल २ कर
किस्के ग़म में हुई से शख़्स ये हालत तेरी। रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी
गरदिशे चर्ख़ से मारा तू पड़ा फिरता है। तेग़ अब्रू का ये घायल है जो दम भरता है
आहो नाले जो शबो रोज़ किया करता है। सच बता बहरे ख़ुदा किस पै तू अब मरता है
किस्के ग़म में हुई से शख़्स ये हालत तेरी। रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी।
हज़्ज़ दुनिया भी न कुछ हाय उठाया तू ने। कुछ जवानी का मज़ा भी नहीं पाया तूने
किसी माशूक़ से क्या दिल है लगाया तूने। क़ैस की तरह जो हाल अपना बनाया तूने
किस्के ग़म में हुई से शख़्स ये हालत तेरी। रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी
दिल बहिलाता नहीं हर चन्द तू बहिलाता है। तायरे रंग कुदूरत से उड़ा जाता है
आज क्या है जो तुझे कुछ भी नहीं भाता है। गुल ख़िज़ाँ दीदा सा हर वक़्त तू कुम्हिलाता है
किस्के ग़म में हुई से शख़्स ये हालत तेरी। रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी
नालो आह से रहता है सरोकार तुझे। सच बता कौन सा अब हो गया आज़ार तुझे
ज़ीस्त से अपनी में अब पाता हूँ बेज़ार तुझे। सर पटकने के सिवा और नहीं कार तुझे
किस्के ग़म में हुई से शख़्स ये हालत तेरी। रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शाह जिन को.

सदमे पर सदमे उठाती है नहूसत मेरी। मुझसे बरगश्ता है इन रोज़ों जो क़िस्मत मेरी
है बिलाशक जो करी रंज से नौबत तेरी। छाती पटकती है जो देखे हैं यह हालत मेरी
पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी। जाँ बलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी
होगया ख़ुश्क गुलिस्ताँ ने जवानी मेरी। बन गई आह मेरी मुझको ख़िज़ाँ का झूका
हर बुने मूसे मेरे एक शर रहे पैदा। सूरते सरवे चराग़ाँ हुआ आलम अपना-

पूंछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी। जाँ बलब हूं कोई दम्भर में है रुख़सत मेरी
हरघड़ी चलता है ग़म की दह जिगर पर नश्तर, यार आजाता है जिस वक़्त वह रूए अनवर
सामना रंज का रहता है मुझे आठ पहर। ऐसे जीने से बस अब मौत है प्यारे बेहत्तर
पूंछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी। जाँ बलब हूं कोई दम्भर में है रुख़सत मेरी
कोई इतना भी तो अहसान नहीं करता है। उससे कहिदे कि वह ग़म में तेरे मरता है
ले ख़बर जल्द कहीं जाके वह दम्भरता है। हालते निज़ा में भी नाम तेरा भरता है।
पूंछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी। जाँ बलब हूं कोई दम्भर में है रुख़सत मेरी
सारा दुनियाँ का मज़ा दिल से उठाया मैंने। और जवानी को भी मिट्टी में मिलाया मैंने
लेकिन अब तक न किसी जा उसे पाया मैंने। वास्ते जिसके ये हाल अपना बनाया मैंने
पूंछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी। जाँ बलब हूं कोई दम्भर में है रुख़सत मेरी
इस तरह का जो मेरा हाल तू अब पाता है। है तअज्जुब कि तुझे रहम नहीं आता है
ग़म को मैं खाता हूं और ग़म भी मुझे खाता है। नहीं तदबीर कोई तू मुझे बतलाता है
पूंछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी। जाँ बलब हूं कोई दम्भर में है रुख़सत मेरी
रुख़ दिखा जब से गया वह बुते ऐयार मुझे। चैन आता किसी करवट नहीं जिन्हार मुझे
हर घड़ी आहो फुग़ाँ से है सरोकार मुझे। कोई नज़र आता नहीं अब मददगार मुझे
पूंछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी। जाँ बलब हूं कोई दम्भर में है रुख़सत मेरी

बारह मासा शहज़ादी का कहना
और
वज़ीरज़ादी का कहना

शहज़ादी.

लागे असाढ़ कीजिये अब दश्त में शिकार, शायद ख़ुदा मिलादे हमारा वह गुलउज़ार

वज़ीरज़ादी.

सावन में होरही है जो बरसात की बहार। भांदों में छाई काली घटायें हैं बे शुमार

शहज़ादी.

ऐ अब्र नौबहार न कर दिल को बेक़रार। बरसात में मिला न सनम आ गया कुँआर

वज़ीरज़ादी.

कातिक में आसमाँ ने किया दिल्को बेक़रार, चारों तरफ़ मैं ढूंढ़ फिरी अपना गुलउज़ार

शाहज़ादी.

अगहन दिखारहा है मुझे मेहकी बहार। और फूलने किया मुझे इस तौर बेक़रार।

वज़ीरज़ादी.

अफ़सोस माघमें जो किया जोग का सिंगार। आखिरख़ुदा जल्द तुझे दे विसालेयार

शाहज़ादी.

फागुन में चारों सिस्त्र जो सब खेलते हैं फाग। बजते हैं डफ़ और झाँझ गाते हैं ख़ूब राग

वज़ीरज़ादी.

साक़ी न दे शराब न कर दिल को बेक़रार। अच्छा नहीं है चैन तुम्हारे बिदून यार

शाहज़ादी.

बैशाख की जो गरमी में उठती हूं जागजाग। हरदम ख़याल आया यहाँ से हूं भागभाग

वज़ीरज़ादी.

अब कीजिये तलाश लगी तेरी जी से लाग। होगा महीने ज्येठ में हासिल तुझे सुहाग

शाहज़ादी.

जिनके पिया हैं पास हैं उन के बड़े ये भाग। ख़ालिक़ दिखाये कब मुझे देखूं मेरा सुहाग

वज़ीरज़ादी.

साक़ी पिला दे जल्द शराबे विसालयार। मत कर तू फ़िक्र में बस अब इस दिल को बेक़रार

हुक्म शाह जिन का देव से.

हाज़िर है कोई देव याँ जल्दी से आये। हों दोनों जिस जगह उन्हें उठा कर लाये

अर्ज़ देव का शाह जिनसे.

अब मैं तेरे हुक्म से जाता हूं उस जा। लाता हूं उन के तईं जाकर अभी उठा

कलाम शाह जिन का शाहज़ादे से वक़्त उस के आने के.

कौन परी और कौन देव लाया तुझे उठा। गुज़रा तुझ पर क्या सितम सच मुझको बतला

जवाब देना शाहज़ादे का शाह जिन से.

सोता था कोठे ऊपर साथ थी माहेलक़ा। परी ज़मुर्रद जाय कर लाई मुझे उठा।

शाह जिन का कहना छन्द शाहज़ादे से.

जो जी कुछ आ हो जोर तेरी जान पर अयाँ। अहवाल सारा मुझ से तू से प्यारे कर बयाँ।

होगी सज़ा बख़ूबी तू दिल में न कर गुमान। क्योंकर मुझे है रहम तेरे हाल पर अयाँ

गुज़रा तुम्हारी जान पर जो कुछ कि है सितम्। उसके ही सुनने से हुआ दिल को हमारे ग़म
तेरे ऊपर ये हाल मुसीबत थी क्या पड़ी। है देखने से जिसके तबीयत पर कोह ग़म्।
उस की सज़ा मैं देता हूं अब तेरे रूबरू। जिसने जुदा किया है ये तुझ से तेरा सनम्
तेरे ख्वज़ सितम् के मैं करता हूं उसको क़त्ल। जाती है लहज में वह फ़ना हो रहे ये अदम
मुरदार ने ख़लल किया तेरे विसाल में। माशूक़ तेरा तुझ से छुड़ाया किया सितम्
है कोई देव लावे गिरफ़्तार कर उसे। जिस ने किया है इस पे जो इस तौर का सितम्
भिजवा के देव जल्द बुलाओ मदारीलाल। होता है हाल जौर का उस के न कुछ रक़म्

छन्द शाहज़ादे का कहना शाह जिन से.

ग़फ़लत में ख़्वाब की मुझे लाई उठा। मेरे सनम् से इस से मुझे अब छुड़ा दिया।
रक्खा था एक क़ैद मकाँ में मुझे छिपा। क़िस्मत ने मेरी आप को अब है दिया बता
जो कुछ कि उसकी क़ैद में मुझ पर हुआ सितम्, अहवाल उस्का मुझ से न होता है कुछ रक़म्
सूरत से मेरी हाल मुसीबत का है अयाँ। दिल पर हमारी यार जो गुज़रा किया सितम्
ख़ालिक़ ने आपको है किया हाकिमे ज़माँ ख़िल्क़त नवाज़ो मुंसिफ़ो तो क़ीयजाह्नो जम्
इन्साफ़ कीजिये मेरी फ़र्याद का बग़ौर। क्योंकर कि आपको न मिला वस्ल में सनम्।
जो आप सा मिले मुझे सर्दारो दिल निवाज़। शायद कि जल्दी से मिले मुझ से मेरा सनम्
वह देव और परी थी छिपी इक मकान में। जिसने किया है मुझ पे जो इस तौर का सितम्
फ़रयाद किये दाद दिलाओ मदारी लाल। अज बस कि मेरे लाल पे अब कीजिये रहम्

सवाल राजा इन्द्र शाह जिन का देव से

हाज़िर है कोई अब लावे उसे बुला। फिर वह मेरे हुक्म से आग में दे जला
मुझ को हुई ये फ़िक्र जो कि उस ने है ख़ता। ऐ देव ला दे उस को कि दूं मैं उसे सज़ा
ये देख क्या निकाला है मुरदार ने चलन। बेचारे शाहज़ादे को लाई ये घर उठा
देखो दिखाता हूं मैं मज़ा उस को प्यार का। हमसे किया जो उसने है ये आशना छिपा
आशिक़ को उसे ग़ैर के ला कर किया असीर। खटका हमारा दिल में न उसने ज़रा किया।
आया न ख़ौफ़ उस को हमारे जलाल का। रक्खा चुरा के उसने पराया ए दिल रुबा
मालूम तुझ से हाल मेरा हो गया तमाम। करवा दूं अब मैं तेग़ से इस रस्म उसे फ़ना
नातिक़ बताओ हुक्म उसे ऐ मदारीलाल। की है गी नाबकार ने देखो तो क्या ख़ता

जवाब देव का राजा इन्द्र शाह जिनसे.

हाज़िर हूं जो हुक्म हो लाऊं उसे बजा। जा कर मैं उस को अभी लाऊं ख़ये हवा
जाता हूं मिस्ले आब ज्यों सरसरे हवा। लाता हूं उस को जिस का है ये ज़ौर औ जफ़ा
मैंने कहा था उससे न कर इस की तू पियार। ना जिन्स आदमी है न इस पर हो तू फ़िदा
समझाया इस को मैंने न दे दिल को हाथ से। हरगिज़ रहेगा इश्क़ न तेरा ये अब छिपा
बे ख़ौफ़ हो गई है ये पा कर के ख़ूबरू। आख़िर को अपने हक़ में ये इसने बुरा किया
मेरे कहे पै इस ने न मुतलक़ किया ख़याल। ले आई अपने घर में ये सोता उसे उठा।
हाज़िर मैं लाया इस को अभी रूबरू हुज़ूर। मालिक हुज़ूर हैंगे जो चाहो दो सज़ा
हाज़िर किया मैं लाके उसे लो मदारीलाल। इन्साफ़ जैसा हो वह अभी दीजिये सज़ा

दोहरा कहना राजा इन्द्र का परी से.

लाई इस को क्यों उठा सुन तो ऐ मुरदार। गई हमारे ख़ौफ़ को दिल से भूल इक बार

जवाब देना परी का राजा इन्द्र को.

तुम जो चाहो सो करो मालिक हो मुख़्तार। लेकिन हूं सौ जान से उस की आशिक़ ज़ार

सवाल राजा इन्द्र का.

हम से छिप छिप के तू करती है जो इक यार नया, ये चलन निकला है अब तेरा ऐ मुरदार नया
या तहे तेग़ करूं या तुझे गर्दन मारूं। या दिखाऊं तुझे मैं और कोई आज़ार नया
कहाँ इन्सां भला क़ौम परीज़ाद कहाँ। तूने किस का ये निकाला है ख़री प्यार नया।
प्यार करने का मज़ा तुझको मिलेगा उस वक़्त, होगा गर्दन पै ये जब ख़ंजरे ख़ूं ख़्वार नया।
क्या है आवारगी ये दिल में समाई तेरी। ढूँढ़ती फिरती है दिन रात जो दिल्दार नया।
हाथ उठा इससे नहीं अपना तरीक़ा है यही। क़त्ल करते हैं जो हो ऐसा ख़तावार नया

जवाब परी का.

घर में आया जो मेरे ये गुले गुलज़ार नया। दुश्मनों की वही आँखों में चुभा ख़ार नया
पास से मेरे न अल्बत्ता इसे कीजे जुदा। और सितम चाहिये सो कीजिये हरबार नया।
शक्ल इन्सानो परीज़ाद पे क्या है मौक़ूफ़। किस्को भाता नहीं माशूक़ तरहदार नया।
आशिक़ी का यही आशिक़ को मज़ा है शाहे जिन, आज फूले मेरे हर ज़ख़्म से गुलज़ार नया
जानो दिल रचे हुये फिरती हूं उस गुलरू पर। ऐसा होता नहीं दुनियां में ख़रीदार नया
मुद्दों जिसके लिये रातों को आवारह फिरी। हाय आया है ये अब तो मेरे दिल्दार नया

दोहरा कहना राजा इन्द्र का देवसे.

मानेगी हरगिज़ नहीं अब तो ये मुरदार। ले जा इस को आग में डालदे तू इक बार

कहना देव का मुख़ातिब होकर परीसे.

जैसे ईज़ा है इसे दी तू ने दिन रात। वैसी चल अब आग में दूं तुझ को बदज़ात।

ग़ज़ल राजा इन्द्र की.

कहना हमारा इसने न अबतक ज़रा किया, ऐ देव इसको हम ने असीरे बला किया।
आतिशकदह में डालदो लेजाओ खींचकर। दोज़ख़ की आगसे जो चहै है पुरहवा किया
दिखलाओ जाके इश्क के मज़ा इश्तियाक़ के। हर परदह हम से ख़ूब नया आशना किया
देने में कुछ सज़ा के जो कि तू ने दरगुज़रा मैं ने तुझे भी मेरे दे जौरो जफ़ा किया।
नामो निशान इसका ज़माने से हो मिटा। इस फ़िल्ना रोज़गार ने देखो तो क्या किया
संगे गराँ पे जा के पटक दे इसे अभी। मुरदार बद चलन ने ए ग़मज़ा नया किया
इस बदचलन से है यही खटका मदारीलाल। आज एक किया तूफ़ान ये कल दूसरा किया

ग़ज़ल देव की.

मैं भी तो मुद्दतों से हूं इसलिये जला किया। पंजे में अब ख़ुदा ने मेरे मुब्तिला किया
चलती है साथ मेरे या गर्दन में डालूं हाथ। खा जाऊंगा मैं गर कहीं न ख़तरह ज़रा किया
आ मेरे साथ तू कोई दम और जान है। फिर क्या जो मैं ने काम तेरा ख़ातमा किया।
पंजे से मेरे छूट के जा सक्ती है कहाँ। बस मैं ने इस को पीस के अब सुरमे सा किया
पीजाऊंगा मिला के मुँह इस वक़्त तेरा ख़ून। फिर मुझसे चौ चला जो किसी तीर का किया
खाजाऊं तेरा तोड़ के सर भेजा मग़ज़ का। गोया कि आज लुक़्मये शीरीं ग़िज़ा किया
सर पर अजल सवार है इसके मदारीलाल। कोई दम में अब इसे तह तेग़े फ़ना किया

ग़ज़ल परी का.

अपना ज़रर तेरे लिये शर्त वफ़ा किया। लेकिन जुदा न दिलसे तुझे महलक़ा किया
कुछ जलने मरने का नहीं वल्लाह मुझको ग़म, ग़म है कि मुझको आँख से मेरी जुदा किया
ये आरज़ू थी हूं मैं तेरी राह पर निसार। ख़ालिक़ ने आज फ़र्ज़ से तेरी अदा किया।
ऐसा भी कोई करता है आशिक़ का अपने हाल, तुमने हमारा हाल जो से दिलरुबा किया
चारों तरफ़ अदू हैं लिये तेग़ की बक़ाफ़। मुझ बेगुनह पे देखो ये वलबा है क्या किया

दुनियाँ में क्या हमीं ने नई की है आशक़ी। किसने न इन बुतों पे दिल अपना फ़िदा किया
इसको भी अपने हाथ से खोया मदारीलाल। जल ना गवारा जिसके लिये मैं सदा किया

ग़ज़ल शाहज़ादे की.

ला कर जो तूने क़ैद मुझे बेख़ता किया। बस मेरे सब्र ने यही बदला अदा किया
मैं तुझसे कहता था मेरे दरपे न इत्ता हो। आख़िर न अपने हक़ में तूने भला किया
आख़िर को मेरे वास्ते दी तूने अपनी जान। परवाने मिल के शमा से कब तक जिया किया
शामत ने तेरी तुझ को दिखाया ये ऐसा दिन। जब तू कहाँ से ला के मेरा मुब्तिला किया
क्यों होता हाल ये जो न करती तू मुझ को प्यार। मैंने तो मना तुझको परीबार हाँ किया
मारा है जिसने भूल के इस राह में क़दम। आँखों से उसके ख़ून का दरिया बहा किया
क्या क्या करूं मैं शुक्र ख़ुदा का मदारीलाल। एक बदबला के हाथ से मुझ को रिहा किया

दोहरा कहना राजा इन्द्र का वज़ीरज़ादी से.

जोगी जी ये शख़्स हैं हाज़िर इस को लो। और जो लायक़ काम हो सो मेरे से कहो।

जवाब देना वज़ीरज़ादी का राजा इन्द्र को.

और नहीं कोई काम है बड़ा किया ये काम। मुद्दत तक अब आपका रहे जहाँ में नाम

दोहरा वज़ीरज़ादी का शाहज़ादी से.

ले हाज़िर है हिज्र का ये तेरा बीमार। गले लगाओ ख़ूब सा करलो इस को प्यार

दोहरा कहना शाहज़ादी का शाहज़ादे से.

आओ प्यारे थे कहाँ गले मेरे लगि जाउ। मुद्दत से बीमार हूं शरबत वस्ल पिलाउ

जवाब देना शाहज़ादे का शाहज़ादी से.

मेरी भी दिन रात थी आफ़त में पड़ि जान। जिस पर भी तो था मुझे जानी तेरा ध्यान।

छन्द कहना शाहज़ादी का शाहज़ादे से.

प्यारे तुम्हारे हिज्र में अपना हुआ ये हाल। तुमको हमारी तर्फ़ से कुछ था ज़रा ख़याल
किस तरह से हुआ था तेरे बिन मुझे मलाल। पर अब ख़ुदा ने है दिया ये शरबते विशाल

जवाब देना शाहज़ादी का शहज़ादे से.

फ़ुरक़त तुम्हारी से मुझे हासिल हुआ मलाल। अल्लाह ने पिलाया मगर शरबते विसाल
रक्खो न दिल पे रंजो मुसीबत का कुछ ख़याल। होवेगा दूर वस्ल में सारा ये अब मलाल।

ग़ज़ल शाहज़ादह.

आँख हम ने मगर तुम से लड़ाई होती। तो मुसीबत यह वल्लाह उठाई होती
हिज्र में तेरे मैं तड़पा किया बिस्मिल की तरह। तेग़ अब अबरू की दिखाई तो सफ़ाई होती
जाने जाँ तुमको जो इस बात का कुछ होता ख़याल। तो मेरे वास्ते काहे को बुराई होती
ख़ुश नुमा तेरी कलाई का जो आवो है ख़याल। दिले बेचैन को एक दम न कल आई होती
कज अदा हम से न रहिते जो तुम से ग़ैरते गुल। अभी तक अपनी सब उम्मेद बर आई होती
कुछ ख़ता आपकी हरगिज़ नहीं तक़दीर अपनी। वरना ये बात भी कुछ दिल में समाई होती
सख़्तियाँ क़ैद की काहे को उठाता मैं ग़रीब। मुझ सिवा उस पे तबीयत जो ये आई होती

ग़ज़ल शाहज़ादी.

तुमने सूरत जो किसी रोज़ दिखाई होती। दिले मुजतर पे न यों ग़म कि चढ़ाई होती।
ख़ूब रोऊं गले लग कर यही थी दिल की हवस। लेके तुम तक जो भला अभी रसाई होती
हाल पर मेरे जो कुछ रहम तू करता ज़ालिम। तो मैं इस तरह से क्यों ग़म की सताई होती
वर्क़ की तरह से आँखों में चमक जाती है। याद जिस दम तेरी नाज़ुक सी कलाई होती
तुम करो चैन परी साथ रहूं मैं बे चैन। दिल से लाचार हूं वर्ना स सफ़ाई होती
तेरा हरजाई पना पहिले जो होता साबित। जो ये शिरकत मेरे दिल को न ख़ुश आई होती
शमा साँ काहे को जलती मैं तसव्वर में तेरे। गर मुहब्बत न तेरे दिल में समाई होती

ज़बानी शाहज़ादा.

तेरे ग़मे फ़िराक़ का अफ़साने था रहा। हर लहज़ा हर घड़ी में असीरे बला रहा

ग़ज़ल शाहज़ादी.

शुक्र सद शुक्र किया आज नज़ारा तुझको। कब ये उम्मेद थी देखूंगा दुबारा तुझ को।
मरदूम आसा तेरी तसवीर थी आँखों में खिंची। ख़ाने ये चश्म में भी मैंने उतारा तुझको
हिज्र में था मेरी इन आँखों में तारीक जहाँ। जानता दिल से जो था आँख का तारा तुझको
जान भी आये अगर काम तो होवे क्या ग़म। जैसे कुछ ज़्यादा समझता हूं मैं प्यारा तुझको
एक पल भी तेरी फ़ुरक़त में न पाया आराम। बारहा ख़्वाब से चौंका तो पुकारा तुझ को

मैंने क्या क्या वह तेरे पीछे उठाईं आफ़त। बे वफ़ा पर न हुआ रंज हमारा तुझ को।
हम बिछाते हैं तेरी राह में हर दम् आँखें। पर रहा हमसे सदा आह किनारा तुझ को

ग़ज़ल शहज़ादी.

थी जुदाई न तेरी जान गवारा मुझ को। पर करूं क्या न था तक़दीर से चारा मुझको
तादमे ज़ीस्त रही आँखों को हसरत बाक़ी। कभी फिर आके दिखा जाओ नज़ारा मुझको
बिन् तेरे चाँदनी आँखों में न थी धूप से कम्। मह् अनवर नज़र आता था शरारा मुझ को
कहीं दो चार भी दिन और न आते जो सनम्। बिन् दिये जान के होता न गुज़ारा मुझ को
हिज्र में तेरे न एक पल भी मुझे नींद आई। याद था जो तेरे पहिलू का सहारा मुझ को
चैन आता था न दिल को न तबीयत को क़रार। वह तसव्वर बँधा ऐ जान तुम्हारा मुझ को
सीधी बातों से हुए जाते हो टेढ़े नाहक़। कज अदाई ने तेरी जान से मारा मुझ को

ख़म्से: कहना शहज़ादी का.

तुम से और उस से शबो रोज़ बहम प्यार रहे। जाने जाँ जान से उस गुल के ख़रीदार रहे
नई चाहत नई ख़ूबी की तलबगार रहे। तुम परी साथ मये वस्ल से सरशार रहे
हम यहाँ हिज्र में दिन रात गिरफ़्तार रहे.

क्या कहैं हम जो मुसीबत में गिरफ़्तार रहे। वस्ल के तेरे दिलो जाँ से ख़रीदार रहे
हर घड़ी तेरे तसव्वर ही में दिल्दार रहे। किस तरह रंजो मुसीबत के गिरफ़्तार रहे
हर घड़ी हिज्र में तेरे ही तो बीमार रहे.

उस्को चाहत तेरी और तुझ को रही उस्की चाह् कुछ दिनों ख़ूब किया जान इस उल्फ़त का निबाह
हम् बग़ल और हम आग़ोश रहे क्या वल्लाह। वस्ल में ख़ूब मज़े लूटे परी के हम्राह
हमसे कहते हो कि तुम बिन् हमें आज़ार रहे.

आपने जाम में तमन्ना में भरा शरबते वस्ल। उसने सौ नाज़ से तुम को जो दिया शरबते वस्ल
लेके आग़ोश में मंज़ूर किया शरबते वस्ल। ख़ूब जी खोल के तुमने तो पिया शरबते वस्ल
इससे क्या काम कोई हिज्र में बीमार रहे.

अभी चाहत को वह करती रही तुम से इन्कार। हम् तब्अ शगुफ़्ता को क्यों करते रहे ले लो निहार
चाहने का भी मज़ा है यही ऐ ज़ख़्मे दिल्दार। तुम मरो उस पै परी तुम पै करे जान निसार
सब तरह से तो हमी पीछे तेरे ख़्वार रहे.

फेर ली देख के शल्हूसरा तुमने जो निगाह। मुझ को मालूम हुआ रखते हो बुलबुल की सी चाह

पहिले साबित न हुआ आह कि तुम हो बदराह। भूल कर आप न जी तुमसे लगाती वल्लाह
जानते हम कि दुनियाँ में यही प्यार रहे ।

जवाब शाहज़ादे का.

ख़िदमतों के लिये माश्क़ तरहदार रहे। नये ख़ाने नये जोड़े नये हथियार रहे ।
फ़र्श फूलों की शबे माह में तैयार रहे। सब तरह के वहाँ सामान नमूदार रहे।
पर तेरे बिन मेरी नज़रों में वह सब ख़्वार रहे।
हम दिलो जान से तेरे ही ख़रीदार रहे। नशे इश्क़ से तेरे ही तो सरशार रहे
किस तरह ग़म मुसीबत में गिरफ़्तार रहे। हर घड़ी याद में तेरे ही तो दिल्दार रहे।
तेरे ही वस्ल के हर रोज़ तलबगार रहे।
खा के कहता हूँ तेरी शुचे दहानी की क़सम। और है मुझको इसी सर्व रवानी की क़सम।
झूँठ कहता नहीं तुझ यूसफ़े सानी की क़सम। प्यारी वल्लाह मुझे अपनी जवानी की क़सम
उस तरफ़ देखा हो तो तेरे गुनहगार रहे।
मुझको वल्लाह हमेशा रही नफ़रत उससे। वह थी क्या माल जो होती मुझे रग़बत उससे
क्यों लगी होने मेरे दिल को मुहब्बत उससे। जब कि बरगश्ता रही अपनी तबीयत उससे
रूबरू हूर भी आ जाये तो इन्कार रहे।
साफ़ तीनत से जो ये बातें ज़बाँ पर आई। आप ही शिकवे के दफ़्तर मेरे आगे लाई
यही दुनियाँ का तरीक़ा है यही है आई। है तअज्जुब कि तेरे सामने क़स्में खाई।
उस पै भी ख़ुबा मेरा तुझ को से दिल्दार रहे.
अश्क़े गुल्गूं से सदा दीदये हसरत धोना। तेरी फ़ुरक़त में ये था हाल हमारा होना।
शाम से ताब सहर बैठके हम को रोना। याद कर करके तेरे साथ लिपट कर सोना।
इसी हसरत में तो हम रात को बेदार रहे.

मुसद्दस कहना.

शाहज़ादी का.

आह मैं जब से तेरी तालिबे दीदार रही। तब से मैं लाख बलाओं में गिरफ़्तार रही।
रंजो तकलीफ़ो मुसीबत की सज़ावार रही। ज़िन्दगी अपनी वह हर नौ अब मुझे दुश्वार रही
मैं न समझी थी मज़ा इश्क़ ये दिखलावेगा। जान पर मेरे ये कम्बख़्त बला लावेगा ।
हाल दिल किससे कहूं ना के मैं अपने नाशाद। कर दिया मुझको तो इस इश्क़ ने है है बरबाद

करूं इस ग़म से कहाँ तक न मैं दुखिया फ़रयाद, इस सितमगर ने किये मुझ पे हज़ारों बेदाद
ये अजल जान से इस इश्क़ ने मारा है है। खून नाहक़ किया काफ़िर ने हमारा है है।
इस जफ़ाकार ने मुझ को दिये लाखों आज़ार। दर्दो अन्दोहो ग़मो रंज से बेहद्दो शुमार
इस के हाथों से मिला हाय न इक जां पे क़रार। कभी सहरा को गई और कभी सूये कुहसार
इसने इस तरह की आफ़त में है डाला मुझ को। पड़ी ज़हमत में हूं अब तक न निकाला मुझ को
ये न समझी थी करेगी ये जफ़ा आफ़ते इश्क़। जान पर लायगी मेरी ये बला आफ़ते इश्क़
ख़ेशो बेगाने से कर देगी जुदा आफ़ते इश्क़। सैकड़ों आफ़तों से ये हैं सिवा आफ़ते इश्क़
वस्ल से इसने न इक रोज़ कभी शाद किया। और किया भी तो मुझे जान से बरबाद किया
आह इस मूज़ी से बेतरह पड़ा है पाला। है है इस ने मुझे हर एक बला में डाला
मैं ने कुछ आह इस आफ़त में न देखा भाला। अब तो है जान का अल्लाह मेरे रखवाला
करूं अब इसकी शिकायत मैं निहायत अख़्तर। है हर एक क़िस्से से ये तूल हिकायत अख़्तर

जवाब देना शहज़ादे का.

मर्ज़े इश्क़ का सच है कोई बीमार न हो। और आज़ार हों पर आह ये आज़ार न हो
कोई आशिक़ किसी माशूक़ का ज़िन्हार न हो। ताब मक़दूर कोई माइले दिलदार न हो।
ये बला इश्क़ वह है जिस से हज़र बेहतर है। इस से करता रहे परहेज़ बशर बेहतर है।
जान से कर दिया मजनूं को इसी ने बरबाद। और इसने किया वल्लाह है ख़ूने फ़रहाद।
वस्ल से रक्खा है वामिक़ को इसी ने नाशाद। ये बह ज़ालिम है कि है ज़ुल्म कि जिस्से बुनियाद
चैन इस में कहाँ इन्सान को आराम कहाँ। मा सिवा रंज के राहत का सरन्जाम कहाँ
अलहज़र इस से बशर माँगे ये वह है आज़ार। मर गये आज तक इस मर्ज़ के लाखों बीमार
और रुसवाई है इस में हुई बेहद्दो शुमार। फिर के आये न कभी जो गये सूये कोहसार
उन को क्या जाने कहाँ जाके डुबोया इसने। फिर पता तक न लगा ऐसा है खोया इस ने
सच तो यों है कि बला ख़ेज़ वह आफ़ते इश्क़। जान के लेने को हर तरह क़यामत है ये इश्क़
बाइसे तानो तशनीयो मलामत है ये इश्क़। बख़ुदा इस मर्ज़ दिक़ की अलामत है ये इश्क़
राह उल्फ़त में जो देखा तो यही रहज़न है। दोस्त ज़िन्हार किसी का नहीं ये दुश्मन है
इस सितमगार से अल्लाह न डाले पाला। इसने लाखों के तईं आह बला में डाला
नहीं जाता है ये कम्बख़्त किसी से टाला। इस बला का करे अल्लाह कहीं मुंह काला
तुम से अख़्तर कहूं क्या आके मैं रम्याजी की। इस दग़ाबाज़ ने लाखों से दग़ाबाज़ी की

होलीगाना सिन्धुमुल्तानीमें.

खेल रही मैं होली समै में; नन्द लला बनवारी रे ।
काहू की सारी रंग में भिजोई, काहू को देत हैं गारीरे।
खेल रही मैं.
छीन लई मोरी चूनर सिरसों, औरमारी पिचकारीरे ।
जो भाजत हैं लाज के मारे, सब मिलि देत है तारी रे ।
खेल रही मैं.
मान गुमान राख ते हारी, हम हैं तुम्हारे भिखारी रे।
अख़्तर को मोहिं आन मिलाओ, मैं तोरे बलिहारीरे।
खेल रही मैं.

होली बीच धुन धनाश्री के

मोहिं देत दरश नहिं एक बार, मेरो मन नहिं मानत करतरार
मोहिं देत दरश नहिं एक बार.
औरन के सँग रंग उड़ावत, फाग खेलत हो बार बार । ।
हम तो जरत बरत होरी से, बिरहा की है मार मार। ।
मोहिं देत दरश नहिं एक बार.
कोऊ गुलाल मलत गालन में, कोऊ चलत गल बहियाँ डार।
हम पर सब रूप रंग बरसत है, पिचकारिन की भरी फुहार।
मोहिं देत दरश नहिं एक बार।
दास मदारी साहब की बलिहारी, सुन लीजे सब की पुकार।
अख़्तर को कोऊ आन मिलाओ, तन मन धन सब डारूं बार।
मोहिं देत दरश नहिं एक बार.

इन्द्रसभा मदारीलाल कृत समाप्त.

संवत १९६३ वि०

मुंशी प्रयागनारायरा मालिकमतबा अवध अख़बार मुहल्ला हज़रतगंज स्थान लखनऊ
के शाख़ छापेख़ाने कानपुर में छापी गई सन् १९०६ ई०

विद्या विलासी व सुख वन्धनी नाटक.

अदालत हाईकोर्ट के वकील काश्मीरी श्रीकृष्ण जी रचित- इस के प्रयोजन यह है कि भारतवर्ष में बहुधा बालक पन में विवाह किया जाता है और उस के बुरे परिणाम नहीं विचारे जाते विवाहादि में फ़ज़ूल ख़र्ची और उस के बुरे परिणाम ॥

प्रबोध चन्द्रोदय नाटक.

आत्माराम कृत- छन्दों में महा विवेक और महा मोह की लड़ाई रचित है ॥

मयंक मंज़री नाटक.

भाषा किशोरी लाल कृत- इस में मयंक मंजरी का नाटक अनेक प्रकार के राग छन्द और ललित वार्तिक भाषा में वर्णित है यह नाटक बहुत ही उत्तम बना है ॥

प्रबोध द्युमरायुदय अध्यात्मक नाटक.

भाषा पण्डित उमादयाल जी कृत- जिस के प्रथम अंक में जीव मनुष्य अविद्या निशा में मोह वश हो कैसे मेरा मेरी कहता और मानता है और कैसे अहंकार की रसरी में बँधा है. दूसरे में काम की प्रबलता. तीसरे में विवेक की प्रशंसा. चौथे में मोह का वर्णन और संसार के दम्भ आदि वर्णन किये हैं. पाँचवें में मोह की विभव और परिवार का वर्णन है. छठे में महा मोह को राजा विवेक ने किस प्रकार दमन कर पराजय किया. [illegible] सातवें अंक में विवेक बिजय पुरुष का अविद्या निशा से जागना प्रबोधोदय और [illegible] प्रति उपनिषद और सत्य के हितोपदेश है ॥

प्रबोध चन्द्रोदय नाटक दो भाग में.

पण्डित भूदेव दुबे कृत- जिस में अनेक प्रकार के मनोहर छंद हैं यह नाटक ज्ञानी पुरुषों के देखने के योग्य हैं ॥

हिन्दी शकुन्तला नाटक भाषा.

बाबू हरसहाय लाल वर्म्मा कृत- जिस में रानी शकुन्तला और राजा दुष्यन्त का परस्पर वार्त्तालाप और आपस में गन्धर्व विवाह करना इत्यादि अनेक मनोहर चरित्र वर्णित है देखने ही के योग्य है ॥

तिलिस्मात व अजायबात.

तिलिस्म फ़िरंग भाषा.

इस में अपूर्व्व २ जादू करने की युक्ति व अंगरेज़ों के उत्तम अलौकिक खेल वर्णित हैं जिस को प्रथम डाक्टर ग्रीकरी साहब की अंगरेज़ी किताब से पण्डित मोती लाल उल्थाकार मुहकमा गवर्नमेन्ट पंजाब ने छपने व प्रसिद्ध होने के लिये उर्दू में तर्जुमा किया था सन् १८६८ ई० में मतबा अवध अख़बार को उक्त पण्डित साहब की ओर

से इस पुस्तक के छापने का अधिकार मिला और छापी गई - पश्चात मतबअ ने अपनी ओर से पण्डित प्यारेलाल जी से नागरी में तर्जुमा कराकर छपवाया॥

अजायबुल्मख़लूक़ात.

पण्डित प्यारेलाल कृत भाषा उल्था- इस में सम्पूर्ण सृष्टि के वृत्तान्त व आकाशादि की उत्पत्ति का वर्णन है और उचित २ स्थानों पर चित्र भी लगे हैं रंगीन काग़ज़ सुन्दर है॥

श्रीवाल्मीकीयरामायणमूलसंस्कृतटीकाभाषापत्रानुमा॥

क्या ही उत्तम है.

अवशि लीजिये दरशन योगू।

विदित हो कि यह पत्रानुमा वाल्मीकीय रामायण जो कि अब की बार मालिक मतबा ने छपा कर मुद्रित की है वह बहुत ही अनुपम होकर संदर्शनीय है कि-जिसका भाषानुवाद धनावली ग्राम निवासि रामचरणोपासि पण्डित महेशदत्त ने किया व जिस का संशोधन भी संस्कृत प्रति से उन्नाम प्रदेशान्तर्गत गुराइ... वासि पण्डित सूर्य्यदीन जी ने किया है इस में प्रत्येक श्लोकों का अर्थ अ... से कहा गया व प्रत्येक पदों व अक्षरों का जैसा अर्थ होना चाहिये था वैसा ही ... आ है यद्यपि मुम्बई आदि नगरों में इस के बहुत से अनुवाद हुए हैं तो भी वह इस-के समान नहीं हो सक्ते हैं क्योंकि उक्त नगरों के छपे हुये अनुवादों में कहीं २ अन्वय रीति से अर्थ मिलता व कहीं २ मनमाना देख पड़ता है इस भेद को विद्वान लोग ही भली भाँति समझ सक्ते हैं इस हमारे अनुवाद में खच्छता, छपाई, रोशनाई, काग़ज़ आदि बड़ी सफ़ाई के साथ में ... जिस की सरल हिन्दी भाषा सब देशबासियों के समझ में आ सक्ती है जिस की भूमिका ... जन तोषिका बनी है व जिस के प्रत्येक सर्गों का सूचीपत्र भी बहुत ही उत्तम रचाया है केवल इसी से ही सर्व साधारणजन रामायण की पारायण बाँच सक्ते हैं- इस की उत्तमता लेखनी से बाहर है अहो ग्रा...कगणो! इस के ख़रीदने में बिलम्ब मत करो क्यों कि विलम्ब होने में सिवाय पछिताने के और कुछ हाथ नहीं लगता है आशा है कि सर्व महाशयजन अवश्य ही इस को देखेंगे और इस की एक २ प्रति ख़रीद कर अपने घर को सुशोभित करेंगे अन्ने किमधिकम् बहुज्ञेष्वित्यलम्॥